डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर

राजभाषा गृह पत्रिका

मंथन

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अंक-07

जुलाई- 2022

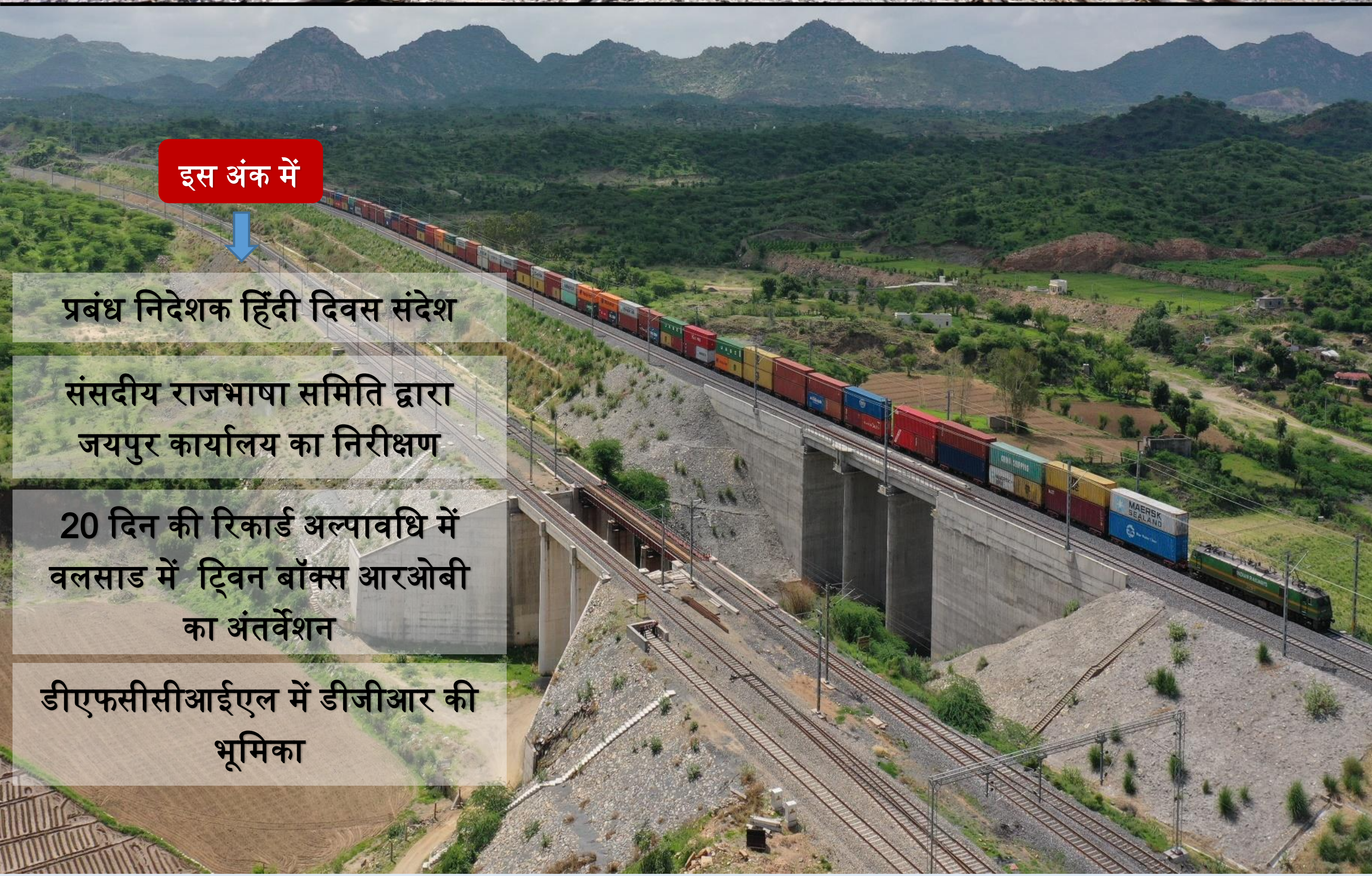

इस अंक में

प्रबंध निदेशक हिंदी दिवस संदेश

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा जयपुर कार्यालय का निरीक्षण

20 दिन की रिकार्ड अल्पावधि में वलसाड में ट्विन बॉक्स आरओबी का अंतर्वेशन

डीएफसीसीआईएल में डीजीआर की भूमिका

'संसदीय राजभाषा समिति' की दूसरी उप समिति द्वारा डीएफसीसीआईएल जयपुर इकाई का नई दिल्ली, विज्ञान भवन में दिनांक 23.09.2022 को आयोजित निरीक्षण की झलकियां

प्रधान संरक्षक
श्री रविंद्र कुमार जैन
प्रबंध निदेशक

मुख्य संरक्षक
श्री हरिमोहन गुप्ता
निदेशक अवसंरचना

संरक्षक
श्री सचिन्द्र मोहन शर्मा
मुख्य राजभाषा अधिकारी

प्रधान संपादक
श्री लव शुक्ला
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
श्री के.पी. सत्यानंदन
सलाहकार / राजभाषा

संपादकीय सहयोग

सुश्री अपर्णा त्रिपाठी
महाप्रबंधक / वित्त

श्री जगत सिंह नगरकोटी
वरिष्ठ कार्यकारी राजभाषा

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों / रचनाओं से सहमत होना आवश्यक नहीं है रचनाओं का पूर्णतः उत्तरदायित्व लेखक का होगा)

डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

पाँचवाँ तल, सुप्रीम कोर्ट, मेट्रो स्टेशन भवन परिसर, नई दिल्ली-110001 फोन नं. 011-23454717, फ़ैक्स नं.-011-23454700

ईमेल-jsnagarkoti@dfcc.co.in

क्र.सं.	विषय सूची	पृ.सं.
1	प्रबंध निदेशक का संदेश	7
2	निदेशक अवसंरचना का संदेश	8
3	संरक्षक का संदेश	9
4	प्रधान संपादक की कलम से	10
5	संपादक की कलम से	11
6	इलेक्ट्रिक वाहन- भारत का भविष्य	12
7	पर्यावरण संतुलन	14
8	हवा से बातें	16
9	प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है	17
10	उम्मीद	17
11	स्वर्णिम दिवस-15 अगस्त	18
12	सद्भावना	19
13	प्रकृति...	20
14	मन...	20
15	तारणहार	21
16	डीएफसीसीआईएल की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि-20 दिन की रिकार्ड अल्पावधि में वलसाड में ट्विन बॉक्स आरओबी का अंतर्वेशन	22
17	भारतीय सेना में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी	25
18	दिल घोड़ा और दिमाग सवार	27
19	विश्व पर्यावरण दिवस मात्र एक दिवसीय प्रोत्साहन	29
20	बढ़ती सभ्यता सिकुड़ते वन	31
21	प्रेम और सृजन	32
22	महात्मा गांधी 'मोहनदास से गांधी तक का सफर	33
23	डीएफसीसी-नवाचार, समर्पण और प्रौद्योगिकी के माध्यम से माल ढुलाई	34
24	कोशिश कर	36
25	क्रिप्टोकरेंसी-एक आभासी मुद्रा	37
26	मां की ममता	39
27	जीवन एक सफल प्रयास	40
28	भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा	41
29	कुमाउंनी संस्कृति एवं लोकगीत	43
30	वन्य जीव फोटोग्राफी	45
31	बुझता बचपन बच्चों का	47

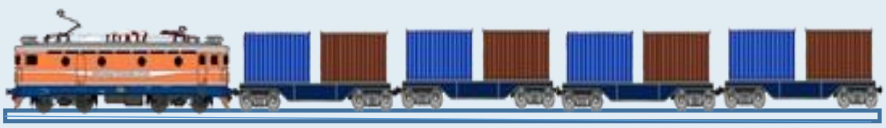

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है, हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है - नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

क्र.सं.	विषय सूची	पृ.सं.
32	मेरी कोरी कल्पना	48
33	बेटी और समाज	49
34	पानी की बचत आज की जरूरत	50
35	गुरु की महिमा	51
36	बुढिया का भ्रम	52
37	मुद्रा स्फीती की समस्या	53
38	संतोषजनक व्यक्ति	54
39	महिला सशक्तीकरण	55
40	शिक्षा का महत्व	56
41	अग्निवीर का अग्निपथ	57
42	बेरोजगारी एक चुनौती या स्वनियोजिता समय की मांग	58
43	मानवता के लिए योग	59
44	मुंशी प्रेमचंद	60
45	आधुनिक प्रगति की और बढ़ता ग्रामीण भारत	62
46	वो चाय पर चर्चा	63
47	समय से रेल को चलाना है	64
48	डीएफसीसीआईएल में डीजीआर की भूमिका	65
49	सतत विकास लक्ष्य-2030	66
50	सतर्कता: एक अपरिहार्यता (महत्वपूर्ण आवश्यकता)	67
51	आजादी का अमृत महोत्सव	68

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी दिवस 2022 के अवसर पर आयोजित हस्ताक्षर अभियान में हस्ताक्षर करते प्रबंध निदेशक

श्री रविंद्र कुमार जैन

आज़ादी का अमृत महोत्सव

डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर

14 सितंबर, 2022

हिंदी दिवस संदेश

डीएफसीसीआईएल परिवार के मेरे साथियो,

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ!

भाषायी विविधता एवं बहु आयामी संस्कृति के बावजूद राजभाषा हिंदी ने स्वतंत्रता से लेकर आज तक पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की धारणा को पुष्ट किया है। हिंदी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का सबसे शक्तिशाली एवं प्रभावी माध्यम है। हिंदी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। यह देश के अधिकांश लोगों द्वारा पारस्परिक व्यवहार में प्रयुक्त की जाती है। हिंदी के इस महत्व को देखते हुए भारतीय संविधान में इसे संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाने के संवैधानिक उद्देश्यों को पूरा किया जाना सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि कार्यालयों में हिंदी में टिप्पण तथा पत्राचार को पर्याप्त रूप से प्रोत्साहित किया जाए। मैं सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करता हूँ कि वे अपने कार्यालयों में राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत रूचि लें और स्वयं हिंदी में कार्य करके अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें। संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा, एवं प्रोत्साहन है किंतु संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी प्रकार दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है। हिंदी में काम करने के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा कि भाषा को सरल एवं सहज रूप में लिखा जाए ताकि हिंदी जानने वाले तथा हिंदी न जानने वाले कर्मचारियों द्वारा यह आसानी से समझी जा सके तथा अपनाई जा सके।

आइए, हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हम सभी उत्साह, लगन और गर्व के साथ अपना कार्य हिंदी में करेंगे और राजभाषा अधिनियम, नियम एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित प्रावधानों का अनुपालन करेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हम अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेंगे और डीएफसीसीआईएल में हिंदी के प्रयोग को अभूतपूर्व नए आयाम देंगे।

जय हिंद !

(रविन्द्र कुमार जैन)

प्रबंध निदेशक

रेलवे बोर्ड में अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी से वी.के त्रिपाठी से **'रेल मंत्री राजभाषा पदक'** प्राप्त करते डीएफसीसीआईएल के निदेशक अवसंरचना श्री हरिमोहन गुप्ता

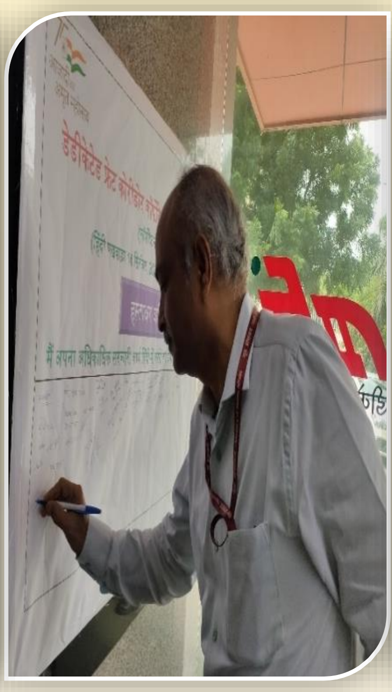

राजभाषा पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित हस्ताक्षर अभियान में हस्ताक्षर करते निदेशकगण एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी

संदेश

रविंद्र कुमार जैन,
प्रबंध निदेशक,
डीएफसीसीआईएल

प्रबंध निदेशक का संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि डीएफसीसीआईएल की राजभाषा गृह पत्रिका 'मंथन' के सातवें अंक का प्रकाशन यथा-समय किया जा रहा है।

हिंदी भाषा समाज और संस्कृति के मिलाप का एक सरल एवं सीधा माध्यम है। इससे हमारी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं भाषायी स्मृतियां संरक्षित रहती हैं।

हमारे देश में इस समय आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है जिसका उद्देश्य आजादी के 75 वर्ष और इसकी संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को उत्साहपूर्वक मनाते हुए नए भारत का निर्माण करना है। इस कार्य में राजभाषा हिंदी का भी विशेष महत्व है जिसमें गृह पत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से कार्मिकों में हिंदी के प्रति रुचि जागृत होती है और उनमें अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में करने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है।

आशा करता हूँ कि यह पत्रिका डीएफसीसी की विभिन्न गतिविधियों एवं राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने में निरंतर सफलता हासिल कर नया मुकाम स्थापित करेगी तथा इसमें प्रकाशित सामग्री अनेक महत्वपूर्ण जानकारी से परिपूर्ण होगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

(आर.के.जैन)

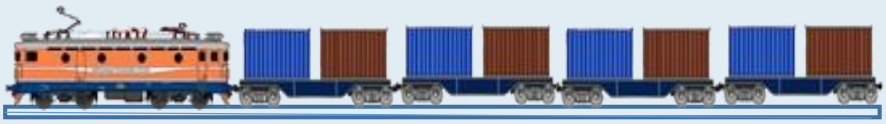

हरिमोहन गुप्ता,
निदेशक अवसंरचना,
डीएफसीसीआईएल

निदेशक अवसंरचना का संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि डीएफसीसीआईएल की राजभाषा गृह पत्रिका का 7वाँ अंक शीघ्र ही प्रकाशित किया जा रहा है। पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के विकास और प्रचार-प्रसार में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाता है और इससे हिंदी के प्रसार-प्रचार के लिए अनुकूल वातावरण बनता है।

हम सभी जानते हैं कि संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी संघ की राजभाषा है। जनतंत्र में वही राजभाषा होती है जो अधिकांश लोगों की भाषा और संपूर्ण देश की संपर्क भाषा हो। यह आवश्यकता केवल हिंदी ही पूरी करती है, अतः प्रत्येक अधिकारी /कर्मचारी का कर्तव्य है कि वे राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें। राजभाषा हिंदी सक्षम, समर्थ और सरल है। इसका जितना प्रयोग होगा, उतना देश का हित होगा।

मुझे विश्वास है कि गृह पत्रिका 'मंथन' का यह अंक हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरित करेगा।

'मंथन' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

हरिमोहन

(हरिमोहन गुप्ता)

संरक्षक का संदेश

'मंथन' गृह पत्रिका के सहृदय पाठकों, लेखकों और सभी हिंदी प्रेमियों को मेरा हार्दिक अभिनंदन!

मुझे खुशी है कि 'मंथन' का प्रकाशन जब से शुरू हुआ है, सभी के सहयोग से इस पत्रिका के अंक के छमाही आधार पर नियमित रूप से प्रकाशित किए जा रहे हैं। राजभाषा के विकास, संवर्धन और उचित माहौल तैयार करने में मंथन पत्रिका का योगदान महत्वपूर्ण है।

यह प्रसन्नता की बात है कि डीएफसीसीआईएल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा पत्रिका के अन्य पाठकों को हमारे उपक्रम के उद्देश्यों एवं अन्य विभिन्न जानकारी देने के लिए यह पत्रिका एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनी भूमिका अदा कर रही है।

डीएफसीसीआईएल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मेरा आग्रह है कि वे पत्रिका के लिए लेख लिखकर तथा अन्य प्रयासों से अपना भरपूर योगदान दें जिससे भविष्य में यह एक सर्वश्रेष्ठ पत्रिका का स्थान प्राप्त कर सके।

मैं 'मंथन' पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी शुभकामनाएं देते हुए आशा करता हूँ कि यह पत्रिका अपने सभी उद्देश्यों में पूर्णता करती रहेगी।

(सचिंद्र मोहन शर्मा)

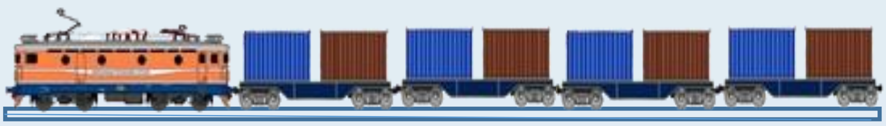

प्रधान संपादक की कलम से

डीएफसीसीआईएल राजभाषा गृह पत्रिका 'मंथन' का 7वाँ अंक पाठकों को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

'मंथन' के प्रकाशन के पीछे हमारा उद्देश्य यही है कि पत्रिका के माध्यम से अधिक से अधिक लोग हिंदी से जुड़ें। साथ ही कर्मचारियों में चुपी हुई प्रतिभा को निखारना भी पत्रिका का उद्देश्य होता है। यदि देखा जाए तो पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित हो जाने के कारण अनेक छुपे हुए कलाकार, लेखक, कवि सामने आए हैं।

मंथन के सह्रदय पाठकों से अनुरोध है कि इसमें प्रकाशित रचनाओं, लेखों, कहानियों तथा कविताओं के बारे में अपनी टिप्पणी और प्रतिक्रियाएँ हमें अवश्य भिजवाएँ। आपके उपयोगी सुझाव पत्रिका की गुणवत्ता सुधारने में कारगर साबित होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

लव शुक्ला

(लव शुक्ला)

संपादक की कलम से

डीएफसीसीआईएल कार्पोरेट कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका मंथन का 7वाँ अंक आपको सौंपते हुए मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है।

किसी भी संस्था में पत्रिका प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में गृह पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। पत्रिका प्रकाशन से अपने कार्मिकों को अपनी रचनात्मक क्षमता प्रकट करने का सशक्त मंच प्राप्त होता है। निस्संदेह एक रचनाकार के हाथ में जब भी कोई ऐसी पत्रिका आती है जिसमें उसकी रचना प्रकाशित हुई हो तो उसे ऐसे आनंद की अनुभूति होती है जैसे कि उसके घर में नए शिशु का आगमन हुआ हो।

आज वह भाषा सबसे समृद्ध भाषा नहीं है जिसका अपूर्व एवं उल्लेखनीय इतिहास है, साहित्य है और संस्कृति की उज्ज्वल परंपरा है बल्कि वह भाषा समृद्ध है जो वर्तमान परिवेश में अधिक अनुकूल और उपयोग में लायी जा रही है, भले ही इसके पीछे उसके भिन्न राजनीतिक व अन्य समीकरण हों। सूचना-क्रांति के इस युग में हर क्षण बदलते वैश्विक परिदृश्य के बीच हिंदी भाषा एक नए जोश के साथ उभर रही है। कुछ वर्ष पहले तक हिंदी गंवारों और कम पढ़े-लिखों की भाषा माना जाता था, लेकिन वैश्वीकरण और बाजारीकरण के इस दौर में यह सोच तेजी से बदल रही है।

चूंकि यह अंक हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़ा के दौरान प्रकाशित हो रहा है इसलिए मैं सहृदय पाठकों को हिंदी दिवस की भी शुभकामनाएं अर्पित करता हूं। 'मंथन' के इस अंक में सम्मिलित अधिकांश रचनाएँ अवश्य ही आपके कोमल मन को स्पंदित करेंगी। इस अंक में हमने अपने पाठकों के लिए रोचक, ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक जानकारियों से अवगत कराने का भरसक प्रयास किया है। सहृदय पाठकों से अनुरोध है कि इसमें प्रकाशित रचनाओं, लेखों, कहानियों तथा कविताओं के बारे में अपनी टिप्पणी और प्रतिक्रियाएँ हमें अवश्य भिजवाएँ।

'मंथन' पत्रिका को उच्चस्तरीय बनाने में अपने बहुमूल्य सुझाव आमंत्रित है।

(के.पी.सत्यानंदन)

सलाहकार / राजभाषा

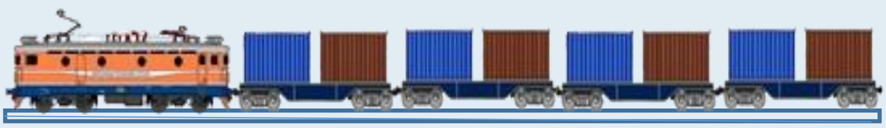

नरेंद्र मिश्रा | कार्यकारी संकेत और दूरसंचार/ वडोदरा

इलेक्ट्रिक वाहन - भारत का भविष्य

इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) आंतरिक-दहन इंजन के बजाय इलेक्ट्रिक मोटर पर संचालित होता है| इसलिए, बढ़ते प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, घटते प्राकृतिक संसाधनों आदि के मुद्दे को संबोधित करने के लिए, इलेक्ट्रिक वाहनों को वर्तमान पीढ़ी के ऑटोमोबाइल के संभावित प्रतिस्थापन के रूप में देखा जाता है।

भारत विश्व का पांचवां सबसे बड़ा कार बाजार एवं सबसे बड़ा दुपहिया बाजार है और निकट भविष्य में शीर्ष तीन में से एक बनने की क्षमता रखता है। 2070 तक भारत के शुद्ध शून्य उत्सर्जन के लक्ष्य को सुनिश्चित करने के लिए, भारत में एक परिवहन क्रांति की आवश्यकता है,जिसमें इलेक्ट्रिक वाहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगी । हाल ही में, ऑटोमोटिव विशेषज्ञों और आम-जनता के बीच समान रूप से बढ़ती सहमति है कि वाहनों का भविष्य इलेक्ट्रिक है। हालाँकि, इस संबंध में, भारत के पास अभी भी बैटरी निर्माण , चार्जिंग के लिये बुनियादी ढांचे की स्थापना सहित अनेक चुनौतियां है

भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की आवश्यकता:-

जलवायु परिवर्तन:- तेजी से वैश्विक तापमान वृद्धि की समस्या ने जीवाश्म ईंधन के उपयोग और संबंधित उत्सर्जन में कमी की आवश्यकता पैदा कर दी है। भारत ने 2030 तक अपने GHG उत्सर्जन की तीव्रता को 2005 के स्तर से 33% से 35% कम करने के लिए प्रतिबद्ध किया है।

तीव्र शहरीकरण:- आर्थिक विकास उभरते हुए देशों को तेजी से शहरीकरण की ओर लें जाता है क्योंकि जैसे-जैसे ग्रामीण जनसंख्या शहरों में गैर-कृषि क्षेत्र को स्थानांतरित करती है, पर्यावरणीय समस्याएं पैदा होती। डब्ल्यूएचओ के एक हालिया अध्ययन के अनुसार, विश्व के 20 सबसे प्रदूषित शहरों में से 14 शहर भारत के है। इलेक्ट्रिक वाहन शहरों में प्रदूषकों की स्थानीय सांद्रता को कम करके इस समस्या को कम करने में मदद करेगा।

ऊर्जा सुरक्षा:- भारत अपने परिवहन ईंधन के 80 प्रतिशत से अधिक की पूर्ति करने के लिए तेल का आयात करता है।

इलेक्ट्रिक वाहन भारत की आयातित कच्चे तेल पर निर्भरता को कम के कर, भारत की ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ावा दे सकते हैं।

स्वच्छ ऊर्जा:- नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर बदलाव से बेहतर बिजली उत्पादन प्रौद्योगिकियों की लागत में कमी आई है। इसने स्वच्छ, कम कार्बन और सस्ते ग्रिड की संभावना पेश की है।

विद्युत वाहनों के लाभ:-

कम परिचालन लागत:- एक इलेक्ट्रिक वाहन की परिचालन लागत पेट्रोल या डीजल वाहन की तुलना में बहुत कम है।

इलेक्ट्रिक वाहन पेट्रोल या डीजल जैसे जीवाश्म ईंधन का उपयोग करने के बजाय अपनी बैटरी चार्ज करने के लिए बिजली का उपयोग करते हैं।

कम रखरखाव लागत:- इलेक्ट्रिक वाहनों की रखरखाव लागत बहुत कम होती है क्योंकि उनके पास एक आंतरिक दहन वाहन के जैसे कई चलने वाले हिस्से नहीं होते हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए सर्विसिंग की आवश्यकताएं पारंपरिक पेट्रोल या डीजल वाहनों की तुलना में कम होती हैं। इसलिए, इलेक्ट्रिक वाहन चलाने की वार्षिक लागत काफी कम है।कर और वित्तीय लाभ:- इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने पर पंजीकरण शुल्क और सड़क कर पेट्रोल या डीजल वाहनों से कम है। आप किस राज्य में हैं, इसके आधार पर सरकार द्वारा कई नीतियां और प्रोत्साहन दिए जाते हैं|

भारत में इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग के लिए चुनौतियां:-

ईवी उत्पादन के लिए एक स्थिर नीति का अभाव:- ईवी उत्पादन पूंजी गहन क्षेत्र है जिसमें लाभ प्राप्ति के लिए दीर्घकालिक योजना की आवश्यकता होती है, ईवी उत्पादन से संबंधित सरकारी नीतियों में अनिश्चितता उद्योग में निवेश को हतोत्साह करती है।

बैटरी निर्माण :- ईवी अपनाने में सबसे महत्वपूर्ण बाधाओं में से एक बैटरी निर्माण प्रक्रिया और आपूर्ति श्रृंखला है। अनुमान है कि 2020-30 तक भारत की बैटरी की संचयी मांग लगभग 900-1100 GWh होगी। लिथियम-आयन बैटरी सबसे आम और अक्सर उपयोग की जाने वाली ईवी ऊर्जा स्रोत है। हम लिथियम-आयन सेल या इसके कच्चे माल का निर्माण नहीं करते हैं। भारत ईवी बैटरी के लिए आयात पर निर्भर करता है, जिसके परिणामस्वरूप इन महत्वपूर्ण घटकों और अंततः इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए ग्राहकों को अत्यधिक मूल्य चुकाना पड़ता हैं। संबधित अवसंरचना का अभाव:- एसी बनाम डीसी चार्जिंग स्टेशनों पर स्पष्टता की कमी, ग्रिड स्थिरता और रेंज की चिंता जैसे अनेक अन्य कारक हैं जो ईवी उद्योग के विकास में बाधा डालते हैं। घरेलू उत्पादन के लिए सामग्री की उपलब्धता का अभाव:- बैटरी इलेक्ट्रिक वाहनों का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। भारत में लिथियम और कोबाल्ट का कोई ज्ञात भंडार नहीं है जो बैटरी उत्पादन के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। लिथियम आयन बैटरी के आयात के लिए भारत जापान और चीन जैसे देशों पर निर्भर है।

कुशल कामगारों की कमी:- ईवी की सर्विसिंग लागत अधिक होती है और सर्विसिंग के लिए उच्च स्तर के कौशल की आवश्यकता होती है। भारत में ऐसे कौशल विकास के लिए समर्पित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का अभाव है।

इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रोत्साहन की सरकारी योजनाएं:-

सरकार ने 2030 तक कारों और दोपहिया वाहनों की नई बिक्री में इलेक्ट्रिक वाहनों का 30 फीसदी हिस्सा बनाने का लक्ष्य रखा है, जो आज 1 फीसदी से भी कम है। एक स्थायी ईवी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करने के लिए, नेशनल इलेक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन प्लान (NEMMP) और फास्टर एडॉप्शन एंड मैन्युफैक्चरर ऑफ़ हाइब्रिड एंड इलेक्ट्रिक व्हीकल्स (Fame India) भारत सरकार द्वारा शुरू किया है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

NEMMP:- इसे देश में हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय ईंधन सुरक्षा हासिल करने के उद्देश्य से 2013 में लॉन्च किया गया था। 2020 से साल दर साल हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक वाहनों की 6-7 मिलियन बिक्री हासिल करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य है ।

FAME: - यह योजना हाइब्रिड/इलेक्ट्रिक वाहनों के विकास और विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करने के उद्देश्य से 2015 में शुरू किया गया था। इस योजना के 4 मुख्य केंद्रित क्षेत्र हैं- तकनीकी (प्रौद्योगिकी) विकास, मांग का सृजन, अग्रगामी परियोजनाएं और चार्जिंग के लिए बुनियादी ढाँचा तैयार करना। हमको चीन जैसे देशों सीखने की जरूरत है। जहाँ विभिन्न कदम उठाए गए हैं जैसे कि व्यावसायिक जिलों में केवल इलेक्ट्रिक वाहनों की अनुमति देना, केवल इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए सड़क पर लेन आरक्षित करना आदि। इसकी लागत को कम करने के लिए भारत में बैटरी अनुसंधान और उत्पादन को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। लक्ष्य आधारित दृष्टिकोण की आवश्यकता है जैसे कि यूरोपीय संघ ने 2035 तक सम्पूर्ण रूप से इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने का लक्ष्य रखा है। चूंकि भारतीय एक दोपहिया चालित देश है, इसलिए इस क्षेत्र पर अधिक ध्यान देना चाहिए। राजमार्गों सहित हाउसिंग कॉलोनियों, पार्किंग स्थल, मॉल आदि को प्रोत्साहित करके चार्जिंग के लिए बुनियादी ढाँचे में सुधार किया जाना चाहिए। यदि हम ये करने में सफल होते है तो, भारत निश्चित रूप से विश्व में इलेक्ट्रिक वाहनों की राजधानी के रूप में उभर सकता है।

रघुवीर कुमार | कनिष्ठ परियोजना प्रबंधक, धनबाद

पर्यावरण संतुलन

पर्यावरण हमारे जीवन के लिए बेहद आवश्यक है। विभिन्न रूपों से पर्यावरण हमारे जीवन से संबंध रखती है। ऐसे में पर्यावरण की रक्षा करना हमारा कर्तव्य बनता है। जब हम पर्यावरण को स्वच्छ व स्वस्थ रखने की ठान लेंगे तो, पर्यावरण में संतुलन सरलता से हो जाएगा। अतः हम इस लेख के माध्यम से पर्यावरण संतुलन बनाये रखना कितना महत्वपूर्ण हैं इस पर चर्चा करेंगें।

प्रस्तावना - जन्म से लेकर मृत्यु तक पर्यावरण तत्व प्रत्येक जीव जंतु तथा मनुष्य को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार प्राणियों पर पर्यावरण का सकारात्मक प्रभाव पड़ने के साथ ही नकरात्मक प्रभाव पड़ना भी स्वाभाविक है। पर्यावरण संतुलन बना रहने से पेड़ पौधों से लेकर हर व्यक्ति स्वस्थ नजर आएगा। पर्यावरण संतुलन का बिगड़ना प्रत्येक जीवित प्राणी के लिए हानिकारक है।

पर्यावरण संतुलन से अभिप्राय - जब पर्यावरण की स्थिति स्थिर होती है तथा धरती के प्रत्येक प्रजाति तथा पर्यावरण का आपसी तालमेल संतुलित रहता है, पर्यावरण की वह स्थिति पर्यावरण संतुलन कहलाती है. पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ने में पर्यावरण प्रदूषण कारक मुख्य है. पर्यावरण संतुलन के असंतुलन की स्थिति में पहुंचने पर प्रकृति, जीव जंतु तथा प्रत्येक जीवित प्राणी का जीवन असंतुलित हो जाता है।

पर्यावरण संतुलन का महत्व - पृथ्वी को चारों ओर से घेरा हुआ वातावरण पर्यावरण कहलाता है। जिसमें पेड़ पौधे, नदियां, पहाड़, समुद्र, तालाब, हवा आदि शामिल हैं। पृथ्वी पर पर्यावरण का संतुलित आवरण एक सुरक्षा कवच के समान है। हम सभी भली भांति जानते हैं कि पेड़ हमारे जीवन के लिए एक अहम योगदान देते हैं। क्योंकि पेड़ो से ही हमें शुद्ध आक्सीजन प्राप्त होती है। वनों में मौजूद जड़ी बूटियों के जरिए तमाम रोगों के उपचार हेतु आयुर्वेदिक दवाएं बनाई जाती हैं। पर्वत और नदियां प्राकृतिक बरसात में सहायक है। इस प्रकार पेड़ों की मौजूदगी, नदियों का साफ होना तथा पर्यावरण की अन्य कृतियों का संतुलित होना प्रत्येक जीव हेतु महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण संतुलन को हानि पहुंचाने वाले तत्व - वर्तमान समय में मनुष्य अपने स्वार्थ में लिप्त हो चुका है। यही कारण है कि आज पर्यावरण को बनाए रखने का प्रयास असफल होता जा रहा है। औद्यौगिक विकास तथा अनेक फैक्टरियों का निर्माण किया जाने लगा है, जिससे वायु प्रदूषित हो चुकी है। प्राणवायु के अशुद्ध होने पर स्वस्थ जीवन की कल्पना करना ही व्यर्थ है। जल जिसके जीवन अधूरा है, आज जल के उन्हीं स्रोतों को कल कारखानों के आविष्ट पदार्थों द्वारा गंदा किया जा रहा है। वातावरण में अंधाधुंध पेड़ों की कटाई पर्यावरण संतुलन को असंतुलन बनाने में अहम भूमिका अदा करती हैं। कृषि क्षेत्र में कीटनाशक दवाओं तथा रासायनिक उर्वरक का कार्य चल रहा है जो कि लघु समय के लिए यह लाभदायक होते हैं। पर्यावरण के लिए इस प्रकार के रसायनों का प्रयोग हानिकारक रहता है।

पर्यावरण संतुलन की आवश्यकता - औद्योगिक विकास की होड़ में लगे सभी राष्ट्र स्वयं को विकसित बनाने के उद्देश्य में पर्यावरण को असंतुलित कर रहे हैं। हम यह भूल जाते हैं कि देश को विकासात्मक बनाने में पर्यावरण की भी अहम भूमिका होती है। वातावरण के साथ उन्नति करना ही हमारी प्राचीन सभ्यता है। हथियार, भोजन, वस्त्र इत्यादि मूलभूत वस्तुएं हमें पर्यावरण के माध्यम से ही प्राप्त होती हैं। आज के समय में हर व्यक्ति किसी ना किसी बीमारी का शिकार बना हुआ है जिसका अहम कारण है पर्यावरण असंतुलन। पर्यावरण के संतुलन से ही मानव जीवन संतुलित बनेगा।

निष्कर्ष - प्रकृति ईश्वर की बेहद खूबसूरत सौंदर्य का चित्रण है। यहां हर एक फूल, पक्षी, पेड़, पहाड़ किसी ना किसी प्रकार से हमें लाभ प्रदान करते हैं। हमारा यह कर्तव्य है कि अपने चारों ओर मौजूद अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखने का संकल्प लें।

स्वच्छता शपथ

दिनांक-16.09.2022

यह हमारा कर्तव्य है कि हम देश को साफ और स्वच्छ रखकर अपनी मातृभूमि की सेवा करेंगे।

मैं शपथ लेता हूं कि मैं स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्ध रहूंगा और स्वच्छता के लिए अपना समय दूंगा / दूंगी।

मैं प्रति वर्ष 100 घंटे अर्थात प्रति सप्ताह दो घंटे स्वेच्छा से स्वच्छता के लिए काम करूंगा / करूंगी

मैं न तो गंदगी फैलाऊंगा ना ही दूसरों को गंदगी फैलाने दूंगा।

मैं स्वयं को, अपने परिवार को, अपने पास-पड़ोस को अपने गांव या शहर और अपने कार्यस्थल को स्वच्छ रखूंगा / रखूंगी।

मैं मानता हूं दुनिया भर के वह देश जहां साफ-सफाई है वह इसलिए संभव हुआ है कि वहां के नागरिक गंदगी नहीं फैलाते हैं और न ही ऐसा होने देते हैं।

इस दृढ़ विश्वास के साथ मैं 'स्वच्छ भारत मिशन' का संदेश गांव में, नगरों, शहरों में फैलाऊंगा।

मैं आज जो शपथ आज ले रहा हूं यही शपथ 100 और लोगों को दिलाने का प्रयास करूंगा / करूंगी।

मैं उनको भी 100 घंटे स्वच्छता के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करूंगा / करूंगी।

मुझे विश्वास है कि स्वच्छता के लिए मेरे द्वारा उठाया गए प्रत्येक कदम से मेरे देश को स्वच्छ रखने में मदद मिलेगी।

जय हिंद, जय भारत

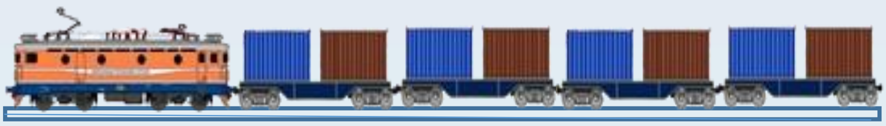

प्रयांशु शिव | कार्यकारी परि. एवं व्यव. विका., किशनगढ़, जयपुर

हवा से बातें

मदमस्त हवाओं ने पूछा मुझसे
क्या प्यार करोगे तुम मुझसे,

मैंने हंसते हुए पूछा, ऐसा क्या है तुझमें
मदमस्त हवाओं ने कहा मुझसे,

मैं लहर हूं मस्त फिजाओं की
नवजीवन तरंग शिफाओं की

ये जग मुझ बिन है ऐसे
जल बिन मछली हो जैसे

इस धरती से लेकर अम्बर तक
मेरा विस्तार है तल समंदर तक

तुम बैठो किसी उपवन में कभी
मुझ पर ही होती हैं चर्चाएं सभी,

हूँ पावन सानिध्य की बेला मैं
सदा हूँ तुझ पर समर्पण मैं
मैं सदा हूँ तुझसे छुपा हुआ
पर सिमटा हूँ तुझसे लिपटा हुआ,

अब दौर चल निकला कैसा ये
है बदला बदला ये समाँ हुआ,

इस प्रकृति में विकृति का
ना जाने कहाँ से आगाज हुआ

अब भौतिक रूपी घटना पर
ना मेरा एकाधिकार रहा,

मेरे ही नैसर्गिक बंधन पर
मैंने ही प्रदूषण और नरसंहार सहा

औद्योगीकरण ने बर्बाद किया मुझको
फिर भी मैंने आबाद किया सबको

इस परिवर्तन युग के विवर्तन में
मैंने सदा शिष्टाचार किया,

फिर मानव क्यूँ इतना मतलबी हुआ
उसने मुझ पर भी भ्रष्टाचार किया

नित पालन किया मैंने अपने कर्मों पर
फिर दंश क्यूँ झेलू मैं जन्मों भर,

अब शिकायत मैं किस से करू भला
नही है मुझ मे स्वार्थपन की कला

तू समझ सके तो समझ मुझे
फिर गम ना रहेगा कभी तुझे,

अब तो बस यही मेरी कहानी है,
जिस पर तू करता सदा मनमानी है
जिस पर तू करता सदा मनमानी है।

अंजलि कुमारी
पत्नी अमन रोशन
वरिष्ठ कार्यकारी / संकेत एवं दूरसंचार –II, धनबाद

दिलीप कुमार पेड़ावत
एमटीएस, किशनगढ़, जयपुर

प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है

प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है,
मार्ग वह हमें दिखाती है।
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।
नदी कहती है बहो-बहो
जहाँ हो, पड़े ना वहाँ रहो।
जहाँ गंतव्य, वहाँ जाओ,
पूर्णता जीवन की पाओ।
विश्व गति ही तो जीवन है,
अगति तो मृत्यु कहाती है।
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।
शैल कहते है, शिखर बनो,
उठो ऊँचे, तुम खुब तनो।
ठोस आधार तुम्हारा हो,
विशिष्टिकरण सहारा हो।
रहो तुम सदा उध्र्वगामी,
उध्र्वता पूर्ण बनाती है।
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।

वृक्ष कहते हैं खूब फलो,
दान के पथ पर सदा चलो।
सभी को दो शीतल छाया,
पुण्य है सदा काम आया।
विनय से सिद्धि सुशोभित है,
अकड़ किसकी टिक पाती है।
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।
यही कहते रवि शशि चमको,
प्राप्त कर उज्वलता दमको।
अंधेरे से संग्राम करो,
न खाली बैठो, काम करो।
काम जो अच्छे कर जाते,
याद उनकी रह जाती है।
प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।

उम्मीद

कमरे में किताबों का ढेर लगा हैं,
मन उम्मीदों में सपने सजा रहा है |
महीने की तारीखें बदलती जा रही है ,
वक्त हाथों से रेत की तरह फिसल रहा हैं |
परीक्षा ,फार्म ,रिजल्ट इसमें उलझे हुए हैं ,
फिर भी कोशिश खुद को सुलझाने की किए जा रहे हैं।
हर बार एक उम्मीद की इस बार कुछ ,
अच्छा होगा , ने हमें रोक रखा है |
फोन पर माँ कहती है बेटा आने ,
वाला कल अच्छा होगा ,बस उन्हीं के विश्वास
पर हम रोज नई जंग लड़े जा रहे हैं |
कलम ,किताबें उम्मीदें,
माँ कहती है 'आने वाला कल अच्छा होगा
आने वाला कल ....?

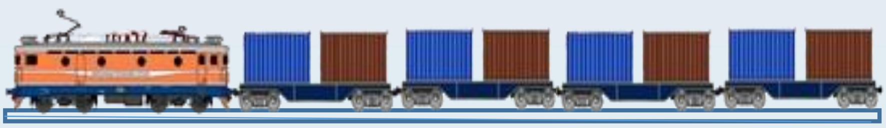

वागा राम पटेल	कार्यकारी विद्युत, वडोदरा

स्वर्णिम दिवस-15 अगस्त

सबसे सुनहरा प्यारा दिवस १५ अगस्त,
अंधकार की कोख से
क्रांति की प्रसव-पीड़ा झेल कर
आज के दिन ही ऊगा गगन में आजादी का
सूरज...... हिंदुस्तान के डगर पर
रौंद कर उस अंग्रेज़ो को हमने तिरंगा
फहराया .....जो वीर सपूतों के लाशों पर
पेअर रख कर विदा हुए ....
उन वीर शहीदों के याद में नयन अश्रुपूरित हैं
टूट रहा हृदय गर्व से पूरित है,
देते हैं सलामी उनको अपना सीना तन कर
हर साल तिरंगा फहराते हैं
मन में अपार आहद भर कर....
बहनों की लाज बचानी है ....
राखी की शपथ पूरी करनी है ,
फुटपाथों पर सोने वालो आंधी-पानी झेलने वालों ....
मेहनत से हम मिल-जुल कर देश में खुशहाली लाएं ....
कोविद-19 को दूर भगाएं
आओ इस स्वर्ण दिवस पर चल
ऐसा उल्लास मनाएं ...
बस इतना संकल्प करें
जो है उसको कहीं खो न दें
जो खोया उसका ध्यान करें ..।।

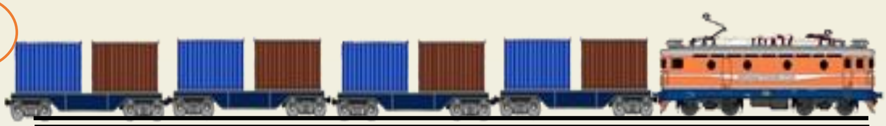

प्रदीप कुमार सिंह विष्ट	वरि. कार्यकारी, संकेत एवं दूरसंचार, सीजीएम टूंडला

सद्‌भावना

लिखने चला मैं एक कविता
विषय सद्भावना का चुना।
ऐसा ये वर्तमान वातावरण,
मानव कर रहा जानवर सा आचरण।

आतंक फैलाते आतंकी
कुछ सिरफिरे भी कर रहे नौटंकी।
कौन यहाँ डुगडुगी बजा रहा,
कौन नृत्य कर इतरा रहा।
लोग खड़े मूकदर्शक,
इंसान बना इंसान का भक्षक।

क्यों कोई है हिन्दू, है कोई मुस्लिम, सिख, इसाई,
आम आदमी की है ये पुकार, थोड़ा सुन लो भाई।
कौन आपस में बैर कराता, क्यों वो खुद पर इतराता।

मैं हूँ मैं हूँ कहता जाता, क्यों नहीं कोई इसे सद्भावना का पाठ पढ़ाता।
क्यों धर्म भेद, भाषा भेद और जाति का अन्तर,
कोई दे इन्हें सद्भावना का मन्तर।
यही सोचता मैं निरन्तर,
क्यों यह समाज है निरुत्तर।

सूरज एक, एक है चन्दा,
एक ही अपनी धरती प्यारी,
भूलकर आपसी भेदभाव,
अब है सद्भावना की बारी।
हो रहने वाले किसी प्रान्त के,
हो कोई बोली या भाषा-भाषी।
भारतवर्ष है वतन हमारा,
सबसे पहले हम भारतवासी।

गीता, कुरान, बाइबल हमें समझाते,
मानवता है धर्म सिखलाते।
मानवता ही धर्म अपनाते तो जान जाते,
मन्दिर, मस्जिद, चर्च, सिर्फ भेद कराते।

भूलो भेदभाव मानवता की खातिर,
भूलो धर्म जाति और क्षेत्रवाद,
दाता दे सटको यह आर्शीवाद,
भारतवर्ष बने सद्भावना का मंदिर।

और अब अंत में मेरी इन चन्द पंक्तियों ने,
इसलिए यह बात कह दी, क्योंकि
दशकों से हमारी रेल व उसकी पटरियाँ,
बन रही हैं इसकी भुक्तभोगी।

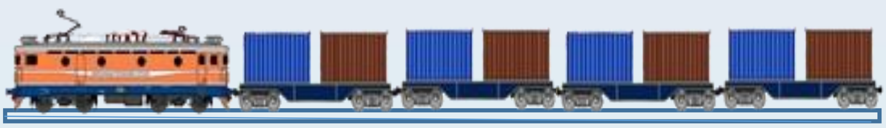

अपर्णा त्रिपाठी महाप्रबंधक / वित्त, कॉर्पोरेट कार्यालय

प्रकृति

मैं आइसबर्ग की टिप नहीं
समूचा आइसबर्ग हूँ
मुझे जितना देखते हो
उतनी ही हूं

कुछ छिपी हुई नहीं
एक खुली किताब
मैं प्रकृति हूँ
मुझे देखने, समझने को
हर कोई स्वतंत्र
बादलों की धुंध
और धूप की चमक
सब कुछ समेटे

जितनी दृश्य आंखों से
या सिर्फ महसूस होती हूं
मैं प्रकृति हूँ

जैसे द्रौपदी के वस्त्र
पर्त दर पर्त
कपट से प्राप्य नहीं
मुझे समझने के लिए
चाहिए, संपूर्ण निर्मलता

ब्रजेश साँखला कनिष्ठ कार्यकारी / सिविल

मन..

कभी तमन्ना ना थी दो गज जमीं की जिनको
वही मन अब महलों की रौनक में खो गया है।
ये मन अपने दुःख से दुःखी न होकर
दूसरों की खुशी से दुःखी हो गया है

पहले अपने में ही खोया रहता था मेरा ये मन
अब दूसरों की खुशियों से क्यों होने लगी इसे जलन
माना कि इस मन को न खुशियां नसीब थीं
पर दूसरों की खुशियों से इसको न खीझ थी।

अपने पराये का यह भेद नहीं जानता था
स्वर्ग से सुंदर है यह जग बस यही मानता था
भोली सी सूरत वाला, भोला-भाला मेरा मन था
सिर्फ अपने लिए ही जीना नहीं इसको पसंद था।

सब की खुशी में खुशी, बस यही ढूंढता था
दूसरों के दुःख मैं भी यह आंखें नहीं मूंदता था
लग गई नजर अब क्यों मेरे मन को ?
देखता नहीं है अब पिछले कर्म को

स्वार्थ के बीज बोकर अपने ही मन से
रिश्तों को ढक दिया इसने कफन से
मन के भटकने से मुझे लगने लगा है डर
खो दी हो जैसे मैंने जीवन की सही डगर

मन के इस बहकावे को बस यहीं रोको यारों
मनमानी न करने दो, इसको खुद से ही टोको यारों
सबकी खुशी में खुशी, सबके गमों में गम
बस यही एक मूलमंत्र हम सबका लोगों का हो यारों

आदित्य अवस्थी | प्रबंधक सतर्कता, कॉर्पोरेट कार्यालय

तारणहार

जो ठग सागर को पार करा दे,
वही तो तारणहार है।
जो बिन खेवे, नैया पार लगा दे,
वही तो तारणहार है।।

यही 'कीमती' आभूषण है,
यही 'सच्चा' श्रंगार है।।
हर मर्ज की यही दवा है,
हर सफलता का द्वार है।।

पीड़ित की, हर पीड़ा को, हर ले,
वो ऐसा झंडुबाम है।
दर्द दिलाकर फील गुड करा दे,
वो ऐसा ज़ालिम लोशन, ऐसा रामबाण है।।

जो इसको अपनाता है,
पौ बारह कर जाता है।
जो इसको झुठलाता है,
गर्त में गिर जाता है।।

हरी अनंत है,
हरी कथा अनंता।
कहाई, सुनाई,
बहुबिधि सब संता।

सारे तीरथ बार-बार, गंगा सागर एक बार,
वैसा ही है कलयुगी तारणहार।
मेहनत, कर्म, सत्य, सेवा बिलकुल हैं बेकार,
तारणहार से मित्रता, खोले सफलता के द्वार।।

मन के जीते जीत है,
मन के हारे हार।
जन-जन के लाडले प्यारे है,
अपने तारणहार।।

नेता, अभिनेता, व्यापारी या कर्मचारी,
सब हैं इसकी गिरफ्त में।
इससे घातक कोई नहीं है,
आज के इस दौर और वक्त में।।

झूठ, प्रचार-प्रसार और आडंबर,
ये इसके औजार हैं।
अनाचार, परनिंदा, द्वेष और घृणा
ये इसके सारे हथियार हैं।।

तारणहार कोई जीव नहीं है,
ये समय की पुकार है।
अपना महिमा मंडन
और दूसरे की हाहाकार है।।
वही तारणहार है।।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

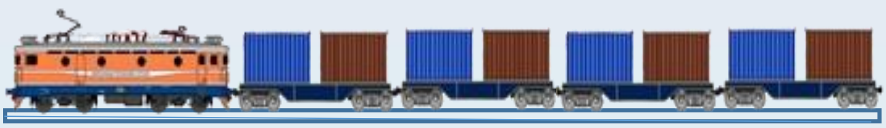

लव शुक्ला | संयुक्त महाप्रबंधक कॉर्पोरेट (समन्वय)

डीएफसीसीआईएल की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि-20 दिन की रिकार्ड अल्पावधि में वलसाड में ट्विन बॉक्स आरओबी का अन्तर्वेशन

भारतीय रेल दुनिया की सबसे बड़ी रेल प्रणालियों में से एक है। व्यापकता, उपयोगिता तथा राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से इसका महत्व संभवतः दुनिया में सर्वाधिक है। विगत लगभग 170 वर्षों के अपने अब तक के जीवन-काल में यह राष्ट्र की जीवन रेखा के रूप में उभरी है। हम इस तथ्य को स्वीकार करते हैं और इस पर गर्व करते हैं। परंतु यह भी सत्य है कि डीएफसीसीआईएल के प्रादुर्भाव से पूर्व हमारी रेल प्रणाली परंपरागत स्वरूप में ही रही। स्वतंत्रता के उपरांत डीएफसीसी के रूप में एक ऐसी वृहदाकार परियोजना को प्रारंभ किया गया जो देश की सबसे बड़ी अवसंरचना परियोजना में से एक है। मात्र कुछ दशक पूर्व इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। एक कल्पनातीत परियोजना अब साकार हुई है और परिवहन क्रांति का सूत्रपात हुआ है। डीएफसीसीआईएल की कुल लंबाई लगभग 3300 किमी. है। कई नए कोरिडोरों पर कार्रवाई की जा रही है।

कहा जाता है कि यह सत्य नहीं है कि जब कोई राष्ट्र सुदृढ़, संपन्न होगा तब उसकी अवसंरचना सुदृढ़ होगी, बल्कि सत्य यह है कि कोई राष्ट्र तब सुदृढ़ होगा, संपन्न होगा जब उसकी अवसंरचना सुदृढ़ होगी। डीएफसीसीआईएल में हमने इस तथ्य को समझा है और हम अपनी अवसंरचना तथा उसके प्रतिफल के रूप में राष्ट्र की सुदृढ़ता तथा संपन्नता, जो हमारा अन्ततः लक्ष्य है, के मार्ग में अग्रसर है।

कुशल परिवहन के चार प्रमुख आयाम हैं। परिवहन साधन, अधिक ऊँचा (Higher), अधिक चौड़ा (Wider), अधिक लंबा (Longer) तथा अधिक तेज (Faster) होना चाहिए। इन आयामों पर ही परिवहन व्यवस्था की कारगरता निर्धारित करती है। अधिक बड़ा एमएसडी होने के कारण डीएफसीसी की गाड़ियां अधिक ऊंची और अधिक चौड़ी होंगी। गाड़ियां 1.5 किमी. तक लंबी हो सकती हैं। माल परिवहन के लिए ट्रैक, डेडीकेटेड होने और सिगनल प्रणाली ऑटोमैटिक होने के कारण गाड़ियां अधिक तेज गति से परिचालित की जा सकती है। डीएफसीसी के ट्रैक का डिजाइन भी इस प्रकार बनाया गया है कि इस पर 25 टन एक्सेस लोड का परिचालन किया जा सकता है। इसकी क्षमता 32.5 टन तक के एक्सल लोड के लिए बढ़ाई जा सकती है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इन विशेषताओं से डीएफसी के अन्तर्निहित लाभ परंपरागत रेल प्रणाली की तुलना में कई गुणा हो जाते हैं। परंतु, उच्च तकनीकी मानक के ट्रैक के निर्माण कार्य में निश्चित तौर पर चुनौतियां भी उतनी ही ज्यादा होती हैं। कुछ खंड अत्यंत कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में हैं। भूमि अधिग्रहण भी व्यापक तौर पर करना पड़ता है, जिसमें परियोजना प्रभावित व्यक्तियों के पुनर्वास तथा पुनर्स्थापन की समस्या भी सदैव रहती है, विभिन्न स्टेक होल्डरों के साथ समन्वय रखना होता है, यह भी आसान काम नहीं होता है। अब कोविड-19 की अप्रत्याशित एवं भयावह स्थिति का भी सामना करना पड़ा है। ये कुछ समस्याएं है, ऐसी कुछ समस्याएं होती है जिन्हें अपने मिशन को पूरा करने के मार्ग में सामना करना पड़ता है। निर्माण की आधुनिक तकनीक तथा अत्याधुनिक उपकरणों का उपयोग कर नई तकनीक चुनौतियों का सामना किया जा रहा है। इन

तकनीकों से कार्य की गति भी बढ़ती है तथा साथ ही कार्य की गुणवत्ता भी बढ़ती है। न्यू ट्रैक कंस्ट्रक्शन (एनटीसी) मशीन भी इसी प्रकार का एक अत्याधुनिक उपकरण है, जिसका उपयोग डीएफसी परियोजनाओं के लिए किया जा रहा है। एनटीसी एक महंगी मशीन जरूर है परंतु कार्य निष्पादन तथा कार्य की गुणवत्ता की दृष्टि से इसके लाभ अतिशय हैं। कार्य के परिणाम के आधार पर इस पर किया गया खर्च कतई भी ज्यादा नहीं कहा जा सकता है।

न्यू ट्रैक कंस्ट्रक्शन (एनटीसी मशीन): यह ट्रैक की ज्यामिति तथा कार्य के अन्तर्निहित जटिलता पर निर्भर करता है कि कोई

ट्रैक उपकरण कितने समय काम करेगा। सीमित अवधि में कार्य पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किए गए होने के कारण ट्रैक मशीन द्वारा हैवी ट्रैक स्ट्रक्चर बिछाने का कार्य सफलतापूर्वक किया जा सकता है। ट्रैक बिछाने के परंपरागत मशीनों की तुलना में एनटीसी मशीनों द्वारा तीन गुना तेज गति से ट्रैक बिछाई जा सकती है। मैकेनिकल हैंडलिंग, मूवमेंट और भारी ट्रैक कम्पोनेंटों को बिछाने के एकीकृत लॉजिस्टिक के साथ यह मशीन ट्रैक निर्माण को सुगम और कुशल बनाने में सहायता करती है। इस समय डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर के संरेखण पर सात एनटीसी मशीनें काम कर रही हैं। चार मशीनें पूर्वी डीएफसी पर और तीन मशीनें पश्चिमी डीएफसी पर।

परिचालन की अत्यधिक लागत को देखते हुए एनटीसी का सतत उपयोग किया जाना होता है ताकि इससे अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सके। ट्रैक की प्रत्येक निरंतरता भंग की स्थिति में एनटीसी मशीन द्वारा ट्रैक बिछाने का कार्य रोकना पड़ता है। इसके मार्ग पर किसी भी अवरोध से मशीन का कार्य रुक जाने से समय की बर्बादी होती है और मौद्रिक नुकसान भी होता है। पश्चिमी डीफसीसी की मुंबई यूनिट की निष्पादन टीम के सामने उसके वैतरणा-सचिन खंड में दक्षिण गुजरात में वलसाड के समीप रोड ओवर ब्रिज (आरओबी) की क्रासिंग की भारी समस्या थी। भारतीय रेलवे के ट्रैक पर आरओबी पहले से था। इस आरओबी पर भारी यातायात होता था तथा दिन भर यातायात चलता रहता था क्योंकि यह शहर को राजमार्ग से जोड़ता था। भारतीय रेलवे के ट्रैक के निकट डीएफसी ट्रैक बिछाई जा रही है। इस पुराने आरओबी के एप्रोच रोड का पश्चिमी छोर, डीएफसी ट्रैक के आरओडब्ल्यू (राइट ऑफ वे) को बाधित कर रहा था और उसकी मरम्मत की जानी थी। विभिन्न प्रतिबंधों के कारण मरम्मत कार्य नहीं किया जा सक रहा था और एनटीसी का मूवमेंट न हो सकने के कारण ट्रैक बिछाने का कार्य तेजी से नहीं किया जा सक रहा था। यह परियोजना यूनिट के लिए दबाव की स्थिति थी। इससे प्रतिदिन के हिसाब से मौद्रिक नुकसान भी बढ़ रहा था।

मुंबई नार्थ यूनिट की परियोजना टीम ने इस चुनौती को स्वीकार किया। बहुत से गहन विचार सत्रों के बाद एक अभिनव समाधान तक पहुंचा गया। समाधान का यह प्रस्ताव किया गया कि 16मी.x 10मी. आकार के टिवन-प्री कास्ट ब्लॉक आरओबी एप्रोज रोड पर अन्तर्वेशन किया जाए ताकि एनटीसी को इसके माध्यम से आगे ले जाया जा सके। इस कार्य को करने के लिए सबसे बड़ी चुनौती सड़क यातायात को ब्लॉक करने की थी। क्योंकि यह आरओबी, मुंबई-दिल्ली-राजमार्ग से बालसाड शहर में प्रवेश के लिए व्यस्ततम मार्गों में से एक है।

उत्खनन से पूर्व सूरत की ओर से लिया गया फोटोग्राफ : महामारी, लॉकडाउन तथा संसाधनों की कमी के बावजूद डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर के निर्माण का कार्य अविरल चलता रहा है। कई बार परियोजना टीम द्वारा कठिन जमीनी

हकीकतों का सामना करने के लिए कल्पनातीत समाधान खोजे गए। आपदा में भी अवसर खोजना चिंतनशील मानव का प्रयास रहता है। कोविड की भयंकर समाजबंदी के दौरान आरओबी के अवरोधों को हटाने का चुनौतीपूर्ण कार्य निष्पादित करने और टिवन प्रीकास्ट वाक्सों के अन्तर्वेशन करने का कार्य करने का निर्णय लिया गया। हालांकि सामाजिक परिस्थितियां तब नकारात्मक थीं परंतु इस जटिल कार्य को

करने का स्वर्णिम मौका भी यही था। उस दौरान अंतर-नगरीय यातायात सीमित था। इस का लाभ उठाते हुए इस कार्य को निष्पादित करने के लिए सड़क यातायात को ब्लॉक करने का प्रस्ताव किया गया। वलसाड के जिला प्रशासन द्वारा हमारे इस प्रस्ताव पर सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की और उसने 20 दिन सड़क ब्लॉक करने की अनुमति प्रदान की।

जिला प्रशासन द्वारा 20 दिन के सड़क यातायात को ब्लॉक करने की अनुमति प्रदान तो कर दी परंतु निष्पादन टीम के सामने चुनौती यह थी कि 20 दिन के सड़क यातायात के ब्लॉक के दौरान इस कठिन तथा दुष्कर कार्य को कैसे पूरा किया जाए। डीएफसी की परियोजना टीम द्वारा इस स्थिति का सामना करने के लिए कठोर श्रम किया गया और निर्धारित समय में कार्य को पूरा करने के लिए व्यापक प्रबंध किए गए। साइड पर ही इन विशालकाय सेगमेंटों की प्री-कास्टिंग करने की व्यवस्थाएं भी की गईं। लॉकडाउन तथा यात्रा प्रतिबंधों के बावजूद लगभग 150 लोगों की एक टीम, जिसमें वरिष्ठ इंजीनियर भी शामिल थे, द्वारा इस कास्टिंग कार्य को संपन्न करने के लिए रात-दिन मेहनत की गई।

बलसाड में ट्विन बॉक्स आरओबी के लिए उत्खनन कार्य टिवन बॉक्स कास्टिंगों का अन्तर्वेशन 20 दिन का सड़क यातायात ब्लॉक 12.06.2021 को प्रारंभ हुआ और योजनानुसार कार्य प्रारंभ किया गया। इन सेगमेंटों की संस्थापना के लिए 300 एमके और 500 एमटी की क्षमता वाले चार हैवी डयूटी हाइड्रॉलिक क्रेनों को लगाया गया। एक दूसरी समस्या जिसका समाधान कठिन प्रतीत हो रहा था वह था कि सेगमेंटों की हैंडलिंग कैसे की जाए। इसका अभिनव समाधान निकाला गया कि इसकी हैंडलिंग स्थानीय तौर पर ही की जाएगी। प्रीकास्ट सेगमेंट बहुत बड़े और भारी थे, जिनकी हैंडलिंग में टूट-फूट होने की संभावना थी। परियोजना टीम द्वारा इसके लिए विशेष डिजाइन का कैरियर तैयार किया गया, जिसमें एक ऐसा मल्टी-एक्सल ट्रेलर का इस्तेमाल किया गया, जिसमें स्टील प्लेटफार्म फिट किया गया था। स्टील प्लेटफार्म का कार्य साइट पर ही किया गया। यह भागीरथ कार्य उस समय भी सतत चल रहा था जब देश इंड्रस्टियल आक्सीजन की सप्लाई की भारी कमी से गुजर रहा था। देश में भयंकर त्रासदी थी। टीम निरंतर प्रयास करते हुए और समस्याओं का अकल्पनीय समाधान निकालते हुए सभी बाधाओं को पार करती रही। टीम ने अपनी सामूहिक बुद्धिमता और अनुभव का इस्तेमाल किया और त्वरित तथा साहसिक निर्णय किए। परिणाम यह हुआ कि यह कार्य निर्धारित समय-सीमा के भीतर सफलतापूर्वक पूरा किया गया। यह टीम अपने सर्वोच्च कार्य-निष्पादन के लिए सराहना की पात्र है।

प्रारंभ में एक समय डीएफसीसीआईएल के अधिकारी थोड़ा आंशकित जरूर थे। काम बहुत बड़ा था, समय बहुत कम। यह सोच जरूर थी कि क्या मात्र 20 दिन के यातायात ब्लॉक के दौरान यह कार्य पूरा हो पाएगा ? प्रारंभ से ही जोरदार प्रयास किए गए, कार्य आगे बढ़ा तो उत्साह भी बढ़ा, विश्वास भी बढ़ा। महामारी के उस महा-विनाशकारी दौर में जिस प्रकार परियोजना टीम ने कमर कसी और कार्य पूर्णता और सटीकता से संपन्न किया उससे उच्च अधिकारी भी काफी प्रसन्न हुए। ट्रैक बिछाने वाली एनटीसी मशीन का वलसाड आरओबी के उत्तरी छोर से दक्षिणी छोर की ओर प्रस्थान डीएफसीसीआईएल के कार्य तथा प्रगति पथ के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। यह कदम, यह पहल डीएफसीसीआईएल की प्रगति की दिशा में एक बड़ी उछाल है। यह हमारी संकल्प शक्ति को प्रतिबिंबित करती है।

राजेश कुमार | सहायक प्रबंधक, व्यवसाय विकास, कॉर्पो. कार्या.

भारतीय सेना में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

आधुनिक समय में महिलाएँ सभी क्षेत्रों में अपने साहस का बेहतरीन प्रदर्शन कर रही हैं और पुरुषों के साथ कन्धे-से कन्धे मिलाकर चल रही हैं, जिसमें सशस्त्र बल का क्षेत्र भी अछूता नहीं है। वर्तमान में निर्मला सीतारमण रक्षा मन्त्री हैं और यह देश तथा महिलाओं के लिए गौरव की बात है। महिलाएं समाज के विकास एवं उन्नति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनके बिना विकसित तथा समृद्ध समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। एक प्रसिद्ध कहावत है कि यदि आप एक पुरुष को शिक्षित कर रहे हैं, तो आप केवल एक पुरुष को शिक्षित कर रहे हैं, परन्तु यदि आप एक महिला को शिक्षित कर रहे हैं, तो आप आने वाली पूरी पीढ़ी को शिक्षित कर रहे हैं। लंबे समय तक सशस्त्र बलों में महिलाओं की भूमिका चिकित्सीय पेशे जैसे डॉक्टर और नर्स तक ही सीमित थी। 1992 में नॉन-मेडिकल जैसे- विमानन, रसद, कानून, इंजीनियरिंग और एक्जीक्यूटिव कैडर में नियमित अधिकारियों के रूप में महिलाओं के प्रवेश के दरवाज़े खुले। वर्तमान में भारतीय सशस्त्र बल के तहत सेना, नौसेना, वायु सेना और तटरक्षक बल को शामिल किया जाता है।

रक्षा मंत्रालय ने सेना में महिला अधिकारियों को स्थायी कमीशन देने के लिये आदेश जारी कर दिया है। उच्चतम न्यायालय ने फरवरी में एक ऐतिहासिक निर्णय में निर्देश दिया था कि शॉर्ट सर्विस कमीशन (एसएससी) योजना के तहत भर्ती की गई सभी सेवारत महिला अधिकारियों को स्थायी कमीशन देने पर विचार किया जाए. सेना के प्रवक्ता कर्नल अमन आनंद ने कहा कि सरकारी आदेश से सेना में बड़ी भूमिकाओं में महिला अधिकारियों की भागीदारी का रास्ता साफ हो गया है।

अगर विदेशी सेनाओं के मुकाबले भारतीय सेना में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की बात की जाए तो हम इस मामले में बहुत पीछे हैं। हालांकि अब सेना में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बीस फीसद करने का निर्णय लिया गया है। विदेशी सेनाओं में महिलाओं की संख्या पर नजर डालें तो चीनी सेना में करीब ढाई लाख महिला सैनिक हैं, जिनमें से डेढ़ लाख सशस्त्र बलों का हिस्सा हैं। अमेरिका में 1775 से ही महिलाएं सेना में शामिल होती रही हैं। करीब चार साल पहले वहां सेना में महिलाओं को युद्ध में शामिल होने की अनुमति भी मिल गई। फ्रांस में भी सन 1800 से ही महिलाएं सेना में शामिल हैं। इजराइल की महिला सैनिक दुनिया की सर्वाधिक खतरनाक महिला सैनिक मानी जाती हैं। वहां सेना में पुरुष और महिला सैनिकों की संख्या लगभग बराबर है। रूसी सेना में भी करीब दो लाख महिला सैनिक हैं। इन देशों के अलावा ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, यूनान, यूक्रेन, चेक गणराज्य, पोलैंड, पाकिस्तान, रोमानिया आदि में भी महिलाएं सेना का हिस्सा बन कर लड़ाकू और प्रशासनिक, दोनों प्रकार की भूमिकाएं बखूबी निभा रही हैं।

बदलते जमाने के साथ महिलाओं की भागीदारी हर क्षेत्र में बढ़ रही है। पहले जहां सेना में महिलाओं की हिस्सेदारी कम थी। वहीं अब उनकी संख्या में भी इजाफा हो रहा है। तीनों रक्षा बलों को मिलाकर कुल 9,118 महिलाएँ अधिकारी के रूप में पहले से काम कर रही हैं। अब सैन्य पुलिस में 1700 महिलाओं को जवानों के रूप में शामिल करने की मंजूरी दी गई है। इससे सशस्त्र बल और मजबूत होगा। 1942 में, भारतीय राष्ट्रीय सेना (आजाद हिंद फौज) ने जापानी सहायता से सुभाष चंद्र बोस

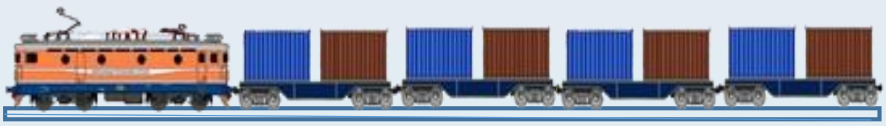

के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाली भारत की पहली महिला रेजिमेंट , झांसी रेजिमेंट की स्थापना की थी। यह अनुमान है कि 2000 से अधिक महिलाओं ने रेजिमेंट में सेवा की। 1992 से पहले, महिला अधिकारियों को केवल सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा से चिकित्सा धारा में नौसेना में शामिल किया जाता था। जुलाई 1992 से, नौसेना ने शुरू में एक विशेष प्रवेश योजना के माध्यम से और बाद में लघु सेवा आयोग के माध्यम से नौसेना की केवल चुनिंदा शाखाओं में महिलाओं को शामिल करना शुरू किया। 2000 के दशक की शुरुआत में मेडिकल और लॉजिस्टिक्स स्ट्रीम की महिला अधिकारियों को नौसेना के जहाजों पर तैनात किया गया था। मौजूदा समय में केवल भारतीय वायु सेना ही लड़ाकू पायलटों के रूप में महिलाओं को लड़ाकू भूमिका में शामिल करती है। साथ ही भारतीय वायु सेना में महिला अधिकारियों का प्रतिशत भी अन्य शाखाओं से काफी अधिक है। आँकड़ों के अनुसार, भारतीय वायु सेना में तकरीबन 13.09 प्रतिशत महिला अधिकारी हैं।

अंजना भादुरिया, जो 1992 में ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी, चेन्नई में महिला कैडेटों के पहले बैच में शामिल हुईं, भारतीय सेना में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली महिला अधिकारी हैं।

प्रिया झिंगन, 1993 में कमीशन, एक अधिकारी के रूप में भारतीय सेना में शामिल होने वाली पहली 25 महिलाओं में से एक हैं।

अलका खुराना, 1993 में कमीशन हुईं, 1994 में गणतंत्र दिवस परेड और सेना दिवस परेड में भाग लेने वाली भारतीय सेना की पहली महिला हैं। लेफ्टिनेंट कर्नल मिताली मधुमिता, 2000 में कमीशन, वीरता पुरस्कार प्राप्त करने वाली भारत की पहली महिला अधिकारी हैं, जिन्हें काबुल, अफगानिस्तान में 26 पर आतंकवादियों द्वारा काबुल में भारतीय दूतावास पर हमले के दौरान दिखाए गए अनुकरणीय साहस के लिए 2011 में सेना पदक प्राप्त हुआ था।

दिव्या अजित कुमार, 2010 में कमीशन, स्वॉर्ड ऑफ़ ऑनर प्राप्त करने वाली पहली महिला अधिकारी हैं। उन्होंने 2015 के गणतंत्र दिवस परेड के दौरान 154 महिला अधिकारियों और कैडेटों के सभी महिला दल का नेतृत्व किया

कैप्टन स्वाति सिंह, एक इंजीनियर और भारतीय सेना की 63वीं ब्रिगेड में एकमात्र महिला अधिकारी, सिगनल प्रभारी के रूप में नाथू ला दर्रे पर तैनात होने वाली पहली महिला अधिकारी हैं। फरवरी 2020 में माधुरी कानिटकर भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट जनरल बनने वाली तीसरी महिला बनीं।

आज महिलाएँ संपूर्ण विश्व में सैन्य क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। भारत भी कॉम्बैट भूमिका में महिलाओं को शामिल करने की ओर तेज़ी से कदम बढ़ा रहा है।

आज महिलाएं पूरी दुनिया में सैन्य क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। अगर कोई महिला अपनी मर्जी से, तमाम जोखिम को जानकर, सेना में आती है, तो किसी को भी उसका पिता बनकर उसके लिए फैसला करने का अधिकार नहीं है। अगर महिलाएं तमाम जोखिम को समझकर और तमाम दिक्कतों का सामना करने के लिए तैयार होकर सेना में शामिल होती हैं, तो सेना में हर तरह की भूमिकाएं उनके लिए खोल देनी चाहिए। फ़ौज और मिलिट्री एक एकीकृत संस्था के रूप में काम करती है और महिलाओं व पुरुषों के साथ काम करने से राह आसान ही होगी। जब जवान के स्तर पर महिलाएँ शामिल होंगी तभी पुरुष जवानों का महिला अफ़सर पर विश्वास मजबूत होगा और सेना सशक्त हो कर उभरेगी।

रामकिशोर उपाध्याय | सलाहकार सतर्कता, कॉर्पो. कार्या.

दिल घोड़ा और दिमाग सवार

दिमाग तो दिल पर अपनी धौंस जमाता रहता है (और इसे हमेशा ही अपना गुलाम समझता रहा है) ,जैसे सरकार विपक्ष पर धौंस जमाती रहती है, परन्तु कभी –कभी दिल को हुक्म देने के बजाय अपने स्वार्थ की खातिर उससे प्यार-मुहब्बत की बातें भी करने लगता है। लेकिन दिमाग कभी भी दिल से जन्मजात रिश्तों का भी जरा लिहाज नहीं करता, शातिर जो ठहरा। अभी कल की बात है कि दिल और दिमाग की कुछ चटखारेदार बातें नेशनल मीडिया में लीक हो गयी, ठीक वैसे ही जैसे गीतिका और प्रिया नामक अभिनेत्रियों की व्हाट्सअप चैट वाइरल हुई। आखिर वाट्सएप के एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन होने के बावजूद उनकी चैट कैसे लीक हो गई? यह तो केजीबी और सी आई ए के लिये भी अभी तक रहस्य बना हुआ है। वैसे इस खबर के चलते ही दिल का सिर भन्ना गया। कोई कह रहा था कि बाजार में एक नया सॉफ्टवेयर आया है जो किसी की भी चैट क्या बंदे की पूरी आज़ादी को लीक ही नहीं करता बल्कि लील भी जाता है | कहने को तो किसी की बात को रिकॉर्ड और पब्लिक करना टेलीकॉम एक्ट का उल्लंघन है। मगर साहब मानता कौन है ? एक्ट फैक्ट बनते ही हैं तोड़ने के लिए जी। दिल इस अप्रत्याशित खुलासे से एकदम बौखला गया था। उसका इस व्यवस्था से विश्वास ही उठ गया। इसके चलते उसने हर किसी से बात करना बंद कर दिया था ।आँखें हालांकि दिल को हसीन नज़ारों का व्यंजन फिर भी परोस रही थी । जीभ खूब मिठाई और गोलगप्पों का स्वाद बता कर लुभा रही थी। उंगलियों बार-बार उलझी ज़ुल्फों संवार रहीं थी। जबकि दिल इसके उलट फिर किसी से बात न करने की धमकी दे रहा था। जब कई दिन तक बात नहीं बनी तो दिमाग परेशान हो गया। उसने बात करने की एक तरकीब निकाली । वैसे सोचने का हर ठेका तो दिमाग को सिंगल टेंडर के आधार पर सारी अन्य इंद्रियों के विरोध के बावजूद मिलता ही है ।दिमाग ने बात करने के लिए आंखों को पटाने का सोचा। दिमाग जानता था कि आँखें ही हर दिल में हलचल पैदा करती रहीं हैं । आंखें भी बड़ी मान-मनोव्वल के बाद तैयार हुई । एक दिन रात के अंधेरे में दिमाग आंखों के साथ दिल के द्वार पर पहुंचा मगर दो गज की दूरी पर खड़ा रहा ठीक वैसे ही कोरोना काल में आदमी आदमी से दूर खड़ा था। आंखों ने दिल के द्वार पर हल्के से दस्तक दी। दिल को लगा मानो उसकी प्रेमिका का मैसेज आया हो। दिल ने होले से खिड़की खोली तो द्वार पर आंखों को लगा पाया। आँखों के दिल पर बहुत से अहसान हैं। आखिर मजबूरन उन्हें द्वार से अंदर आने दिया । दिल ने अचानक इस तरह बिना बताए आने का सबब पूछा तो आंखों ने दिल की ओर आँख मारकर कहा, 'यार तुम आजकल बड़े गुस्से में हो। किसी से बात नहीं कर रहे हो | क्या बात है? तुम तो कभी नाराज नहीं होते। पहले जब मैं तुम्हारे मालिक की प्रेमिका का डांस करते हुए वीडियो दिखाती थी तो तुम ऐसे उछलने लगते थे जैसे मंत्री की कुर्सी मिल गयी हो । अब हमसे बात भी नहीं कर रहे हो। हम ही तुम्हारे असली वाले दोस्त हैं, बाकी तो बाद में आते हैं ।" दिल ने हँसकर कहा कि पिटाई भी तुम ही कराती हो। अचानक मुद्रा बदलते दिल ने सारा गुबार और भड़ास निकाल दी। दिल अपने दोनों ऑरिकल और वेंट्रिकल खोलकर दिमाग की धोखाधड़ी का पर्दाफाश वैसे ही करने लगा जैसे टाइम्स ऑफ मुंबई कोयला घोटाले के डीटेल बता रहा हो। यह अलग बात है कि कोर्ट ने मंत्री जी को बरी कर दिया है। दिल चीख –चीखकर कहने लगा कि उसने दिमाग की हर बात मानी है जैसे दिमाग ने कहा कि सुबह जैसे ही उठकर जमीन पर पैर रखो तो मैं जमीन को स्पर्श करो। फिर दोनों हथेलियों से चेहरे को स्पर्श करो या फजर की नमाज पढ़ो और अजान दो। माता-पिता के चरणस्पर्श करो या बोसा लो। हो सके तो पत्नी के भी चरणों

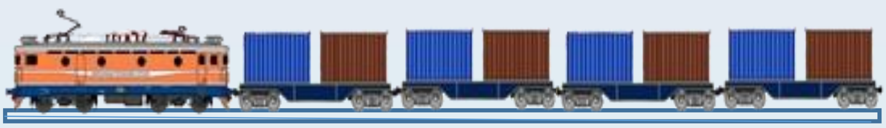

का चुम्बन करो और तो और बलात्कारी को 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते' वाला श्लोक भी सुनाया था ।भयंकर सर्दी में भी शीतल जल से स्नान करो। एक हाथ से भोजन करो । रोज किसी पूजास्थल जाओ। ।पूजा भी पूरे विधि-विधान से करो या पांचों वक्त नमाज पढ़ो। काम करो मन लगाकर। भाइयों- बहनों को प्यार करो। अतिथि का सम्मान करो । उसको गुड़ और ठंडा पानी पहले पिलाओ। पढ़ाई करो शास्त्रों की और नमन करो शस्त्रों को। नौकरी बात किसी से भूल कर भी मत करना । नौकरी नहीं भी मिले तो किसी सत्ता या व्यवस्था को दोषी मत बताना। बरसो से यही करता आया हूँ, बहन। शाकाहारी बनो । बीफ तो छूना भी मत और पोर्क का नाम मत लेना। फिल्में तो बिल्कुल मत देखना, इनसे चारित्रिकपतन होता है। इनके हीरो तो लफंगे हैं। फिल्मी हीरोइनें तो कुलटा होती हैं। (क्षमा सहित) असली हीरो हमारे कुर्सीधारी अरस्तू ,सुकरात या विवेकानन्द की तरह चिंतक और विचारक हैं दूसरे की स्त्री की ओर मत देखना। सुबह-दोपहर और शाम प्रभु का नाम जपते रहना। इनसब बातों को मेरे मालिक ने मुझसे (दिल से) लगा लिया और मेरे आदेशों के अनुसार काम करने लगा। इन सब क्रियाओं में मेरे मालिक का बहुत टाइम खपने लगा और उसका धंधा भी चौपट होने लगा। मालिक इतना भलामानुस हो गया कि उसकी गर्लफ्रेंड नाराज होकर भाग गयी । शाम को क्लब जाना छूट गया | दोस्तों की संगत न रही तो जिन्दगी में रंगत भी न रही ।बच्चे आज्ञा मानने के बजाय हुक्म चलाने लगे। सरकार को टैक्स पूरा जमा करने लगा। लॉकडाउन में नौकरों को पूरा वेतन देने लगा। दिमाग ने धरती पर इतना स्वर्ग ला दिया कि मेरा मालिक तो सन्यासी तो कभी दरवेश बनने की सोचने लगा । यह सब जानकार उसकी पत्नी घबरा गई | यह सब मैंने एक दिन चैट में दिमाग को बता दिया। एक दिन दिमाग मुझे कहने लगा कि यार दिल तुम निरंतर काम करते-करते थक जाते हो थोड़ी सी मारिजुआना ले लिया करो या गांजे के दो कश मार लिया करो। यार तीन ग्राम तक लेने से तो सरकार भी मना नहीं करती। मैंने लेने क्या उसकी तरफ देखने से भी साफ इंकार कर दिया आँखों ! तुम्हें तो पता है कि ड्रग लेने की छोड़िए यदि कोई व्हाट्सप पर भी नशे के किसी पदार्थ का नाम भी पढ़ लेता तो नसीबन मुझे जेल में ठूस देती जैसे अभिनेत्री प्रिया ठूस दी तुम्हें क्रूज में हुए उस हीरो-पुत्र का केस तो याद है न? बाप ने सारे घोड़े खोल दिये तब जाकर जमानत मिली। मगर इस विश्वासघाती दिमाग ने मेरी चैट को एक हैकर को बुलाकर लीक करा दिया। इससे मेरे मालिक की बैंड बज गयी। यह सुनकर दिमाग जो अभी दरवाजे के पीछे खड़ा था सामने आ गया और कहने लगा, 'दोस्त नाराज मत हो। मेरा मकसद सिर्फ यह बताने का था कि तू "दिल" है और तेरी अति संवेदनशीलता देश ,समाज और राजनीति के लिए बहुत घातक है। भाई ,मैंने तुझसे कब कहा कि मेरी सब बातों का अक्षरशः पालन करना। यार अब मेरे रोम –रोम में पालिटिक्स घुस गयी है। बाकी जो मैंने तुम्हें समय-समय पर बताया वो सारा ज्ञान व्हाट्सप विश्वविद्यालय की ऑनलाइन क्लासेस में फ्री में पढ़ाया जा रहा है। जहां तक मारिजुआना लेने की बात है तुमने उसको ध्यान से नहीं सुना। मैं तो मुर्दे वाले आसन यानि थकान दूर करने के लिए शवासन की बात कर रहा था। इसलिए यार बुरा मत मान। अरे पगले दिल ! अगर तू दिल से यूं ही सोचता रहा तो दुनिया तुझे घोंचू बनाकर ही छोड़ेगी । बस,मेरी ओर देख। " दिमाग का यह प्रवचन सुनकर एक बार तो दिल की आंखें बंद हो गयी थी, परन्तु थोड़ी देर बाद दिमाग के इस शातिराना बयान को सुनकर मजे से रही आँखों की भी आँख खुल गयी थी और वे पास में हुए एक युवती के साथ हुये बलात्कार और हत्या के दृश्य बतौर सबूत सहेजकर मीडिया को रिपोर्ट करने जाने लगी। दिल तो आखिर दिल ही ठहरा फिर से दिमाग का घोड़ा बन गया और दिमाग उस पर सवारी करने लगा।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी हिमाचल से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है।

-राहुल सांकृत्यायन

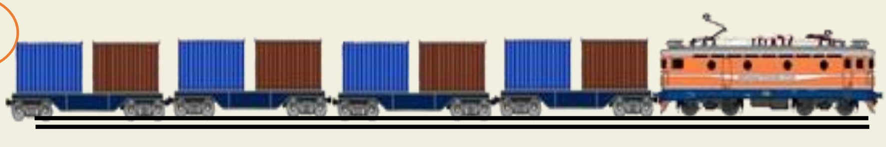

सौरभ कुमार राय | कनिष्ठ कार्य./ संकेत एवं दूरसंचार

विश्व पर्यावरण दिवस :मात्र एक दिवसीय प्रोत्साहन !

'विश्व पर्यावरण दिवस' 05 जून को भारत के साथ-साथ विश्व में लगभग 100 से अधिक देशों ने मनाया। ज्ञातत्व है कि "स्टॉकहोम मानव पर्यावरण सम्मेलन" के उद्घाटन पर 1972 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा इस दिवस की घोषणा हुई। एतद् 1973 से प्रतिवर्ष 5 जून के दिन 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया जाता है। ये बड़े हर्ष और खुशी का विषय है कि इस मुद्दे पर विश्व भर के लगभग 100 से अधिक देश सम्मिलित होकर पर्यावरण के नकारात्मक प्रभावों को रोकने के लिए प्रोत्साहन स्वरूप पर्यावरण दिवस के रूप में मनाते हैं।

परन्तु चिंता का विषय है कि यह गंभीर तथा बृहद मुद्दा केवल एक दिवसीय प्रोत्साहन मात्र बनकर रह जाता है। गौरतलब है कि 1972 से 2022 में इस दिवस को 50 वर्ष पूरे हो गए हैं जहाँ 50 वर्ष किसी भी उद्देश्य पूर्ति के लिए कम नहीं है वहीं पर्यावरण जैसे गंभीर मुद्दे और भी गंभीर हो गए हैं नदियां, पर्वत, पहाड़, वायु, मृदा आदि की दशा बद से बदतर हो रही है।

हालांकि इस संदर्भ पर सरकार ने कुछ कदम उठाए हैं व इससे संबंधित नियम कानून बनाए हैं यथा -

१. जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम – 1974
२. जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम – 1974

३. वन (संरक्षण) अधिनियम – 1980
४. वायु (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम – 1981
५.पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम – 1986
६. जैविक विविधता अधिनियम – 2002

आदि विभिन्न कानून सरकार द्वारा समय-समय पर बनाए गए हैं। वैसे तो पर्यावरण के अभिन्न अंग होने के नाते हम मनुष्यों की भी इसके प्रति नैतिक रख-रखाव, सुरक्षा एवं संरक्षण की जिम्मेदारी बनती है जिसके प्रति हमने मुंह फेर लिया है और प्रदूषण संबंधी मामलों में दूसरों को जिम्मेदार ठहरा कर अपनी नैतिक जिम्मेदारी से पीछे हट जाते हैं।

वैश्विक परिदृश्य पर रूस-यूक्रेन जैसे-जैसे 'न्यू वर्ल्ड वॉर' की ओर बढ़ रहा है वहीं दूसरी तरफ कोरोना महामारी से मानवीय सभ्यता का युद्ध अभी भी जारी है निश्चित रूप से दोनों का ही शांतिपूर्ण ढंग से सामना करना वैश्विक चुनौतियां हैं। किंतु; दोनों ही मुद्दों के बीच हमें पर्यावरण के प्रति किए गए *'1972 के पृथ्वी सम्मेलन'* के वादे को भी पुनर्मूल्यांकित करने की आवश्यकता है, कि आखिर हमने अब तक क्या पाया और क्या खोया है ?

अभी हाल ही में ग्लासगो में आयोजित जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के फ्रेमवर्क COP-26 पर्यावरण पर किए गए सबसे बेहतर प्रयासों में से एक रहा है, जहाँ दुनिया के अनेक देशों में इलेक्ट्रिक वाहनों, हरित ऊर्जाओं, कोयले के प्रयोग को समाप्त करने हरित परियोजनाओं पर खर्च को बढ़ावा देने तथा सशक्त जीवनशैली को अपनाने पर प्रतिबद्धता जताई है, वहीं भारत ने भी दुनिया को पंचामृत, जलवायु न्याय, LIFE(Life for Environment) अभियान के जरिए अपने वैश्विक कर्तव्यों को बड़ा किया है।

पंचामृत के माध्यम से हमने 2070 तक के नेट न्यूट्रिलिटी का लक्ष्य रखा है, नवीकरणीय ऊर्जा के अधिकतम प्रयोग की बात

की है, परंतु यह अब इतना भी आसान नहीं होगा, IPCC के अनेक रिपोर्ट में पर्यावरण की जो सूरत हमारे समक्ष रखी है, वह चिंता जनक है, जिसके अनुसार यदि WP76 में किए गए वादे को पूरा भी कर लिया जाता है तब भी वैश्विक तापमान 2°C बढ़ जायेगा, जिसका भयावह परिणाम समुद्र का बढ़ता जल स्तर, शरणार्थी समस्या, सूखा-बाढ़, बनाग्नि, जैव विविधता, विलुप्तिकरण, अकाल, अतिवृष्टि के रूप में सामने आएगा । कुछ वैज्ञानिकों ने तो यह आशंका व्यक्त की है, कोरोना जैसे महामारियों के पीछे की पर्यावरणीय दोहन जिम्मेदार है अगर इस तथ्य में सच्चाई है तो निश्चित रूप से हमें कोरोना जैसी एक नई जंग के लिए तैयार रहना होगा । प्रसिद्ध अमेरिकी कहावत है कि "हमें यह ग्रह अपने पूर्वजों से अधिकार में नहीं मिला, हमें यह अपने बच्चों से उधार में मिला है" इसलिए जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने हमें एक शांत, शुद्ध, प्रदूषण रहित पर्यावरण हमें सौंपा था हमें उसी रूप में अपने आने वाली पीढ़ी को वापस करना है, इस हेतु केवल सरकार के स्तर पर कार्य करने से लक्ष्य प्राप्ति नहीं होगा । हमें समाज एवं व्यक्तिगत स्तर पर भी काम करना होगा । सामाजिक स्तर पर पॉलीथीन, प्लास्टिक जैसे पर्यावरण विरोधी सामग्री पर जन अभियान चलाने की आवश्यकता है, इस संबंध में देश के कई शहरों ने अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है 'इंदौर', 'भोपाल' जैसे शहरों ने स्वच्छता सर्वेक्षण में लगातार उच्चतम स्थान लाकर, इसे फलीभूत किया है । सामाजिक वानिकी को बढ़ावा देना, नदियों को स्वच्छ रखना, पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करना, पर्यावरण संबंधी नियमों का पालन करना (विशेषकर भवन निर्माण में), जल संरक्षण कार्यक्रम में भाग लेने जैसे उपाय पर्यावरण को स्वच्छ रखने में मदद कर सकते हैं वही व्यक्तिगत स्तर पर 'जन्मदिवस पर एक पेड़' 'विवाह इत्यादि अवसरों पर वृक्षारोपण करना', 'ऊर्जा मितव्ययी सतत् जीवनशैली' अपनाकर हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैं इसके लिए हमारा पड़ोसी देश 'भूटान' पथप्रदर्शक बन सकता है ।

संपूर्ण चर्चा का सार यही है पर्यावरण दिवस मनाने का औचित्य तभी है जब हम अपने जीवन में कुछ पर्यावरणीय मूल्यों को जोड़ें और अपने जीवन तथा आसपास के वातावरण में बदलाव लाएं ताकि हम आने वाली पर्यावरण त्रासदी को रोक सके ।

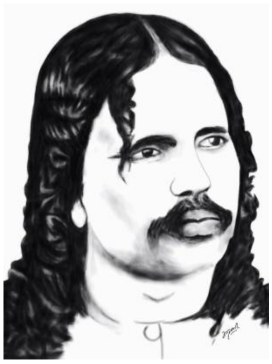

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को सूल

-भारतेंदु हरिश्चंद्र

सचिन मदान | कार्यकारी / विद्युत, कॉर्पो. कार्या.

बढ़ती सभ्यता सिकुड़ते वन

वन हमारी प्रकृति का सबसे सुंदर अंग है। मानव जाति के लिए प्रकृति का सबसे सुंदर उपहार भी वन और वृक्ष ही हैं। दुनिया के हर देश की समृद्धि का उसके वनों से गहरा संबंध होता है। क्योंकि वहाँ की जलवायु , पर्यावरण और जनजीवन वनों पर ही निर्भर करते है। प्रकृति ने पानी और जंगलों के रूप में मनुष्यों के लिए दो अद्वितीय पुरस्कार प्रदान किए हैं, जिनके समर्थन ने दुनिया में कई सभ्यताओं का विकास किया है, लेकिन उद्यमिता के कारण इन दोनों उपहारों को तेजी से नष्ट किया जा रहा है।

जल संकट पूरी दुनिया में स्पष्ट रूप से महसूस किया जाता है और कई विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि यदि अगला विश्व युद्ध होगा, तो यह पानी के अभाव की वजह से होगा। जब मनुष्य जंगल में रहते हैं और खेती शुरू करते हैं, तो वह सभ्यता के विस्तार की शुरुआत है। लेकिन विकास के नाम पर आज भी जंगल कि कटाई का सिलसिला जारी है। इसलिए यह बात याद रखनी बहुत जरूरी है की, अगर जंगल नहीं रहे तो हमारी सभ्यता का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। लगातार घट रहे वन्य क्षेत्र से न सिर्फ हम पर्यावरण को खतरे में डाल रहे हैं बल्कि जीवन की लाइफ लाइन को छोटा करने पर तुले हैं। स्वार्थ के कारण वृक्षों का कटाव जीवन चक्र को ही तहस-नहस कर सकता है। पर्यावरण में असंतुलन और लगातार विलुप्त होती प्रजातियां संकेत के रूप में इस ओर इशारा कर रही हैं। ऐसे में इसके प्रति चेतना और महत्वपूर्ण हो जाती है।

विशेषज्ञों का कहना है कि, दुनिया भर में जंगल अब बहुत तेजी से कम होते जा रहे हैं। पूरी दुनिया का 10वां हिस्सा केवल पिछले 20 वर्षों में समाप्त हो गया। यह गिरावट लगभग 9.6 प्रतिशत है। जंगल की यह कटाई और छँटाई कृषि या बागवानी के लिए नहीं बल्कि नए शहरों को स्थापित करने के लिए की जा रही है। वर्तमान में शेष विश्व में केवल 307 मिलियन वर्ग किलोमीटर वन भूमि शेष है, वन अपशिष्ट के मामले में, भारत भी दुनिया भर से कोई अपवाद नहीं है। दुनिया के अन्य हिस्सों में जितनी तेजी से वनों का सफाया किया गया है, उससे कहीं ज्यादा हमारे देश में जंगल कम हो रहे हैं। हमें प्रकृति का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि हालांकि

कुल विश्व भूमि का केवल 4 प्रतिशत पेड़ों से ढके हुए हैं, फिर भी देश में 7.83 मिलियन हेक्टेयर जंगलों और पेड़ों से ढके हुए हैं। एक समय में, भारत में 50 प्रतिशत से अधिक जंगल थे, जो धीरे-धीरे 24 प्रतिशत के पास रह गया है । वास्तव में,

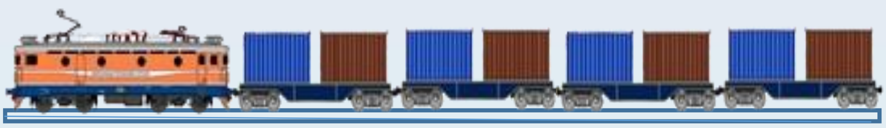

औद्योगिकीकरण और विकास के नाम पर जंगलों को नष्ट करने का काम, जो हमारे देश में किया गया है, दुनिया में कहीं और मिलना मुश्किल है। विकास की ओर से, वन लूटने वाली परियोजनाओं को बड़ी राज्य कंपनियों के साथ-साथ भारतीय सरकार के रूप में भी देखा जाता है। पिछले कुछ वर्षों में, टिकाऊ अवैध कटाई ने मानव जीवन को प्रभावित किया है। और असंतुलित मौसम चक्र ने जन्म भी लिया है। विकास के लिए बड़े बांध, आवासीय क्षेत्रों का विस्तार और अन्य औद्योगिक परियोजनाएं ने जंगल को नष्ट कर दिया है। जंगल और खनन माफिया की गतिविधियों ने जंगल को भी नष्ट कर दिया है। लागू कानून के अलावा, जंगल में रहने वाले वन भूमि और जनजातीय अधिकारों को प्राप्त करने की प्रवृत्ति में कोई कमी नहीं होती है। उन्हें अपनी भूमि को विस्थापित करके शहर में जाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। हम इंसान अपने थोड़े से स्वार्थ के कारण इन वनों को लगातार नष्ट करते जा रहे हैं। जिस कारण पूरी पृथ्वी से वन क्षेत्र लगातार घटते जा रहे हैं। इसका दुष्प्रभाव अब हमारे सामने आने लगा है। धरती का बढ़ता तापमान , कम होती बरसात , मौसम चक्र में बदलाव , जहरीली गैसों के दुष्प्रभाव से पृथ्वी के सुरक्षा कवच ओजोन स्तर का लगातार सिकुड़ते जाना इसके कुछ उदाहरण है। इसलिए दुनिया में अगर ग्लोबल वार्मिंग बढ़ती हैं, तो हम पूरी तरह से समाप्त हो सकते हैं। इसीलिए अब हमें इन वनों को संरक्षित करने की आवश्यकता हैं क्योंकि वनों को संरक्षित किए बिना पूरी मानव जाति या यूं कहें कि प्राणी मात्र का जीवन खतरे में पड़ जाएगा। तो गलत नहीं होगा।

अंचल पटेल पत्नी रोहित | कार्यकारी /परि. एवं व्य., अटेली

प्रेम और सृजन

प्रेम और सृजन मानवता के अनुराग हैं
जीवन दर्शन वर्ग में तुलसी के चिराग हैं
वात्सल्य रस की अभिव्यक्ति यह वीर रस
की गाथा है
भक्ति में मीरा, कबीर और रहीम की
परिभाषा है।

मानवता एक रस है, कल्पना की उड़ान है
पावनता, निर्मलता, उज्ज्वलता की
स्नेहसरा है।
जीवन की संघर्ष भरी मृत्तिका विभूति को
बखान है
विविध वर्ग की सरोज स्मृति में यह गीता
और कुरान है।

प्रयास है, उपयोग है, विपणन और संप्रेषण है
मानव से मानव की भिन्नता में एकता का संपूर्ण है
रीति है रिवाज है यह पर्वों का काव्यात्मक योग है
भावनाओं की विशिष्टताओं में यह विचारात्मक संयोग है।

प्रेममार्गी शाखा में यह साहित्य और संस्कृति की कहानी है
राजतंत्र से प्रजातंत्र तक मानवता की निशानी है
श्रृंगारपरक, समृद्ध, सुशोभित विविध धर्म की बाते हैं
संस्कारों का अटूट मिलन यह अनकही फरियादें हैं ।।

अलंकार है, नूतन पृवित्त, स्मृतियों का अवशेष है
दुलार है, ममता है, संघर्ष है विचारों का
अभिव्यक्ति इसकी सुरभित और सुंदर है
प्रेम और सौंदर्य मानवता का मंदिर है।।

सुरेश कुमार | सहा. प्रबं. / वित्त, कॉर्पो. कार्या.

महात्मा गांधी - 'मोहनदास से महात्मा गांधी तक का सफर'

यह किस्सा उस दौर का है, जब मोहनदास करमचंद गांधी (महात्मा गांधी) दक्षिण अफ्रीका से भारत आए थे। दक्षिण अफ्रीका (South Africa) में उनके आंदोलन की गूंज थी लेकिन भारत में वह अभी भी गांधी बापू नहीं थे। उनकी मोहनदास करमचंद गांधी से महात्मा गांधी व बापू तक का सफर अप्रैल 1917 से प्रारंभ हुआ, जिसका पहला स्टेशन बिहार का चंपारण था। चंपारण के एक किसान राजकुमार शुक्ल उनकी यह यात्रा शुरु कराई, जिसका निमित्त नील किसानों पर अंग्रेजों के अत्याचार का तीन कठिया कानून बना। साल 1915 में गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे। ब्रिटिश सरकार के अधीन भारत में उनकी दिलचस्पी देख उनके राजनीतिक गुरु गोपालकृष्ण गोखले ने उनमें भविष्य का बड़ा नेता देखा और उन्हें भारत भ्रमण की सलाह दी। वे समझते थे कि भारत को लेकर गांधी के किताबी में जमीनी समझ भी जरूरी है। साल 1916 के गांधी कांग्रेस के अधिवेशन के लिए लखनऊ पहुंचे थे। वहां चंपारण के किसान राजकुमार शुक्ल भी पहुंचे थे। राजकुमार शुक्ल ने गांधी को चंपारण के किसानों से मिलने का निवेदन किया। उन्होंने बताया कि चंपारण के किसानों पर तीनकठिया कानून के माध्यम से अंग्रेज किस तरह जुल्म कर रहे थे। अपनी आत्मकथा **'सत्य के प्रयोग' के 'नील के दाग'** वाले अध्याय में गांधी लिखते हैं कि लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन के पहले तक वे चंपारण का नाम तक नहीं जानते थे। वहां नील की खेती और इस कारण वहां के हजारों किसानों के कष्ट की भी कोई जानकारी नहीं थी। नेपाल सीमा से सटे बिहार के चंपारण में उस वक्त अंग्रेजों ने हर बीघे में तीन कट्ठे जमीन पर अंग्रेजों के लिए नील की अनिवार्य खेती का 'तिनकठिया कानून' लागू कर रखा था। बंगाल के अलावा यहीं नील की खेती होती थी। इसके बदले किसानों को कुछ नहीं मिलता था। इतना ही नहीं, किसानों पर कई दर्जन अलग-अलग कर भी लगाए गए थे। चंपारण के समृद्ध किसान राजकुमार शुक्ल इस शोषण के खिलाफ उठ खड़े हुए। इसके लिए अंग्रेजों ने उन्हें कई तरह से प्रताड़ित किया। वे चाहते थे कि गांधी जी यहां आकर अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ ने लोगों को एकजुट करें। गांधीजी 1917 में चंपारण आए और यहां सत्याग्रह और अहिंसा के अपने अस्त्र का भारत के चंपारण में प्रथम प्रयोग किया। 135 सालों से शोषित चंपारण के किसानों को गांधी जी के आंदोलन के बाद इस कर से मुक्ति मिली। यहां से गांधी जी का भारत की राजनीति में जोरदार आगाज हुआ। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि गांधी का बापू और महात्मा बनने के सफर चंपारण से ही शुरु हुआ। भारतीय रेल संग्रहालय में गांधी जी के जीवन पर आधारित मोहन से महात्मा तक के सफर को प्रदर्शनी के रूप में संजोया गया है। प्रदर्शनी का उद्देश्य भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में महात्मा गांधी और रेलवे के योगदान के प्रति लोगों को जागरूक करना है। यहां रेल के डिब्बे के अंदर सजी एक प्रदर्शनी मुख्य आकर्षण का केंद्र है, इसे तृतीय श्रेणी के डिब्बे के रूप में परिवर्तित किया गया है, जिसमें गांधी जी यात्रा किया करते थे। प्रदर्शनी में गांधी जी की रेल यात्रा के दौरान ली गई फोटो को दर्शाया गया है। इसके अलावा प्रदर्शनी में एक धरोहर टेलीफोन रखा हुआ है, जिसमें गांधी जी के आध्यात्मिक संदेश सुनाई पड़ते हैं। यहां गांधी जी की प्रतिकृतियां भी रखी गई है, जिसमें स्लीपर्स (लकड़ी एवं चमड़े की दोनों) लालटेन, राहेल (किताब), लकड़ी की थाली, पाथी, चरखा, चरखे का पूरा सेट जेब घड़ी, गांधी जी के सिद्धांतों को दर्शाते हुए तीन बंदर आदि शामिल है। सेल्फी स्पॉट के रूप में बनाई गई एक जगह पर गांधी जी की एक मूर्ति भी रखी गई है। स्वदेशी का प्रतीक चरखे से सूत कातते हुए गांधी जी की एक और मूर्ति दर्शाई गई है। 1927 में उनकी बोट मेल की यात्रा को भी यहां दर्शाया गया है। यहां एक ऑडियो विजुअल भी लगातार चलता रहता है, जिसमें गांधी जी से जुड़ी क्लिपिंग दिखाई जा रही है।

आशिफ आलम | कार्यकारी/समन्वय, कॉर्पा.कार्या.

डीएफसीसी- नवाचार, समर्पण और प्रौद्योगिकी के माध्यम से माल ढुलाई

डीएफसीसीआईएल को 2006 में एक सरकारी कंपनी विशेष उद्देश्य उद्यम के रूप में शामिल किया गया था। डीएफसीसीआईएल के द्वारा दो कोरीडोर का निर्माण किया जा रहा है। पहला कोरीडोर जिसकी लंबाई 1857 किमी. है, लुधियाना पंजाब को पश्चिम बंगाल के दानकुनी से जोड़ता है और दूसरा कोरीडोर पश्चिमी डीएफसी है जिसकी लंबाई 1506 किमी. है जो महाराष्ट्र में जेएनपीटी को उत्तर प्रदेश से दादरी में जोड़ता है। पूर्वी डीएफसी की नीवं सितंबर 2006 में लुधियाना में रखी गई थी और पश्चिमी डीएफसी की नींव अक्टूबर 2006 में मुंबई में रखी गई थी। डीएफसीसीआईएल 9 राज्यों के माध्यम से मार्गों का नेटवर्क ट्रैक करता है। पूरे 3381 किमी. डीएफसी नेटवर्क में से 1097 किमी. (33%) उत्तर प्रदेश से होकर गुजरता है जो एक राज्य में सबसे लंबी है। डीएफसीसीसीआईएल रेल मंत्रालय की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण रेल परियोजनाओं में से एक है, जिसका निर्माण एक लाख करोड़ से अधिक के वित्त पोषण से किया जा रहा है। डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर के पूरी तरह से चालू होने के बाद देश की अर्थव्यवस्था के विकास का वाहक बनने की उम्मीद है।

डीएफसीसी के निर्माण की बात करें तो इसे माल ढुलाई के लिए फ्रेट कोरीडोर के रूप में बनाया जा रहा है। इस अवधारणा का मुख्य कारण मौजूदा ट्रैक मार्ग की अत्यधिक संतृप्ति और रेलवे द्वारा वहन किए जाने वाले माल के हिस्से में लगातार गिरावट थी। माल ढुलाई में रेलवे की हिस्सेदारी 1950-51 में 83 प्रतिशत से घटकर 2011-12 में 35 प्रतिशत हो गई। इतना ही नहीं, इन गलियारों के साथ राष्ट्रीय राजमार्गों में सड़क नेटवर्क का 0.5 प्रतिशत शामिल है, जो सड़क माल का लगभग 40 प्रतिशत वहन करता है।

पूर्वी डीएफसी के सोन ब्रिज (बिहार) में पाँच फ्रेट ट्रेन (2 डीएफसी पर 3 भारतीय रेलवे ट्रैक) पर

डीएफसीसी परियोजना के क्रियान्वयन में देरी का मुख्य कारण भूमि अधिग्रहण और जमीन का भौतिक कब्जा रहा है। डीएफसीसी ने पश्चिमी डीएफसी के लिए 6000 हेक्टेयर भूमि और पूर्वी कोरीडोर के लिए 5800 हेक्टेयर भूमि का अधिग्रहण किया है जिसमें पीपीपी (सार्वजनिक निजी भागीदारी) का भूमि अधिग्रहण शामिल है जिसमें 1208 हेक्टेयर भूमि का अधिग्रहण किया जा रहा है। भूमि अधिग्रहण में डीएफसी को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। विभिन्न प्रकार की भूमि का अधिग्रहण किया गया है जिसमें वन भूमि का अधिग्रहण और हस्तांतरण बहुत बोझिल था, जिसकी मंजूरी को भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। भूमि अधिग्रहण से संबंधित अदालती मामलों ने भी प्रगति को प्रभावित किया है। अन्य प्रमुख मुद्दों में प्रमुख ठेकेदारों के साथ चलनिधि के मुद्दे शामिल हैं, जिसके परिणामस्वरूप धीमी प्रगति हुई, आरओबी के निर्माण के लिए अनुबंधों को अंतिम रूप देना और आरओबी के दृष्टिकोण के लिए राज्य सरकार रा

भूमि अधिग्रहण परियोजना की प्रगति पर आपत्ति जताई गई है। राज्य सरकार और क्षेत्रीय रेलवे से भी कई मामले परियोजना के लिए सवाल उठा रहे थे, जिनका समय-समय पर आपसी समन्वय से निदान किया गया।

वर्तमान में मालगाड़ी डीएफसी के 1339 किमी ट्रैक पर चल रही है जिसमें पूर्वी कॉरिडोर के 618 किमी और पश्चिमी डीएफसी के 721 किमी. शामिल हैं। ईस्टर्न कॉरिडोर में 19 हजार से ज्यादा और वेस्टर्न कॉरिडोर में 20 हजार से ज्यादा मालगाड़ियों का संचालन किया गया है. वेस्टर्न कॉरिडोर में रेवाड़ी से मेहसाणा के बीच मालगाड़ियों का संचालन किया जा रहा है। वेस्टर्न कॉरिडोर के इस खंड में ट्रक ऑन ट्रेन (टीओटी) की सुविधा है जो पर्यावरण के अनुकूल तरीके से ईंधन की बचत के लिए है जो कार्बन क्रेडिट की दिशा में एक अनुकरणीय कदम है अब तक 238 टीओटी यात्राएं पूरी हो चुकी हैं। जिससे राष्ट्रीय राजमार्गों पर दबाव कम हुआ है और पारंपरिक ईंधन की खपत में उल्लेखनीय कमी के साथ-साथ यातायात की भीड़ का दबाव भी कम हुआ है।

चूंकि डीएफसी भारतीय रेलवे की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए प्रमुख आश्वासनों में से एक है, इसलिए पूरे देश की आशा है। डीएफसी नवाचार, समर्पण और प्रौद्योगिकी के माध्यम से माल परिवहन में क्रांति ला सकता है। डीएफसी के दोनों कॉरिडोर भारत के 09 राज्यों के कोयला, अयस्क, खाद्य पदार्थ, सीमेंट, नमक, रासायनिक उर्वरक, लोहा, स्टील, पेट्रोलियम उत्पाद और गैस कंटेनर जैसे विभिन्न खनिजों का परिवहन करेंगे। सड़क यातायात का डीएफसी ट्रैक पर स्थानांतरण एक प्रमुख कार्य होगा। इस क्षेत्र में एक प्रमुख कदम डीएफसी की टीओटी सेवा है। डीएफसी स्टेशनों के साथ मल्टी मोडल लॉजिस्टिक्स पार्क (एमएमएलपी), फ्रेट टर्मिनल स्थापित करके ग्राहकों को माल ढुलाई की गतिशीलता के लिए विश्वसनीय, सुरक्षित और किफायती समाधान प्रदान कर सकता है। डीएफसी के सामने चुनौतियों में रेलवे को अपनी परिवहन आवश्यकताओं के लिए सबसे अधिक पर्यावरण के अनुकूल साधन के रूप में अपनाने के लिए उपयोगकर्ताओं को प्रोत्साहित करके पारिस्थितिक स्थिरता प्रदान करना शामिल है।

न्यू ट्रैक कंस्ट्रैक्शन (एनटीसी) मशीन

डीएफसी ने माल परिवहन क्षेत्र में कई नवाचार किए हैं। डेडीकेटेड फ्रेट इंफॉर्मेशन सिस्टम (DFIS) जो कि डीएफसी का अपना नवाचार है, जो मौजूदा ट्रेन की स्थिति, ऑपरेशन डैशबोर्ड, ट्रेन विजिबिलिटी मॉड्यूल, फोरकास्ट एंट्री,

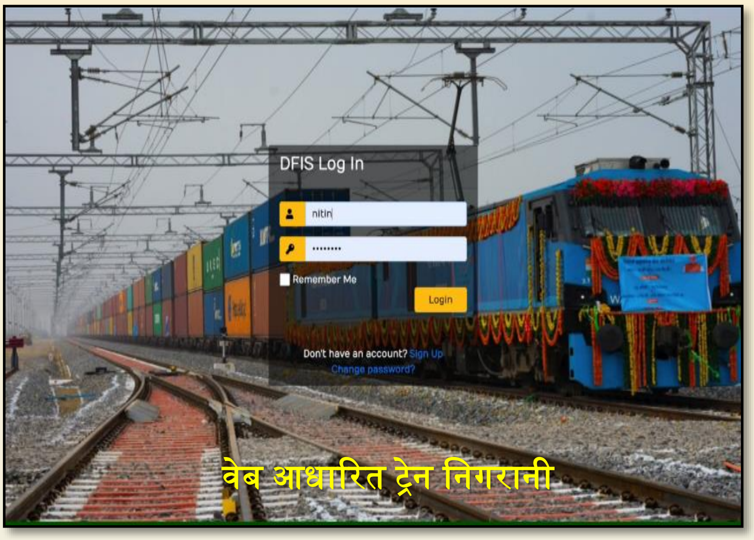

वेब आधारित ट्रेन निगरानी

फोरकास्ट रिपोर्ट, स्टैबलिंग रिपोर्ट, इंटरचेंज डिटेंशन, ट्रेन सारांश, एनर्जी रिपोर्ट को आसानी से ट्रैक करने में सक्षम है। दोनों कोरीडोर की प्रगति की बारीकी से निगरानी के लिए, डीएफसी ने MR डैशबोर्ड का उपयोग किया जाता है।

डीएफसी ने उन्नत मशीनीकृत निर्माण दृष्टिकोण का इस्तेमाल किया। अत्यधिक यंत्रीकृत साधनों का उपयोग रेल और स्लीपरों को संभालने और ट्रैक को जोड़ने के लिए स्वचालित न्यू ट्रैक कंस्ट्रक्शन (एनटीसी)

मशीन का उपयोग किया है ताकि हैंडलिंग और ट्रैक बिछाने में ट्रैक घटकों को होने वाले नुकसान को कम किया जा सके। एनटीसी मशीन मैनुअल ट्रैक लिंकिंग की तुलना में बेहतर ट्रैक ज्यामिति के साथ ट्रैक लिंकिंग (प्रति दिन 3 टी-किमी तक) की उच्च प्रगति देती है और अन्य प्रमुख में बरमा के माध्यम से नींव, मशीन द्वारा मास्टर इरेक्शन और रेल / सड़क पर लगे कंकरीट मिक्सिंग प्लांट द्वारा ग्राउटिंग शामिल हैं। वाहन, कंडक्टर (संपर्क और कैटेनरी तार) रेल द्वारा स्ट्रिंगिंग ट्विन कंडक्टर स्ट्रिंग मशीन, मॉड्यूलर कैंटिलीवर, रेल/रोड माउंटेड ट्रॉलियों द्वारा ड्रॉपरिंग और क्लिपिंग।

प्रयागराज में स्टेट ऑफ आर्ट ऑपरेशनल कंट्रोल सेंटर (OCC) 90 मीटर की वीडियो वॉल का उपयोग करके ट्रेन संचालन और बिजली आपूर्ति प्रणाली सहित रेल प्रणाली की निगरानी और नियंत्रण के लिए चालू है, जो एशिया में सबसे बड़ी है। यह एक एकीकृत ट्रेन प्रबंधन प्रणाली, और पर्यवेक्षी, नियंत्रण और डेटा अधिग्रहण प्रणाली (स्काडा) से एकीकृत है।

डीएफसी के दोनों कोरीडोर वाणिज्यिक उद्घाटन के बाद माल परिवहन क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव की उम्मीद है। दोनों कोरीडोर (पूर्वी-पश्चिमी) भारतीय रेल के समानांतर रेलवे व्यापार के माल ढुलाई में वृद्धि के अलावा सड़क

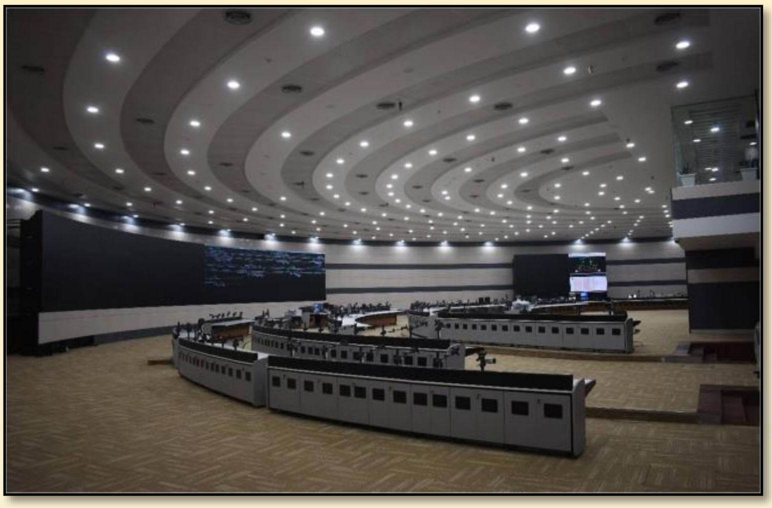

यातायात भी लाएंगे। जून, 2023 तक पूर्वी कोरीडोर और मार्च, 2024 तक पश्चिमी कोरीडोर के पूरी तरह से कमीशन (चालू) होने की उम्मीद है।

सोनिका वर्णवाल
पत्नी मुकेश कुमार
उ.मु. राभा. अधि. एवं
उप परि.प्रबं. सं. व दू., कोलकाता

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा ।
आज नहीं तो , कल निकलेगा ।
अर्जुन के तीर सा सध,
मरुस्थल से भी जल निकलेगा ।।

मेहनत कर, पौधों को पानी दे,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा ।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा ।

ज़िंदा रख, दिल में उम्मीदों को,
गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा ।
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की,
जो है आज थमा-थमा सा, चल निकलेगा ।।

' एक हिंदी ही राष्ट्रभाषा की जगह ले सकती है,
कोई दूसरी भाषा नहीं "
- महात्मा गांधी

विजय कुमार तिवारी | कनिष्ठ प्रबंधक, सेमू ,कॉर्पो.कार्या.

क्रिप्टोकरेंसी- एक आभासी मुद्रा

क्रिप्टोकरेंसी या क्रिप्टो, क्रिप्टोग्राफ़ी द्वारा सुरक्षित एक आभासी मुद्रा है। इसे एक्सचेंज के माध्यम के रूप में काम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जहां व्यक्तिगत स्वामित्व रिकॉर्ड कम्प्यूटरीकृत डेटाबेस में संग्रहीत किए जाते हैं।

क्रिप्टोकरेंसी की परिभाषित विशेषता यह है कि वे किसी भी देश की सरकारी एजेंसी द्वारा जारी नहीं की जाती हैं, जिससे उन्हें किसी भी हस्तक्षेप और हेरफेर के खिलाफ प्रतिरक्षा मिलती है।

भारत में क्रिप्टोकरेंसी के संबंध में नवीनतम विकास: आधिकारिक डिजिटल मुद्रा विधेयक 2021 का क्रिप्टोकरेंसी और विनियमन संसद के शीतकालीन सत्र में पेश किए जाने की संभावना है। यह एक बिल है जो भारत में क्रिप्टोकरेंसी को रेगुलेट करेगा। 7 दिसंबर 2021 को, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जोर देकर कहा कि प्रस्तावित सेंट्रल बैंक डिजिटल मुद्रा भारत में क्रिप्टोकरेंसी को बढ़ावा नहीं देगी।

क्रिप्टोकरेंसी की परिभाषा : सरल शब्दों में, क्रिप्टोकरेंसी एक साझा नेटवर्क में कई कंप्यूटरों के माध्यम से फैली एक डिजीटल संपत्ति है। इस नेटवर्क की विकेंद्रीकृत प्रकृति उन्हें सरकारी नियामक निकायों के किसी भी नियंत्रण से बचाती है।

शब्द "क्रिप्टोकरेंसी" अपने आप में नेटवर्क को सुरक्षित करने के लिए उपयोग की जाने वाली एन्क्रिप्शन (encryption) तकनीकों से ली गई है। कंप्यूटर विशेषज्ञों के अनुसार, क्रिप्टोकरेंसी की श्रेणी में आने वाले किसी भी सिस्टम को निम्नलिखित आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए:

किसी भी केंद्रीकृत प्राधिकरण की अनुपस्थिति और वितरित नेटवर्क के माध्यम से बनाए रखा जाता है

सिस्टम क्रिप्टोकरेंसी इकाइयों के रिकॉर्ड रखता है और उनका मालिक कौन है सिस्टम तय करता है कि क्या नई इकाइयाँ बनाई जा सकती हैं और अगर ऐसा होता है, तो मूल और स्वामित्व की शर्तों का फैसला किया जाता है

क्रिप्टोकरेंसी इकाइयों का स्वामित्व विशेष रूप से क्रिप्टोग्राफ़िक रूप से साबित किया जा सकता है। सिस्टम लेनदेन करने की अनुमति देता है जिसमें क्रिप्टोग्राफिक इकाइयों का स्वामित्व बदल जाता है।

क्रिप्टोकरेंसी के प्रकार : पहले प्रकार की क्रिप्टो करेंसी बिटकॉइन थी, जो आज तक सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली, मूल्यवान और लोकप्रिय बनी हुई है। बिटकॉइन के साथ, अलग-अलग डिग्री के कार्यों और विशिष्टताओं के साथ अन्य वैकल्पिक क्रिप्टोकरेंसी बनाई गई हैं। कुछ बिटकॉइन की पुनरावृत्ति हैं जबकि अन्य को जमीन से बनाया गया है

बिटकॉइन को 2009 में एक व्यक्ति या समूह द्वारा लॉन्च किया गया था, जिसे उपनाम (pseudonym) "सातोशी नाकामोटो" के नाम से जाना जाता है। मार्च 2021 तक, लगभग 927 बिलियन डॉलर के कुल मार्केट कैप के साथ 18.6 मिलियन से अधिक बिटकॉइन प्रचलन में थे।

बिटकॉइन की सफलता के परिणामस्वरूप बनाई गई प्रतिस्पर्धी क्रिप्टोकरेंसी को altcoins के रूप में जाना जाता है। कुछ प्रसिद्ध altcoins इस प्रकार हैं:

लाइटकॉइन (Litecoin), 2) पीरकॉइन (Peercoin), 3) नेमकोइन (Namecoin), 4) एथेरियम (Ethereum), 5) कार्डाना (Cardana)

आज, अस्तित्व में मौजूद सभी क्रिप्टोकरेंसी का कुल मूल्य लगभग $1.5 ट्रिलियन है—बिटकॉइन

वर्तमान में कुल मूल्य के 60% से अधिक का प्रतिनिधित्व करता है। **क्रिप्टोकरेंसी के फायदे और नुकसान**

क्रिप्टोकरेंसी के निम्नलिखित फायदे हैं क्रेडिट/डेबिट कार्ड या बैंक जैसे तीसरे पक्ष की आवश्यकता के बिना दो पक्षों के बीच फंड ट्रांसफर आसान होगा

यह अन्य ऑनलाइन लेनदेन की तुलना में एक सस्ता विकल्प है

भुगतान सुरक्षित और सुरक्षित हैं और गुमनामी का एक अभूतपूर्व स्तर प्रदान करते हैं

आधुनिक क्रिप्टोकरेंसी सिस्टम एक उपयोगकर्ता "वॉलेट" या खाता पते के साथ आते हैं जो केवल एक सार्वजनिक कुंजी और समुद्री डाकू कुंजी द्वारा ही सुलभ है। निजी कुंजी केवल बटुए के स्वामी को ही पता होती है

न्यूनतम प्रोसेसिंग शुल्क के साथ फंड ट्रांसफर पूरा किया जाता है।

क्रिप्टोकरेंसी के निम्नलिखित नुकसान हैं।

अनियमित बाजार: सबसे पहले, क्रिप्टोकरेंसी का सबसे बड़ा लाभ यह है कि वे एक केंद्रीय बैंक के अस्तित्व के बिना कार्य कर सकते हैं जो उनकी गतिविधियों का समन्वय करता है। हालांकि, यह इन निवेशों का सबसे बड़ा नुकसान भी है। सबसे पहले, चूंकि कोई केंद्रीय बैंक या एक्सचेंज नहीं है जो सभी लेनदेन में मध्यस्थता करता है, उनमें से अधिकतर अपरिवर्तनीय हैं। दूसरे, चूंकि कोई केंद्रीकृत पार्टी या सरकार नहीं है जो इसके मूल्य को लागू करती है। सिक्के का मूल्य विशुद्ध रूप से उस मूल्य से निर्धारित होता है जो सहकर्मी निवेशक उस पर रखते हैं। इसलिए, यदि किसी सुरक्षा घटना के कारण निवेश समुदाय किसी विशेष क्रिप्टोकरेंसी में रुचि खो देता है, तो उस मुद्रा की इकाइयाँ रातोंरात बेकार हो सकती हैं!

अस्थिरता: अतीत की तुलना में क्रिप्टोकरेंसी अभी भी एक लंबा सफर तय कर चुकी है। हालांकि, वे अभी भी एक बहुत ही नवजात तकनीक हैं। इसका मतलब है कि बाजार अभी भी बेहद अस्थिर हैं। कुछ ही महीनों में क्रिप्टोकरेंसी का मूल्य दोगुना हो जाना आम बात है। समान अवधि के भीतर क्रिप्टोकरेंसी का मूल्य आधा होना भी आम है। इसलिए, फिलहाल क्रिप्टोकरेंसी का उपयोग उन निवेशकों द्वारा किया जाता है जो अटकलों या अस्थिरता से डरते नहीं हैं। जो निवेशक अपने निवेश के लिए मूल्य के एक स्थिर स्रोत की लाश कर रहे हैं, वे क्रिप्टोकरेंसी बाजारों से दूर रहना जारी रखते हैं।

डेटा की हानि: क्रिप्टोकरेंसी में निवेश किया गया पैसा डिजिटल वॉलेट में रखा जाता है जो डिजिटल पासवर्ड द्वारा सुरक्षित होते हैं। यदि मालिक इन पासवर्डों को हटा देता है और उन्हें अपने आप पुनर्प्राप्त नहीं कर पाता है, तो इस बात की बड़ी संभावना है कि डिजिटल वॉलेट में बंद धन उनके लिए अप्राप्य हो सकता है।

कानूनी परेशानी: क्रिप्टोकरेंसी के साथ समस्या यह है कि वे पूरी तरह से गुमनाम हैं। नतीजतन, वे व्यापक रूप से अपराध सिंडिकेट और गैरकानूनी गतिविधियों में लिप्त अन्य लोगों द्वारा उपयोग किए जाते हैं। चूंकि क्रिप्टोकरेंसी को सरकार द्वारा विनियमित नहीं किया जाता है, इसलिए अपराधियों को यह अपने पैसे को लूटने का सबसे अच्छा तरीका लगता है। एक निवेशक के रूप में, यह समस्याग्रस्त हो सकता है। चूंकि बाजार पूरी तरह से गुमनाम है, इसलिए संभव है कि निवेशक इस तरह की मनी लॉन्ड्रिंग गतिविधियों को बिना किसी जानकारी के सहायता और बढ़ावा दे रहे हों। यह संभव है कि निवेशक कानूनी पचड़े में फंस सकते हैं, क्योंकि उन्होंने क्रिप्टोकरेंसी का कारोबार किया है। ऐसी समस्याओं से बचने के लिए, कई निवेशक पूरी तरह से क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करने से बचते हैं। ऊपर बताए गए मुद्दों के अलावा, कई देशों ने क्रिप्टोकरेंसी को जारी करना और स्वीकार करना एक अवैध गतिविधि बना दिया है। यदि निवेशक प्रतिबंध के बावजूद इन मुद्राओं का व्यापार करते हैं, तो वे भी अवैध गतिविधियों में शामिल हैं और कानूनी नतीजों का सामना कर सकते हैं।

टैक्स की परेशानी: चूंकि क्रिप्टोकरेंसी अपेक्षाकृत नई हैं, इसलिए अभी भी इस बारे में स्पष्टता की कमी है कि इन निवेशों से होने वाले लाभ पर कर कैसे लगाया जाना चाहिए। चूंकि नियम पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं। दुनिया के अधिकांश देशों को उनके टैक्स कोड में उल्लिखित क्रिप्टोकरेंसी से कर लाभ नहीं मिलता है। हालांकि यह उल्लेख स्पष्ट रूप से नहीं किया गया है, निवेशकों को आय का उल्लेख करना चाहिए और उन पर करों का भुगतान करना चाहिए।

चूंकि सरकारों के पास क्रिप्टोकरेंसी से सटीक आय निर्धारित करने के लिए एक मजबूत तंत्र नहीं है, इसलिए कुछ निवेशकों ने उन पर करों का भुगतान करने से बचने की कोशिश की है। इससे उन्हें कर अधिकारियों के साथ परेशानी का सामना करना पड़ा है। कई मामलों में, निवेशक वास्तव में अपने बकाये का भुगतान करना चाहते थे। हालांकि, क्रिप्टोकरेंसी पर लागू होने वाले कर की सटीक प्रकृति के बारे में भ्रम के कारण, वे

ऐसा करने में असमर्थ रहे हैं। इसलिए, क्रिप्टोकरेंसी पर करों का भुगतान करना भी एक जटिल कार्य है जिसके लिए महत्वपूर्ण लेनदेन लागतों की आवश्यकता होती है।

डेटा की चोरी: संपूर्ण क्रिप्टोकरेंसी नेटवर्क का प्रबंधन करने वाली समग्र प्रणाली काफी सुरक्षित है। हैकर्स वास्तव में इन ब्लॉकचेन नेटवर्क में प्रवेश नहीं कर सकते हैं या उनका नियंत्रण नहीं ले सकते हैं। दूसरी ओर, हैकर व्यक्तिगत खातों में हैक कर सकते हैं और कर सकते हैं। बहुत बार, वे फ़िशिंग और सोशल इंजीनियरिंग जैसी तकनीकों का उपयोग करते हैं। इसका मतलब यह है कि सिस्टम को हैक करने के बजाय, वे वास्तव में निवेशक को बरगलाते हैं और स्वेच्छा से पासवर्ड प्राप्त करते हैं। क्रिप्टोकरेंसी निवेशकों के बीच डेटा चोरी आम है। वर्ष 2020 में, क्रिप्टोकरेंसी से संबंधित डेटा चोरी का अनुमानित मूल्य $ 2 बिलियन तक बढ़ गया। यह संख्या पिछले वर्षों की तुलना में चोरी के मूल्य में 45% की वृद्धि का परिणाम थी। चूंकि क्रिप्टोकरेंसी -आधारित लेनदेन की सुविधा के लिए कोई केंद्रीकृत प्राधिकरण नहीं है, इसलिए डेटा चोरी आम है। कुछ फिनटेक कंपनियां सुरक्षा समाधान प्रदान करने की कोशिश कर रही हैं। हालांकि, उन समाधानों को व्यक्तिगत स्तर पर लागू करना होगा और व्यक्तिगत रूप से भुगतान करना होगा।

क्रिप्टोकरेंसी लेनदेन की लगभग छिपी प्रकृति उन्हें मनी लॉन्ड्रिंग, कर-चोरी और संभवतः यहां तक कि आतंक-वित्तपोषण जैसी अवैध गतिविधियों का ध्यान केंद्रित करना आसान बनाती है।

भुगतान अपरिवर्तनीय नहीं हैं क्रिप्टोकरेंसी हर जगह स्वीकार नहीं की जाती है और कहीं और सीमित मूल्य है

इस बात की चिंता है कि बिटकॉइन जैसी क्रिप्टोकरेंसी किसी भी भौतिक वस्तु में निहित नहीं है। हालांकि, कुछ शोधों ने यह पहचाना है कि बिटकॉइन के उत्पादन की लागत, जिसके लिए बड़ी मात्रा में ऊर्जा की आवश्यकता होती है, सीधे इसके बाजार मूल्य से संबंधित है।

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है। — सुमित्रानंदन पंत

विकास, कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्या.

मां की ममता

मां ना होती तो वफा कौन करेगा,
ममता का हक भी कौन अदा करेगा,
भगवान हर एक मां को सलामत रखना
वरना हमारे लिए दुआ कौन करेगा।

घुटनों से रेंगते-रेंगते
कब पैरो पर खड़ा हुआ
जाने कब बड़ा हुआ
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है
मैं ही मैं हूँ हर जगह
मां प्यार ये तेरा कैसा है।

सीधा-साधा, भोला – भाला
मैं ही सबसे अच्छा हूँ,
कितना भी हो जाऊँ बड़ा
मां मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

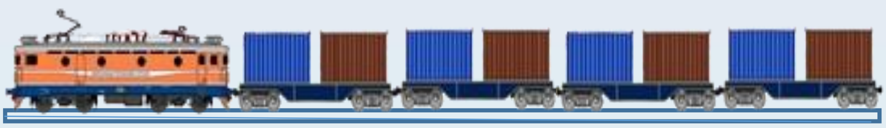

योगेंद्र कुमार त्यागी | महाप्रबंधक, भूमि एवं सेमू

जीवन: एक सफल प्रयास

मौरीन व कोनाली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में दोनों उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत दोनों ने शादी की तथा दोनों नौकरी करने लगे। मौरीन एक फर्म का प्रबंधक था तथा कोनाली एक फर्म की निदेशक थी। दोनों बड़ी खुशी से कदंन में रहते थे। जीवन की प्रत्येक खुशियां उनको उपलब्ध थीं। अचानक मौरीन को स्नोफोबिया की बीमारी हो गई। इस बीमारी में व्यक्ति को डर लगने लगता है। वह सोचता है कि वह घर के बाहर जाएगा तो उसके साथ सड़क दुर्घटना हो जाएगी या अन्य कोई दुर्घटना। वह हर समय डर के साये में रहता है। डॉक्टरों के पास कोई औचित्य नहीं है कि यह रोग क्यों होता है तथा कैसे ठीक होता है। इसी प्रकार, मौरीन को भी डर लगने लगा। वह मौरीन को घंटो बैठकर सांत्वना देती थी कि वह न डरे, ही कुछ नहीं लेकिन वह नहीं मानता तथा कोनाली को बुरा भला कहता तथा उसने नौकरी पर जाना बंद कर दिया। अब कोनाली घर का पूरा खर्चा उठाती एवं मौरीन की देखभाल भी करती। अच्छे से अच्छे डॉक्टर को उसने मौरीन को दिखाया लेकिन कोई सफलता नहीं मिली बल्कि तकलीफ ओर बढ़ती गई। मौरीन दिन-प्रतिदिन अधिक बीमार होता गया वह न दिन को सोता था और न रात को सोता था। उसे डर था कि अगर वह सो जाएगा तो कोई उसे जान से मार देगा इसलिए वह हर वक्त जागता रहता था। परेशान होकर कोनाली उसे एक दिन छोड़कर चली गई। उसके पास उसकी मम्मी व उसका छोटा भाई आ गए। वह उसे धीरज बंधाते। दिन-रात उसके पास रहते। घंटों को उसको कांधे पर रखकर समझाते रहते थे। कभी-कभी उसके दूर-दूर के रहने वाले मित्र उसके पास आने लगे तथा तरह-तरह के उपहार देते थे तथा सांत्वना व धीरज बंधाते थे। उसे लगने लगा कि वह ठीक होने लगा है। अतः वह कुछ आराम महसूस करने लगा। इसी बीच उसकी एक लॉटरी निकल आई। जिसके उपलक्ष्य में उसने एक पार्टी दी। अब वह अपने को और अच्छा समझने लगा। उसकी स्थिति दिन प्रतिदिन सुधरती चली गई। और एक दिन वह बिल्कुल स्वस्थ्य हो गया। यह सब कैसे हुआ आखिर एक दम यह कैसे परिवर्तन हुआ। इस सबका कारण था कोनाली, उसको ही यह श्रेय जाता है। कोनाली घर से जाने के बाद मौरीन के भाई और मां से मौरोन के पास जाने के लिए प्रार्थना की तथा दूर-दूर के उसके दोस्तों के पास गई तथा मोरोन के पास जाने के लिए निवेदन किया। अपनी सारी जमा पूंजी व संपत्ति लेकर वह लॉटरी कंपनी में गई तथा सारी संपत्ति देकर मौरीन को लॉटरी निकलवाने के लिए प्रयास किया। इस तरह यह सब कोनाली के कारण हुआ। जब मौरीन को यह सब पता लगा तो उसने कोनाली को गले से लगा लिया। इस प्रकार वह दोनों फिर से एक साथ सुखपूर्वक रहने लगे।

जीवन कभी-कभी पल-पल परीक्षाएं लेता है। जो जीवन में परेशानियों / मुश्किलों के रूप में आती है। हम परेशानी / मुश्किल का किस प्रकार सामना / मुकाबला करते है। सफलता केवल इसी जज्बा / ढंग पर निर्भर करती है। उपरोक्त कहानी से यह संदेश मिलता है कि यदि धैर्य व समयानुसार आवश्यकता को ध्यान में रखकर, भावनाओं में कमजोर न होकर लिखे गए कड़े फैसलों से असंभव हार भी जीत में बदल सकती है। उपलब्धि की कुंजी है प्रयास। अगर तुम सुस्त हो तो तुम्हारे लिए दो रास्ते हैं। या तो ज्यादा मेहनत करो या फिर कम हासिल, बीच का कोई रास्ता नहीं है।

के.पी. सत्यानंदन | सलाहकार, राजभाषा

भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा

संस्कृति शब्द का अर्थ स्वच्छता, शुद्धि, परिमार्जन या सुधार है। प्रकृति की दी हुई प्राकृतिक वस्तु को सुंदर बनाना, संभाल कर रखना, अधिक उपयोगी और श्रेष्ठ बनाना मानवीय संस्कृति है। संस्कृति शब्द का दूसरा अर्थ है – जीवन जीने के लिए परिवार एवं समाज के निमित्त अनुशासन एवं नियम युक्त, संस्कार, सभ्यता या धरोहर, जो समय के साथ मर्यादित परंपराओं के रूप में संस्कारों का निर्माण करती है। भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता यह है कि वह विश्व की सभी संस्कृतियों तथा धर्मों के अस्तित्व का सम्मान एवं प्रशंसा करती है। यह संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी है और काल के प्रवाह में जब अनेक समृद्ध संस्कृतियाँ नष्ट हो चुकी हैं और उसमें यह भारतीय संस्कृति ही है जो आज भी टिकी हुई है । यह एक सामासिक संस्कृति है और उसने विभिन्न संस्कृतियों को आत्मसात करने और अपने स्वभाव से समन्वित करने में अद्भुत प्रतिभा और लचीलेपन का परिचय दिया है।

हम सब जानते हैं कि भाषा और संस्कृति का अटूट संबंध होता है और संस्कृतियाँ आज के युग में भी बहुत हद तक धर्मों और संप्रदायों से अनुशासित होती रही हैं। भारत की गंगा-यमुना संस्कृति का मूल आधार 'विविधता में एकता' है। अधिकांश भारतीय जनता आध्यात्मवाद पर विश्वास रखने वाली हैं। हमारी संस्कृति की विशेषताओं में सबसे मुख्य आधार आध्यात्मवाद को मानता है जोकि हमारे वेदों, उपनिषदों ,सूत्रों, दर्शनशास्त्रों और पुराणों में उपलब्ध है। विश्व को आध्यात्मिक प्रकाश भारत की ही देन है। भारत में खानपान, उठना-बैठना, जन्म-मरण, वेशभूषा, यात्रा, विवाह, तीज-त्यौहार आदि उत्सवों का निर्माण ही आध्यात्मिक बुनियादों पर टिका हुआ है। हमने भारत को धर्मातीत राष्ट्र बनाया है। हमारे संविधान के अनुच्छेद 351 में सामासिक संस्कृति की बात की है। भारत की प्रत्येक समृद्ध साहित्यिक भाषा का वर्तमान कलेवर उस प्रदेश की सामासिक संस्कृति का द्योतक है। स्वाभाविक रूप से विकसित खड़ी बोली हिंदी स्वयं ही एक सामासिक संस्कृति की देन है। यदि यह कहें कि हिंदी एक राष्ट्र, एक सभ्यता, एक संस्कृति है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हिंदी भाषा का आरंभ से लेकर अब तक का साहित्य भारतीय संस्कृति के क्रमिक विकास का एक प्रामाणिक घोषणा-पत्र है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों की बहुरंगी संस्कृति को लोककथा, लोकनाट्य, लोकगाथा, आदि द्वारा भी हिंदी और उसकी बोलियों ने उजागर किया है। किसी भाषा की महत्ता और श्रेष्ठता के मूल्यांकन का मुख्य आधार उसका प्रचार, साहित्य भंडार है। मॉरिशस,फिजी, त्रिनिदाद, गुयाना आदि देशों में हिंदी भाषा को केवल भाषा के रूप में व्यवहार में नहीं लाया जाता अपितु उसे वे अपनी संस्कृति का एक जीवंत अंग भी समझते हैं। वे अपने ऐतिहासिक संबंधों की सांस्कृतिक कड़ी और अपनी भावनात्मक एकता का मूल आधार हिंदी भाषा को ही मानते हैं। वहाँ धार्मिक अनुष्ठानों की भाषा हिंदी है। वहाँ हिंदी उपनिषद्, रामायण, गीता बेटी बनकर गई। यह उनके धर्म एवं संस्कृति का अंग बनकर अभी भी जीवित है।

आध्यात्मिक मूल्यों की भौतिक सुख सुविधाओं पर वरीयता, मनुष्य और मनुष्य के बीच प्रेम-भाव पर आधारित स्नेह संबंधों की उत्कट आकांक्षा तुलसीदास कृत ‘ रामचरितमानस’ एवं तदृश सांस्कृतिक साहित्यिक ग्रंथों ने और

संस्कारों ने जो प्रेरणा प्रदान की थी । देश विदेश की अनेक भाषाओं में रामचरितमानस के अनुवाद उपलब्ध हैं। लोकप्रियता की दृष्टि से बाइबिल के बाद रामचरितमानस का स्थान आता है, किंतु बाइबिल काव्य ग्रंथ नहीं है, जबकि रामचरितमानस एक अत्यन्त उत्कृष्ट काव्यग्रंथ है। आज भी ऐसे अनेक देशों में भारत की महत्ता रामचरितमानस के कारण मानी जाती है जिसका गौरव हिन्दी को मिलता है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने धार्मिक विचारों को 'सत्यार्थ प्रकाश' के नाम से हिंदी में लिखा। उनके द्वारा प्रविर्तित आर्य समाज के अनुयायियों द्वारा इसे धर्म ग्रंथ के रूप में पूजा जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद हिंदी में स्वभाषा की चेतना के नए संदर्भ में आदि प्रवर्तक कहे जा सकते हैं क्योंकि उन्होने पहली बार अंग्रेजों की और अंग्रेजी की ग़ुलामी के विरुद्ध देशवासियों को सचेत किया।

द्विवेदी युग में 'भारत भारती' के माध्यम से मैथिलीशरण गुप्त जी ने जिस गहरी राष्ट्रीय भावना के साथ देश के पुनरुद्दार का

संकल्प किया था वह आज भी ढूँढने से नहीं मिल रहा है। मैथिलीशरण गुप्त की निरंतर उदारता की ओर उन्मुखता और 'राम' में किसी विशिष्ट धर्म एवं संप्रदाय को न देखकर व्यापक मानवीय रूप को देखना सामान्यतः हिन्दी साहित्य की राष्ट्रीयता के विकास का उदाहरण है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य का चरमोत्कर्ष 'तुलसीदास' और 'राम की शक्तिपूजा' में हुआ है। भारतीय साहित्य में नाट्यशास्त्र जैसे विश्वकोषीय ग्रंथ दो हजार वर्ष पूर्व उपलब्ध थे। पाणिनि जैसे भाषाविद् ने भाषा को सूत्रमय बनाने की अद्भुत क्षमता दिखाई। योग, आयुर्वेद, ज्योतिष और गणित क्षेत्रों में विलक्षण प्रगति हुई।

रामधारी सिंह दिनकर ने 'उर्वशी' के माध्यम से घर टूटने की, मनुष्य के अति अकेले पड़ने की ट्रेजिडी को संकेतिक किया है। जयशंकर प्रसाद ने सांस्कृतिक चेतना का रागात्मक संस्करण हिंदी साहित्य में प्रस्तुत किया। अब हिन्दी साहित्य केवल हिन्दी भाषा-भाषियों का साहित्य नहीं रहा। अहिंदी भाषी भारतीय एवं अभारतीय भी साहित्य की सेवा कर रहे हैं। विदेशों से श्रेष्ठ साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। विदेशों में बसे अनेक प्रवासी साहित्यकारों को विशिष्ट पहचान मिलने लगी है।

हिंदी साहित्य जिस प्रदेश में शताब्दियों से रचा जा रहा है ,उसकी भावनात्मक प्रकृति और भाषिक चेतना प्रारंभ से ही सामासिक एवं समन्वयात्मक रही है। यह कहना अनुचित न होगा कि भारत देश का सांस्कृतिक संतुलन-बिंदु गंगा यमुना की घाटी में विशेषतः केंद्रित रहा है। राम, कृष्ण और बुद्ध जैसे अवतारी पुरुषों की जन्मभूमि तथा काशी, मथुरा, मायापुरी(हरिद्वार), नैमिषारण्य और प्रयाग की पुण्य भूमि देशव्यापी आकर्षण का केन्द्र रही है। 'मथुरा' के साथ दक्षिण की 'मधुरा' और 'काशी' के साथ 'कांची' का नाम अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। नाथों और सिद्धों का साहित्य पूर्वी परंपरा और रासो तथा वीरगाथाओं का साहित्य पश्चिमी परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हुए हिन्दी की विशाल चेतना में एकान्वित हो गया है। दोहा, चौपाई तथा अन्य समरूप छंदों ने इसे एक सूत्र में बँधा हुआ है। उसी भक्ति का नवोन्मेष हिंदी भाषी क्षेत्रों में सूर, तुलसी, मीरा, कबीर, जायसी जैसे सांप्रदायिकता रहित उदार एवं उदात्त प्रेम भाव से परिपूर्ण संतों की वाणी हिंदी साहित्य को दे गया। रसखान, रहीम, जायसी जैसे कवियों की रचनाओं को देखकर कहीं यह नहीं लगता कि हिन्दू और मुसलमान के बीच में कभी कोई सांप्रदायिक वैमनस्य रहा हो।

प्रारंभ से ही हिंदी साहित्य ने जिस आदर्श को प्रतिष्ठित किया, वह सांस्कृतिक एकता, मानवीय समता तथा सारे संसार को अपने भावनात्मक विस्तार में समेट लेने की, देशव्यापी ही नहीं, विश्वव्यापी सामासिक चेतना से युक्त हो रहा है। वर्तमान परिस्थिति में हिंदी की संस्कृति केवल देशीय नहीं , सार्वभौमिक है। निसंदेह हिंदी आगे बढ़ेगी। उसकी गति के रथ को रोका नहीं जा सकता, क्योंकि हमने प्रेम की भाषा में शांति का संदेश दुनिया को सुनाया।

जगत सिंह नगरकोटी | वरिष्ठ कार्यकारी, राजभाषा

कुमाउंनी संस्कृति एवं लोकगीत

भारत के पहाड़ी राज्य उत्तराखंड का लगभग आधा हिस्सा कुमांऊ कहा जाता है। वर्तमान में कुमांऊ में नैनीताल, अल्मोड़ा, बागेश्वर, पिथोरागढ़, चम्पावत और उद्यम सिंह नगर 06 जिले हैं। कुमांऊ क्षेत्र में ऊधम सिंह नगर जिला को छोड़कर इसके सभी पहाड़ी जिले हैं। कुमांऊ का इतिहास लिखने वाले लगभग सभी विद्वानों का मत है कि इस क्षेत्र में विभिन्न काल खंडों में बाहर से लाग अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को लेकर आए और कालांतर में उनकी अपनी-अपनी भाषा, अपनी-अपनी संस्कृति के मेल से जिस नई भाषा, जिस नई संस्कृति का उद्भव हुआ, उसने कुमांऊनी भाषा और कुमाउंनी संस्कृति का रूप ग्रहण किया और समय के साथ इनके स्वरूप में समयानुकूल परिवर्तन हुए।

इतिहासविद एटकिन्स ने हिमालयन गजेटियर में लिखा है कि कुमाऊंनी में कई भाषाओं का प्रभाव पड़ा है और सर्वाधिक प्रभाव राजस्थानी का पड़ा है। नारायणदत्त पालीवाल ने कुमाऊंनी इतिहास पर वृहद शोध किया है और कुमांऊ की भाषा और जीवन शैली का चित्रण अपने लेखों में किया है। इतिहासविद बद्री दत्त पांडेय का मानना है कि यह सच है कि कुमाऊंनी भाषा विविध जातियों की भाषाओं के मेल और मिश्रण से बनी है, परंतु बाहर से आए लोगों में खस जाति की बहुलता रही इसलिए कुमांऊनी भाषा में खस भाषा शैली और शब्दों की प्रधानता रही।

कुमांऊनी साहित्य को कभी भी बड़े रूप में लिपिबद्ध नहीं किया गया। लिपिबद्ध न होने के कारण निश्चित तौर पर इसका फैलाव, विस्तार भी सीमित रहा। कुमांऊनी में जो भी कहानी, कविता, लेख, गीत बनाए गए वे एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी को जुबानी-जुबानी अग्रसर होते रहे। इन धरोहरों को जनसाधारण ने ही संरक्षित रखा। सैकड़ों सालों से हमारी यह परंपरा, हमारी कहानियां, हमारे किस्से आदि जीवित हैं तो इसका श्रेय आम आदमी को जाता है, जो शायद उतना पढ़ा लिखा न हो या शायद अनपढ़ ही हो। ऐसा नहीं कि कुमाऊंनी क्षेत्र के लोगों ने, कुमाऊंनी जानने वाले लोगों ने अपनी रचनाओं का लिपिबद्ध न किया हो। किया तो परंतु कुमाऊंनी में नहीं। मुख्यत: हिंदी में और कुछ हद तक अंग्रेजी में। शैलेष मटियानी, शिवानी, हिमांशु जोशी, सुमित्रानंदन पंत, इला जोशी आदि एक लंबी सूची है जिन्हें लिपिबद्ध साहित्य का स्तंभ कहा जा सकता है। कुमाऊंनी को प्रख्यात लोगों को उतना समर्थन तो न था पर कुमाऊंनी को संरक्षित रखने और उसका विस्तार करने का दायित्व बेहद आम आदमी ने उठाया। वह निश्चित ही आम आदमी था, जिसका कोई चेहरा न था परंतु जिसने सैक़ड़ों सालों से इस धरोहर को संजोए रखा, जिसे न मंचों की ख्वाहिश थी और न नाम की। पिछले सौ सालों को ही देखें तो इस कालखंड को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है पहला काल स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का काल। दूसरा काल स्वतंत्रता प्राप्ति तथा अपनी व्यवस्था स्थापित करने का काल। तीसरा काल अपना शासन काल। कुमाऊं क्षेत्र के वे लोग जिनके पास साधन संपन्नता थी या जिनको अवसर उपलब्ध हो गए वे पढ़ाई, नौकरी या व्यापार या किसी अन्य कारण से बाहर

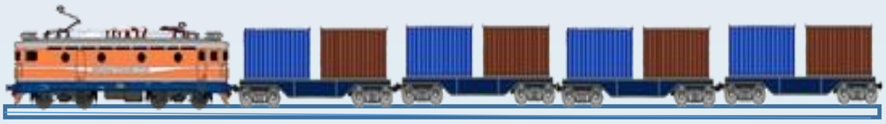

चले गए, उनको अपनी भौतिक उन्नति का मौका मिला। उनमें से कुछ लोग स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गए। कामोबेश सभी, पीछे पहाड़ों में रह गए लोगों की तुलना में आगे बढ़ गए। चूंकि उनका अपना 'संभ्रांत वर्ग' सा बन गया और 'संभ्रांतता' का एक बड़ा लक्षण अलग दिखना भी है, खासतौर पर अपने पुराने समाज से। इसलिए इसका परिणाम यह हुआ कि कुमांऊनी दोयम में आ गई। यही कारण है कि जहां हिंदी और अंग्रेजी में प्रख्यात विद्धान कुमाऊं ने दिए उस काल खंड में एक भी कुमाऊंनी में इस बड़ी उपलब्धि को प्राप्त नहीं कर सका। यहां पर इस बड़ी उपलब्धि का आशय लखनऊ, दिल्ली तक पहुंच और कुछ स्कूल कॉलेजों की पुस्तकों में आ जाना ही माना जाए। परंतु तीनों कालखंडों में यह दुविधा की स्थिति सदैव बनी रही। कुमांऊनी आम आदमी, कम पढ़े लिखे या अनपढ़ की पसंद बनी रही। यह इस क्षेत्र के समाज की सामूहिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनी रही। इस सामूहिक अभिव्यक्ति ने विभिन्न लोकगीतों, कहानियों, किस्सों की परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाया। 'मालूशाही' जैसे लोक गीत आदमी की मधुर भावनाओं का सजीव चित्रण करते रहे । अलग-अलग समय के लिए निर्धारित ऋतु गीत, त्योहार गीत, नामकरण गीत, विवाह गीत, रोपाई गीत, मड्डू गुड़ाई गीत, चांचरी, झोड़ा, बैर, छपेली, जोड़, भगनौला, न्योली, हुड़किया बोल गीत संगीत की अलग-अलग विधाएं अलग-अलग चलती रहीं। कुमाऊंनी गीत संगीत के वाद्य यंत्र ढोल, दम्मू, नगाड़ा, हारमोनियम, हुड़क तथा झांझर हैं। बिना हुणक एव झांझर के कोई भी गीत पूरा नहीं लगता।

कुमाऊंनी समाज में पुरुषों की तुलना में महिलाएं ज्यादा काम करती हैं और परिवार में उनका सम्मान भी अधिक है। लोक-जीवन तथा लोक-संगीत में कुमाऊंनी नारी की भूमिका अहम रहती है। कोई भी चांचरी, जो कुंमाऊ का एक लोकप्रिय सामूहिक गायन है, वह महिला गायिकाओं के बिना अधूरा लगता है। कुमांऊ के जीवन व लोगों में तुलनात्मक नजर डाली जाए तो उनमें दो वर्ग स्पष्ट नजर आते हैं। एक पूरी तरह कुमांऊनी को लेकर चलने वाला और दूसरा कुमांऊनी से थोड़ी दूरी बनाकर रखने वाला। दूसरा वर्ग ज्यादा साधन संपन्न है और इसकी पहुंच भी ज्यादा है। पहला वर्ग की अपनी दुनिया है और वह पूरी दुनिया है। उसके सुख-दुःख उसी दायरे में हैं। पहले वर्ग को दूसरे वर्ग के प्रति न कोई 'रीश' (गुस्सा) है न कोई हौत (तुलना भाव) है। परंतु दूसरा वर्ग जो कहने में तो ज्यादा साधन संपन्न है परंतु दूरी बनाए रखने के अपने सभी प्रयासों की बावजूद पहले वर्ग के प्रति लालायित नजर आता है। कुछ उनसे सम्मान लेने की आंकाक्षा से और कुछ आम आदमी के दिलों में उनके प्रति प्रेम-लगाव को देखकर। यह दूसरा साधन संपन्न वर्ग अपने अर्जित तथा जुटाए गए लोकप्रियता के बावजूद आम-आदमी के दिलों में उतनी गहरी पैठ कभी नहीं बना सका। उत्तराखंड अलग राज्य बनने के बाद एक सामान्य कुमांऊनी के जीवन में काफी परिवर्तन आया है। सड़क, बिजली, पानी की सुविधा बढ़ी हैं। मौके भी बड़े हैं। कुमांऊनी भाषा के प्रति व्यवस्थापकों का दृष्टिकोण भी बदला है। पहले स्कूलों में कुमाऊंनी बोलने की अनुमति नहीं थी एक पाँच वर्ष के बच्चे के लिए जो केवल कुमांऊनी में ही बोलता हो उसे उस कोमल अवस्था में कुमाऊंनी न बोलने देना, पता नहीं बाल शोषण की परिधि में आता था या नहीं परंतु कष्टकर बहुत होता था अब कुंमाऊनी का संवर्धन भी सरकार का दायित्व माना जाता है। स्कूलों में कुमाउंनी प्रार्थना भी आम बात है। । अब आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के केंद्रों से कुमांऊनी को काफी समर्थन मिला है। प्रतिवर्ष 01 सितंबर को कुमांऊनी भाषा दिवस मनाया जाता है। इसके लिए 01 सितंबर का चयन का भी अपना महत्व है। उसी दिन (1 सितंबर, 1994) खटीमा गोली कांड में बड़ी संख्या में लोग शहीद हो गए थे। यह उनके प्रति श्रद्धांजलि भी और अपने लोगों व संस्कृति का सम्मान भी। यूं तो कुछ लोग प्रारंभ से कुमांऊनी भाषा के प्रति जुड़े रहे जैसे कि मोहन उप्रेती, नइमा खॉन उप्रेती, गोपाल बाबू गोस्वामी, गिरीश चंद्र तिवारी तिवारी (गिर्दा) आदि परंतु सोशल मीडिया के प्रादुर्भाव के बाद अनेक लोग कुमांऊनी भाषा और लोक संगीत की ओर बढ़े हैं। पप्पू दा, ज्योति उप्रेती, नीरजा उप्रेती, खुशी जोशी, गोविंद डिगारी, मीना विष्ट, अनीता आर्य आदि प्रमुख नाम हैं, जिन्हें आज घर-घर, व्यक्ति-व्यक्ति जानता है और वह सम्मान देता है जो वे लोग ना पा पाए जिन्होंने अपना दायरा तो असीमित कर दिया लेकिन जड़ों से जुड़े न रहे।

हिंदी प्रेम की भाषा है।

- महादेवी वर्मा

संयम सिंघल पुत्र प्रदीप सिंघल | सहायक प्रबंधक,मा. सं. कॉर्पो. कार्या.

वन्य-जीव फोटोग्राफी

आज की युवा पीढ़ी परंपरागत कैरियर विकल्पों के अलावा अपनी जॉब में रोमांच और नवीनता भी चाहती है इसलिए अब हम युवा ऐसे कॅरियर भी चुन रहे हैं जो पहले बहुत ज्यादा लोकप्रिय नहीं थे ऐसा ही एक चुनौतीपूर्ण प्रोफेशन है वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफी/वन्यजीव फोटोग्राफी.

दुनिया में आज भी बहुत से जीव ऐसे है जिनके बारे में हम लोग अभी तक पूर्ण रूप से जानते नहीं है. इसी क्रम में वन्यजीव फोटोग्राफी (Wildlife photography) फोटोग्राफी की एक शैली है जो वन्यजीवों के विभिन्न रूपों को उनके प्राकृतिक आवास में प्रलेखित करती है. इसके द्वारा हम इन जीव जन्तुओ के व्यवहार के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करते है.

लॉकडाउन के दौरान मैंने घर के पास एक गौरैया पक्षी ने मेरा ध्यान अपनी और खींचा जो बार-बार अपने घोंसले में आ-जा रही थी तब ध्यान से देखने के बाद मुझे एहसास हुआ कि उसके घोंसले में कुछ बच्चे पक्षी हैं जो चहक रहे थे और माता-पिता चिड़िया उनके लिए खाना ला रहे थे। उस घटना के बाद मुझे एहसास हुआ कि चारों ओर सब कुछ है और हमें केवल उन आंखों की जरूरत है जो उन्हें देख सकें और उन्हें संजो सकें। तब मैंने अपनी जिन्दगी को अधिक रोमांचक बनाने हेतु 'वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफी' को चुना। मेरे यह कौशल सीखने की कहानी जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क, राम नगर की मेरी यात्रा से शुरू होती है जनवरी 2021 में उत्तराखंड से।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जिम कॉर्बेट एक वन्यजीव क्षेत्र है जिसमें हम उन जानवरों को उनकी प्राकृतिक अवस्था में देख सकते हैं जिन्हें पालतू नहीं बनाया जा सकता है चूँकि मेरी कैंपिंग में रुचि है इसलिए मैंने जंगल में रहने के उद्देश्य से जंगल के अंदर कमरा बुक किया और जंगल प्रवास के दौरान जीव जन्तुओ की विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ देखी।

जंगल प्रवास के दौरान प्रकृति की सुंदरता ने मुझे सिखाया कि जिन्दगी की भाग दौड़ में हम अपने आस पास की खूबसूरती की तरफ ध्यान ही नहीं देते। उस दिन मैंने फैसला किया कि मैं प्रकृति के विकास में योगदान दूंगा और कैमरे की मदद से लोगों को प्रकृति के बारे में और उस वन्य जीवन शैली के बारे में भी बताऊंगा जो कि विभिन्न प्रजातियों के पशु पक्षियों को

देखने के बाद मुझे एहसास हुआ था। यात्रा से लौटने के बाद मैंने अपने माता-पिता को बताया कि जंगल प्रवास के दौरान अनेक दुर्लभ क्षणों के चित्र जैसे बाघ का शिकार करना, हाथियों का झुण्ड बनाकर घूमना एवं हिरणों का उन्मुक्त रूप से जंगल में विचरण करना इत्यादि कैमरे में कैद नहीं कर पाया क्योंकि मेरे पास एक अच्छा कैमरा नहीं था और मैं प्रकृति की यह तस्वीर हर किसी के साथ साझा करना चाहता था। मेरे माता-पिता ने मेरे विचारों पर सहमति दिखाते हुए मुझे मेरा पहला प्रोफेशनल डी.एस.एल.आर कैमरा खरीद कर दे दिया।

अब हर सुबह मैं जल्दी उठता था और अपने आस-पास के हरित क्षेत्र में प्रकृति के कुछ अद्भुत फोटो लेने के लिए निकल पड़ता था क्योंकि पक्षी सुबह सवेरे ही खाने की तलाश में निकलने के कारण आसानी से दिखाई देते थे। ये सब मनमोहक दृश्य सभी के साथ शेयर करने के लिए मैने अपने दवारा खींचे गए फोटो व्हाट्सअप एवं इंस्टाग्राम पर डाउनलोड किये जिसको देख कर एक नेशनल वाइल्डलाइफ फोटोग्राफर ने मुझसे सम्पर्क किया और मुझे और अधिक सुंदर फोटो खीचने सम्बन्धी मार्गदर्शन प्रदान किया इसके अलावा मैंने अपने पिता के उन दोस्त से भी मार्गदर्शन लिया, जो भारत के एक बड़े एवं नामी न्यूज़ चेनल में सिनेमैटोग्राफर हैं। जिसके बाद बहुत अभ्यास के साथ मैंने विभिन्न तरीकों का उपयोग करते हुए विभिन्न संयोजनों के साथ फोटोग्राफी की विभिन्न शैलियों के साथ और विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के अनुसार अपने

कौशल में सुधार किया. दिन के अंत में मैं उनका विश्लेषण करता था कि कौन सा तरीका किस फोटो के लिए बेहतर काम करता है। विभिन्न शैलियों से मैंने एक बात सीखी कि निर्जीव वस्तुएँ स्थिर रहती हैं लेकिन प्रकृति में विशेष रूप से वन्य जीवन में सब कुछ अचानक होता है इसके लिए मैंने अपने कैमरे का अनुभव के आधार पर उपयोग करते है। अनेक रोचक पलों के फोटो खीचे। जिसमें से निम्न एक पक्षी (किंगफिशर) एक मेंढक को खा रहा है। इस तस्वीर के माध्यम से एक सन्देश मिल रहा था कि सभी प्राणी इस पृथ्वी पर अपने अपने तरीके से संघर्ष कर रहे है जैसे इस फोटो में पक्षी भोजन के लिए संघर्ष कर रहा है और मेंढक जीवन के लिए संघर्ष कर रहा है।

इस तस्वीर ने मुझे सिखाया कि अपनी मूलभूत आवश्यकता को पूरा करने के लिए हम सभी को कड़ी मेहनत करनी होगी लक्ष्य और इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति के बाद भी हमें वहाँ नहीं रुकना चाहिए हमें और आगे की योजना बनानी चाहिए।

इसी क्रम में मैंने अपने छोटे भाई सत्यम के साथ मिलकर वन्यजीव फोटोग्राफी से सम्बंधित फोटो को देश दुनिया के देखने के लिए इंस्टाग्राम पर एक पेज (stingphotography) बनाया और फोटो अपलोड करने शुरू कर दिए शीघ्र ही लोगों को वो फोटो पसंद आने लगे क्योंकि वे चित्र सबका ध्यान आकर्षित करने वाले थे क्योंकि उमसे मैने प्रकृति के बारे में सच्चाई बताई थी। मेरे कुछ दोस्तों ने मुझे फोन भी किया और कहा कि आप ये तस्वीरें गूगल से या किसी बड़े फोटोग्राफर के संग्रह से चुरा रहे हो लेकिन मैंने इसे सिर्फ एक तारीफ के रूप में लिया क्योंकि मेरी खुद की खींची गई तस्वीरों की तुलना एक बड़े फोटोग्राफर से की जा रही थी। कुछ बहुत बड़े और विश्व प्रसिद्ध वन्यजीव फोटोग्राफरों को मेरी खींची की गई तस्वीर पसंद आई है और उन्होंने मेरी बहुत प्रशंसा की हैइस कौशल के कारण मैंने अब तक जो हासिल किया है उससे मैं वास्तव में संतुष्ट हूं क्योंकि मेरे इस कौशल ने मुझे जीवन के एक नज़रिये से रूबरू कराया है जिससे मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रकृति की इस सुन्दरता को मेरे कैमरे के माध्यम से देखने के पश्चात लोगों का प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण बदलेगा और सब वन्य जीवों के प्रति प्रेम का अहसास और पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अहसास करेंगे।

आइये हम सब मिलकर प्रण ले कि हम सभी अपने-अपने स्तर पर प्रकृति एवं पर्यावरण का संतुलन बनाने में अपना-अपना अधिक से अधिक योगदान देंगे ताकि इस पृथ्वी को और अधिक सुंदर बना सके।

हिंदी हमारी राजभाषा है। इसका अध्ययन करने व इसका अनुपालन करने में हमें गर्व का अनुभव होना चाहिए।

- सरदार बल्लभभाई पटेल

आशीष | कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्या.

“बुझता बचपन बच्चों का”

मात्र एक दशक पहले की ही बात है, जहाँ आपको गांव की हर गली, हर मोहल्ले में बच्चों के नाना प्रकार के खेल खेलते झुंड आसानी से दृष्टिगोचर थे । बच्चों का स्वच्छंद खेलना, अठखेलियाँ करना, बात-बात पर प्रश्न पूँछना, रेत के ढेर में उनका अपना आशियाना बनाना और उस छोटे से घर में विभिन्न प्रकार के कल्पनाओं को संजोते हुए बच्चों को देखना किसी भी व्यक्ति के हृदय को रोमांच से भरने हेतु पर्याप्त था।

अभी हाल ही में मैंने अपने गांव के कुछ बच्चों को आपस में खेलते हुए देखा और पाया कि हमारे खेल और उनके खेलों में जमीन-आसमान का अंतर आ गया है। जहाँ पहले के खेल घरों से निकल कर, बिना शारीरिक हलचल के संभव नहीं थें वहीं आज के बच्चों के सभी खेल, घंटों... एक ही जगह बैठ कर उनके हाथों तक सीमित हो गया है। ऐसा बदलाव देख कर आज के समय के अत्याधुनिक बचपन पर दया एवं तरस आती है। पहले के खेल जहाँ बच्चों को शारीरिक सौष्ठव प्रदान करते थे वहीं आज के खेल लगातार बैठने से मानसिक अशांति एवं शारीरिक दुर्बलता से ज्यादा और कुछ भी नहीं दे रहे है। आज जहाँ ‘स्मार्टफोन’ का उपयोग करके लोग ‘स्मार्ट’ होते जा रहे हैं अर्थात् अपना काम कम समय में और घर बैठे कर पा रहे हैं वहीं बच्चे इस उपकरण का उपयोग अपनी क्षमता से अधिक करके अपना सारा समय गवा रहे हैं। जहाँ उन्हें अपने बचपन पर ध्यान देते हुए शारीरिक एवं मानसिक समृद्धि हासिल करना था वहीं वे इस उपकरण पर अधिक निर्भरता एवं मानसिक रूप से फसा महसूस करते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य (‘कोरोना’ काल) में शिक्षा के मद्देनज़र इन सभी उपकरणों की आवश्यकता भी है परंतु; किसी वस्तु का आवश्यकता से अधिक उपयोग उस पर हमारी निर्भरता बढ़ाने के शिवा कुछ नहीं दे सकता है । लगभग 150 ग्राम का यह उपकरण शिक्षा, मनोरंजन, ऑनलाइन खेल, व्यापार, शॉपिंग, बैंकिंग और भी कई प्रकार की गतिविधियाँ करने में सक्षम है जिसे हम और आप सोच भी नहीं सकते हैं। जाहिर सी बात है सारा ‘वर्चुअल’ विश्व समेटे हुए इस उपकरण की लत लगना आम बात है।

आज बच्चे, वयस्क या बूढ़े लगभग सभी अपने दिन की शुरुआत अपने ‘मोबाइल फोन’ से करते हैं। कसरत के वक्त मोबाइल, खाने के वक्त मोबाइल, पढ़ने के वक्त मोबाइल, सोते वक्त मोबाइल यहाँ तक ये हालात ऐसे हैं कि किसी व्यक्ति से बात करते वक्त भी हम अपना मोबाइल प्रति मिनट देखते है । कहने का सीधा सा मतलब है कि हम आज के विश्व पटल पर जरूरत से ज्यादा इस यंत्र पर निर्भर हो चुके है जाहिर सी बात है ऐसे में हम ही बच्चों के बचपन को नष्ट करने वाले कारक हैं । बात कुछ समझ नहीं आई होगी चलिए एक घटना के माध्यम से समझते हैं :-लगभग दो वर्ष पहले मैं अपने घर से दिल्ली आ रहा था वैसे तो ट्रेन में लगभग सभी व्यक्ति व्यस्त थे अपने-अपने मोबाइल के साथ परंतु किसी के चेहरे में ख़ुशी के भाव नहीं थे मात्र मेरे कम्पार्टमेंट में बैठे एक बुजुर्ग दंपति को छोड़कर । मुझे देखकर आश्चर्य हुआ कि आज के दौर में जहाँ लोग अपने मोबाइल के साथ ख़ुश नहीं है वहीं वे इस उम्र में भी काफी ख़ुश व चंचलता से भरे स्वर में एक-दूसरे को अपनी यात्रा वार्ता से आनंदित कर रहे थे । मैंने हिम्मत करके उनसे परिचय पूछा और अपना परिचय दिया । उन्हें जानकर बेहद ख़ुशी हुई कि मैं भी रेल परिवार का हिस्सा हूँ चूकि वे एक रिटायर्ड रेल कर्मचारी थे ।

उन्होंने वर्तमान परिप्रेक्ष्य से संबंधित कई सारी बाते की लेकिन उनकी एक बात मेरे दिल को छू गई.......। उन्होंने बताया कि वे अपने बेटे के यहाँ घूमने गये जो कि मुम्बई में 'सॉफ्टवेयर इंजीनियर' थे और पाया कि उनके पौत्र उनसे केवल शुरु दिन

ही मिले और सारा दिन अपने-अपने कमरे में व्यतीत करते थे उनके लिए दादा-दादी की वह अहमियत नहीं थी जो आज से मात्र एक दशक पहले हुआ करती थी । ऐसे करते-करते एक सप्ताह हो चला और उन्होंने निर्णय लिया कि ऐसे जीवन पद्धति से निजात पाना ही होगा अपने परिवार के बच्चों के बुझते बचपन की बागडोर थामना होगा । तब वे अपने बेटे और बहु के साथ मिलकर एक नतीजे में पहुंचे तथा उसके पालन से न सिर्फ वे अपने पौत्र के साथ एक अच्छा समय व्यतीत किया बल्कि वे बच्चों क़े साथ अपनी कई बाते व अनुभव साझा किए। जो कि बचपन रूपी पौधे में उर्वरक का कार्य करते हैं और अनुभव एवं व्यावहारिक ज्ञान रूपी विशाल वृक्ष की भाँति जीवन प्रदान करते हैं। अब आप सोच रहे होगें कि कहानी का असली सार तो बताया ही नहीं "आखिर दादा जी ने क्या निर्णय लिया था?" तो उन्होंने बताया कि बच्चे वही सीखते या करते हैं जो उनके आस-पास के लोग अर्थात अभिभावक करते हैं। इसीलिए वे घर में अच्छे एवं स्वच्छ वातावरण के लिए मोबाइल फोन का उपयोग सीमित करके उनके साथ शारीरिक हलचल वाले खेल खेले, उनके पढ़ाई के वक्त अपने आप को भी किसी अच्छी किताब को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। सच ही कहा है उन्होंने अगर हम बच्चों को पढ़ाते वक्त या उनके पढ़ते वक्त किसी उपकरण का उपयोग करेंगे तो उनका मन पढ़ाई में कैसे लगेगा? यदि हम पार्क में टहलते वक्त भी किसी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का उपयोग करेंगे तो उनका मन पार्क की क्रियाकलापों में कैसे लगेगा । मैं अपनी बात फिर से कहना चाहूँगा कि हम अभिभावक ही बच्चों के बचपन के निर्माण के कारक है। हम जो करते हैं उनका सीधा असर बच्चों के सोच, गतिविधियों एवं क्रियाकलापों पर पड़ता है गुज़ारिश बस इतनी सी है कि हम सब अभिभावक हैं या होंगे। अतएव हम सभी बच्चों के भविष्य के ज़िम्मेदार है, बच्चों का बुझता हुआ जो बचपन है उसकी बागडोर हमारे हाथ में हैं चाहे इसे छोड़ के आगामी भविष्य में भारतीय संस्कृति की बलि दे दें या इसे थाम के अपना कर्तव्य निर्वाह करते हुए भारतीय परंपरा के बच्चों के भविष्य को विश्व पटल पर श्रेष्ठ आकार दें।

करन अरोरा,
कार्यालय सहायक, कॉर्पोरेट कार्यालय

मेरी कोरी कल्पना

मेरी कोरी कल्पना,
कल्पना किसी के साथ की,
तपती धूप में किसी की छाव की,
नदी किनारे थामे एक हाथ की,
रात का अंधेरे में रोशनी किसी के प्यार की,

मेरी कोरी कल्पना,
कल्पना किसी के साथ की,
मेरी अनकही हर बात के जवाब की,
मेरी तकलीफों में किसी के साथ की,
मेरी खामोशियों में समझी दिल की हर बात की,

मेरी कोरी कल्पना,
कल्पना किसी के साथ की,
मेरी हिचक जहाँ पर मिट जाये,
मेरी तलाश जिससे देख रुक जाये
बस एक साथ फिर न रहे ख्वाइश कोई,
जिससे दिल पाकर बस यह कह जाये
आज हकीकत बन गई,
मेरी कोरी कल्पना,
कल्पना किसी के साथ की

विनय कुमार नामा
उप मुख्य सतर्कता अधिकारी, कॉर्पोरेट कार्यालय

बेटी और समाज (भाग-1)

बेटी तुम अनचाही हो यहाँ प्रकट ना होना।
तेरे आते ही पूरे कुल को पड़ा था रोना।।
माँ को कोसा तेरे जन्म पे, झेली उसने गाली।
तू खिला फूल उपवन का, नाखुश तेरा माली।।
ओर घरों में बेटी होती तो मानो लक्ष्मी है आई।
इस घर में लक्ष्मी आते ही हो जाती है पराई।।
अपमानित होकर भी, अपना आपा मत खोना।
बेटी तुम अनचाही थी यहाँ प्रकट ना होना।

उत्साह तेरे पीहर में पर तुझे न वो बतायेंगे।
समारोह के वीडियो से दिल तेरा जलायेंगे।।
समझदार, परिपक्व हो, दुख स्व न बताना
परिवर्तित वक्त है जमाना भी देगा तुझे उलाहना।।
पीहरी किस्मत टूटी-फूटी, मत किसी को बताना।
दिल में दुख, आँख में अश्क, फिर भी मुस्कराना।।
तेरी नहीं थी चाह, बेटे के लिए किया था टोना।
बेटी तुम आज भी अनचाही हो यहाँ प्रकट ना होना।।

समय चक्र से बीता बचपन, माँ भी हुई पचपन।
डांट के बोले तू बेटी है, क्यों रखती हैं अपनापन ?
दिवाली की तैयारी में भाई ने ड्रेस बनवाई।।
बेटी को मिला न कुछ भी, करेगी घर की पुताई।।
स्कूल जाने से पहले करना है तुझे बिलौना।
बड़ा भाई खुश होगा, लेकर तेरा खिलौना।।
तू चिड़िया पिंजरे की, बेकार है तेरा चहकना।
बेटी अब तुम अनचाही हो यहाँ प्रकट ना होना।।

गई कॉलेज प्रवेश को, ना कोई तेरे साथ था।
कौन-सा विषय चुनूं ? अन्जाना सा हाथ था।।
बाबू ने पूछा ! क्या कोई नहीं है साथ में?
अश्कों से भीग गया जो पर्चा था हाथ में।।
घर लौटी तो तुझे सफलता का अहसास था।
रसोई-चौका वास्तविकता, बाकी सब बकवास था।।
वक्त उड़ा, भाई हुआ बड़ा, भाभी का हो गया गोना।
बेटी तुम अनचाही रहोगी यहाँ प्रकट ना होना।।

सविता शर्मा | कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्यालय

पानी की बचत आज की जरूरत

जल ही जीवन है ये सब सुनते हैं लेकिन मानता कौन है ? पानी की एक बूंद को बचाना हमारी आज की जरूरत है अगर हमने आज पानी की बचत नहीं की तो इसकी एक-एक बूंद के लिए हमारे आने वाली पीढ़ी को तरसना पड़ेगा। पानी का जलस्तर निरंतर घट रहा है।

पानी की बर्बादी पर अंकुश : हमें पानी की बर्बादी पर अंकुश लगाना पड़ेगा। आप जानते हैं कि आज बचाया हुआ जल ही हमारी कल की आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा। हम अक्सर देखते हैं कि देश में बड़ी संख्या में सार्वजनिक स्थानों पर, घरों के बाहर बिना कारण खुले नल से जल बहता रहता है। इन बहते हुए जल को रोकने के लिए कोई भी अपनी जिम्मेदारी नहीं समझता। नहाने, कपड़े धोने व अपने दोपहिया, चार पहिया वाहनों की धुलाई में ही लोग आवश्यकता से अधिक जल का दोहन करते हैं परिणामस्वरूप सैकड़ों लीटर जल की बर्बादी रोजाना कई घरों में होती है। यदि हम अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से निर्वहन करें और बहते हुए जल की बर्बादी रोकने में थोड़ा भी सहयोग करें तो हम कई लीटर जल की बर्बादी रोजना बचा सकते हैं। हम बहते हुए जल, खुले नल व जहां आवश्यकता से अधिक जल की बर्बादी हो रही है ऐसी सूचना प्रशासन व जल विभाग को दे सकते हैं।

पानी की बचत के लिए जल संचयन या जल संरक्षण

पानी जीवन का आधार है अगर हमें इसे बचाना है तो इसका संरक्षण करना पड़ेगा। पानी की उपलब्धता घट रही है और महामारी बढ़ रही है। इसलिए पानी के भावी संकट से निबटने के लिए आज ही कदम उठाने की आवश्यकता है। पेयजल की बचत करना हमारा नैतिक, सामाजिक, धार्मिक कर्तव्य है। आज की बचत हमारी भविष्य की पीढ़ी की सुरक्षा की गारंटी है। प्रकृति से मित्रवत व्यवहार ही हमें प्रकृति द्वारा प्रदत्त सुविधाओं के सुखद भोग का आनंद देगा। प्रकृति के विरूद्ध जाने पर विनाश के रूप में कई परिणाम हमें देखने को मिल रहे हैं और आशंका है कि आगे यह परिणाम और भयानक हों।

हमें पानी की बचत क्यों करनी चाहिए ? पानी की बचत के लिए जल के महत्व को समझना होगा, सबसे पहले तो मनुष्य अपने जीवन में दूसरी चीजों के बिना तो रह सकता है, परंतु ऑक्सीजन, पानी और खाना बिना नहीं रह सकता। इन तीन मूलभूत चीजों में पानी का महत्व सर्वाधिक है। सबसे पहले तो हमें प्रण लेना होगा कि पानी की बचत करेंगे और इसे बर्बाद करने व होने से रोकेंगे। कहावत हैं कि बूंद-बूंद से घड़ा भरता है यदि प्रत्येक नागरिक सिर्फ अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन कर अपने हिस्से का पानी का भी बर्बाद होने से रोके तो रोजाना लाखों लीटर पानी की बर्बादी को रोका जा सकता है।

बारिश के पानी का संरक्षण करने के लिए वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, पानी की रिसाइकलिंग कर हमें भू-गर्भ जल को बचाने के प्रयास करने चाहिए।

नहाते समय यदि हम सावर के स्थान पर पानी की बाल्टी का प्रयोग करें तो रोजाना सैकड़ों लीटर पानी की बचत होगी।

नल का इस्तेमाल करते समय यह सुनिश्चित करें कि प्रयोग के बाद नल खुला न रहे या तकनीकी खराबी से नल से जल रिसाव न हो रहा हो।

आज प्रत्येक घर में आरओ का प्रयोग हो रहा है ऐसे में आरओ से वेस्ट के रूप में निकाले पानी को हम घर के अन्य कार्यों जैसे कपड़े धोने, सफाई आदि में प्रयोग कर सकते हैं।

जल संरक्षण में वृक्षों का भी बहुत अधिक महत्व है इसलिए बारिश के मौसम में अपने घरों के आसपास पौध रोपण करें व बड़े होने तक उनका संरक्षण करें। रेलवे स्टेशन बस स्टॉप या अन्य कहीं भी जहां हमें नल खुला दिखाई दे या पानी का रिसाब हो वहां स्वयं के स्तर पर या प्रशासनिक मदद लेकर हमें बहते हुए जल की बर्बादी को रोकना चाहिए।

निष्कर्ष: इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि पानी हमारे और दूसरे अन्य प्राणियों व पृथ्वी पर रहने वाले जीवों के लिए कितना आवश्यक है। पानी की बचत हमारी आज की जरूरत है यही हमारा भविष्य व हमारी पीढ़ी का भविष्य तय करेग

जय प्रकाश | कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्यालय

गुरु की महिमा

गुरु शब्द दो अक्षरों से मिलकर बना है, गु का अर्थ होता है अंधकार (अज्ञान) एवं रु का अर्थ होता है (प्रकाश)। गुरु हमें अंधकार रूपी जीवन से प्रकाश रूपी जीवन की ओर ले जाते हैं। हमारे जीवन के प्रथम गुरु हमारे माता-पिता होते हैं। जो हमारा पालन-पोषण करते हैं, वह हमें बोलना, चलना तथा शुरुआती आवश्यकताओं को सिखाते हैं। अर्थात संसार में माता-पिता का स्थान सर्वोपरि है। देखा जाए तो गुरु की महिमा का पूरा वर्णन कोई भी नहीं कर सकता। गुरु की महिमा तो भगवान से भी अधिक है। इस दुनिया में कोई भी ऐसा नहीं है जिसकी तुलना गुरु से की जा सके। एक दोहे में श्री कबीरदास जी कहते हैं कि -

सब धरती कागज करूं, लेखन सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूं, गुरु गुण लिखा न जाए।।

अर्थात् गुरु की महिमा अपार है। यदि सभी धरती के कागजों को एकत्रित करके, वन में उपस्थित सभी लकड़ी को एकत्रित करके, सातों समुद्रों की स्याही भी बनाई जाए तब भी गुरु की महिमा लिखने के लिए सब कम पड़ जाएगा। ये महिमा है गुरु की।

गुरु के ज्ञान के बिना मनुष्य अधूरा है, इस पर श्री कबीरदास जी कहते है कि -

गुरु के बिन ज्ञान न उपजे, गुरु बिन मिले न मोक्ष।
गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटे न दोष।।

अर्थात् गुरु के बिना ज्ञान का मिलना असंभव है, गुरु के बिना मोक्ष मिलना असंभव है, गुरु के बिना सत्य को पहचानना असंभव है तथा गुरु के बिना दोष का अर्थात मन के विकारों का मिटना मुश्किल है।

गुरू की आज्ञा की अवहेलना कभी नहीं करनी चाहिए इस पर श्री कबीरदास जी कहते हैं कि-

गुरु आज्ञा मानै नहीं, चलै अटपटी चाल।
लोक वेद दोनों गए, आए सिर पर काल।।

अर्थात् जो मनुष्य गुरु की आज्ञा नहीं मानता है, गलत मार्ग पर चलता है, वह लोक और वेद दोनों से ही पतित हो जाता है एवं दुख और कष्टों से हमेशा ही घिरा रहता है। गुरु के कठोर अनुशासन से शिष्य को कभी भी भागना नहीं चाहिए इस पर श्री कबीरदास जी कहते हैं कि-

गुरु कुम्हार विष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि गाढ़े खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहे चोट।।

अर्थात् गुरु कुम्हार के समान है और शिष्य मिट्टी के घड़े के समान है, गुरु कठोर अनुशासन किन्तु मन में प्रेम भावना रखते हुए, शिष्य के मन के विकारों को दूर करते हैं। जैसे कुम्हार घड़े के भीतर से हाथ का सहारा देता है और बाहर चोट मारकर घड़े को सुंदर आकार देता है। संसार में गुरु के जैसा कोई दानी नहीं है और शिष्य के जैसा कोई याचक नहीं है इस पर श्री कबीरदास जी कहते हैं कि-

गुरु समान दाता नहीं, याचक शीष समान।
तीन लोक की संपदा, सो गुरु दीन्ही दान।।

अर्थात् गुरु के समान कोई दाता नहीं है, शिष्य के समान कोई याचक या मांगने वाला नहीं है। ज्ञान रूपी अनमोल संपत्ति, जो तीनों लोकों की संपत्ति से भी बढ़कर है, शिष्य के मांगने से गुरु उसे यह संपत्ति अर्थात् ज्ञान रूपी संपदा दान में दे देते हैं।

गुरु का जीवन में होना विशेष मायने रखता है। गुरु हमारे दुर्गुणों को दूर करता है। गुरु के बिना हमारा जीवन अंधकारमय होता है। गुरु इस संसार का सबसे शक्तिशाली अंग होता है। कोई चीज सीखने के लिए बिना गुरु के नहीं सीखा जा सकता है। अलग-अलग चीजें सीखने के लिए अलग-अलग गुण के गुरुओं की जरूरत होती है। गुरु बहुत ही सीधा सादा होता है। गुरु भले ही लंगड़ा, लूला या गरीब है लेकिन गुरु, गुरु ही होता है। वह कभी भी अपने शिष्य के प्रति कपट व्यवहार नहीं करता है। गुरु से कभी भी छल कपट नहीं करना चाहिए।

आज के आधुनिक युग में भी गुरु की महत्ता में जरा भी कमी नहीं आई है। एक बेहतर भविष्य के निर्माण हेतु आज भी गुरु का विशेष योगदान आवश्यक होता है। गुरु के प्रति श्रद्धा व समर्पण दर्शित करने हेतु 'गुरु पूर्णिमा' का पर्व मनाया जाता है। मान्यता है कि इस दिन गुरु का पूजन करने से गुरु की दीक्षा का पूरा फल उनके शिष्यों को मिलता है।

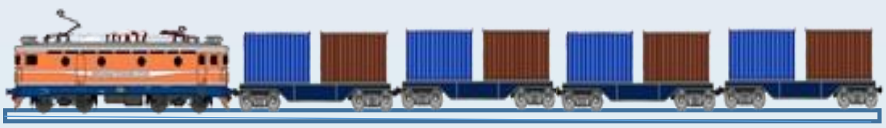

जयपाल | कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्यालय

बुढ़िया का भ्रम

एक दिन संत कन्फ्यूशियस के पास उनके कुछ शिष्य जाकर बोले – "गुरुदेव सच्चा ज्ञानी कौन होता है? "कन्फ्यूशियस ने कहा – सब लोग बैठ जाओ, अभी बताते है। यह कह कर उन्होंने अपनी शेष दिनचर्या पूरी की और कपड़े पहने। फिर सब शिष्यों को लेकर एक ओर चल पड़े। सब लोग एक गुफा के अन्दर प्रविष्ट हुए। वहां एक महात्मा निवास करते थे जो तप जप और चिन्तक में अपना समय बिताते थे। कन्फ्यूशियस ने उनको प्रणाम किया और एक ओर बैठ गए। फिर शांत होकर पूछा- भगवन् हम लोग आपके पास ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने आए है बताइए वह कौन है, क्या है और कहाॅ रहता है?

महात्मा बिगड़ उठे – "तुम लोग मेरी शांति भंग करने क्यों आए हो? भागो, मरे भजन में विघ्न पड़ता है। कन्फ्यूशियस शिष्यों को लेकर बाहर निकल आए। उन्होंने कहा – एक ज्ञानी तो ये हैं जिन्होंने संसार से आंखें मूंद ली है; संसार में सुख-दुःख की परिस्थितियों से अशांत, एकान्त में शांति की इच्छा रखने वाले ये संत छोटे स्तर के ज्ञानी है। इसके बाद वे एक गांव में पहुंचे। वहां एक तेली कोल्हू चला रहा था। बैल की आंखें बंधी थी। वह अपनी मस्त चाल में उतना परिपथ न जाने कब से नाप रहा था और तेली कोल्हू पर बैठा कोई गीत गुनगुना रहा था। कन्फ्यूशियस ने कहा – भाई मैंने सुना है तुम ब्रह्मज्ञानी हो। हमें भी ब्रह्म का थोड़ा उपदेश करो। तेली ने हंसकर उत्तर दिया – भाई, यह बैल ही मेरा ब्रह्म मेरा परमात्मा है। इसकी सेवा मैं करता हूँ, यह मेरी सेवा करता है। बस हम दोनों सुखी हैं। सुख ही ब्रह्म है। गुरुदेव बाहर निकले और शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा- मध्यम ज्ञानी प्रबुद्ध गृहस्थ के रूप में यह तेली है, जिसके मन में ज्ञान-प्राप्ति की आकांक्षा है। यह धीरे-धीरे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है।

अब वे फिर आगे बढ़े तो उन्होंने कहा- संसार में परिस्थितियों का अध्ययन करने से स्थिति का उतना अच्छा ज्ञान हो सकता है जितना पुस्तकें पढ़ने अथवा महात्माओं के प्रवचन से हो सकता है। पुस्तक तो एक व्यक्ति का दृष्टिकोण होती है, प्रवचन एक व्यक्ति की ज्ञान-साधना का निष्कर्ष है। इसलिए संसार को देखो और यह पता लगाओ कि स्पष्ट स्थिति कहां है और भ्रम कहां है। जो स्पष्ट हो, निर्विकार हो और सही हो, उसे तुम्हारी बुद्धि आप स्वीकार करेगी, फिर उसे अपने जीवन में धारण करने से कल्याण हो सकता है।

इस प्रकार बातचीत करते हुए वे एक बुढ़िया के दरवाजे पर रुके। कई लड़के बुढ़िया के आसपास शोरगुल कर रहे थे। बुढ़िया चरखा कात रही थी। बीच-बीच में किसी बच्चे के मांगने पर पानी पिला देता, कभी किसी नटखट बालक को डॉट देती। कभी किसी को हंस कर समझाती, फिर बच्चे खेलने लगते तो वह भी अपना चरखा कातने लगती। कन्फ्यूशियस जैसे ही वहां पहुंचे, सब लड़के भाग गए। उन्होंने पूछा-माता जी आप कृपा कर यह बताइए क्या आपने ईश्वर को देखा है।

बुढ़िया मुस्करायी और बोली – हाँ –हाँ बेटा, वह अभी यहीं खेल रहा था, आपको देखते ही भाग गया। वह निरर्थक शोरगुल, बच्चों का रूठना, मेरा मनाना, फिर हंसी, फिर विनोद, यही तो ईश्वर था जो तुम्हारे यहां आते ही चला गया।कन्फ्यूशियस शिष्यों को साथ लेकर घर लौट पड़े। उन्होंने बताया कि निष्काम ज्ञान के रूप में यह बुढ़िया ही सच्ची ज्ञानवती है जो ज्ञान का संबंध किसी उपयोग या लाभ से नहीं जोड़ती, वरन् उसे उन्मुक्त रख कर स्वयं भी मुक्त भाव का अनुभव करती है।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का प्रमुख स्त्रोत है।

- सुमित्रानंदन पंत

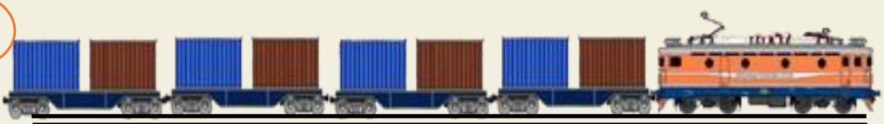

फैसल अहमद | कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्यालय

मुद्रा स्फ़ीति की समस्या

मूल्य-वृद्धि एक प्रबल समस्या है। हमारे देश में यह एक आम बात है। मूल्य वृद्धि का अर्थ है वस्तुओं और सामग्रियों की कीमतों में वृद्धि होना। मूल्य-वृद्धि की वजह जो भी हो, इससे प्रभावित साधारण लोग ही होते हैं। मूल्य वृद्धि के कारण लोगों का जीवन सामान्य नहीं रह पा रहा है। अगर इसी तरह से वस्तुओं और खाद्य पदार्थों की कीमतों में बढ़ोतरी हुयी तो देश की प्रगति और संतुलन पर प्रभाव पड़ेगा। मूल्यों में वृद्धि तभी होती है जब मांग और पूर्ति में कोई सामंजस्य नहीं बैठता है। लोगो का जीवन मूल्य वृद्धि की वजह से अस्त व्यस्त हो गया है। कभी-कभी कालाबाजारी तुच्छ खेल खेलते हैं। कई धोखेबाज़ व्यापारी कालाबाज़ारी करके लोगो को ठगते है। वस्तुओं की कीमत को बढ़ाकर जनता को लूट लेते है। वस्तुओं की कमी करके , उन वस्तुओं को जमा कर लिया जाता है। जब लोगो में उस वस्तु को पाने की मांग बढ़ जाती है , तब दुकानदार उसके दाम को दुगुना करके उसे बेचते है यह लोगो के लिए गंभीर चिंता का विषय बन चुका है। जमाखोरी भी कुछ ऐसा ही है जहां वस्तुओं को किसी स्थान पर भण्डार करके रख लिया जाता है। वक़्त आने पार उन्हें अधिक कीमतों में बेचकर दुकानदार अपना मुनाफा कमाते है।तस्करी करना भी मूल्य वृद्धि यानी महंगाई का और एक कारण है। इसमें विदेशी सामानो की चोरी की जाती है। वह आयत के पैसे भी नहीं चुकाते है और अपने देशो में भी उन्ही के दाम में बेचते है। भ्रष्टाचार भी मूल्य वृद्धि का मज़बूत कारण है। इस दुनिया में लोगो को अधिक धन चाहिए और इसलिए वह अनैतिक तरीको से धन कमाते वर्तमान मूल्य वृद्धि की समस्या को रोकने का एकमात्र उपाय यही है कि जनता का नैतिक उत्थान किया जाये। उसको ऐसी नैतिक शिक्षा दी जाये, जिसका उसके हृदय

पर प्रभाव हो। इसके लिये यह परमावश्यक है हो जाता है कि उसे उच्चकोटि की नैतिक शिक्षा दी जाए, जिससे उसका हृदय पवित्र हो और व्यक्तिगत स्वार्थ की अपेक्षा वह राष्ट्र हित और देश-हित को सर्वोच्च समझे। दूसरा उपाय है, शासन का कठोर नियन्त्रण। जो भी भ्रष्टाचार को मिलावट करे या ज्यादा भाव में सामान बेचे उसे कठोर दण्ड दिया जाये। जिस अधिकारी का आचरण भ्रष्ट पाया जाये, उसे नौकरी से हटा दिया जाये या फिर कठोर कारावास दिया जाये, इस प्रकार घूस-खोरी समाप्त हो सकती है। आप जानते हैं कि बिना टेढी उंगली किये तो घी भी नहीं निकलता, फिर यह तो सवा सौ करोड़ जनता का शासन रहा। मूल्यवृद्धि के सम्बन्ध में जनसंख्या की वृद्धि या जीवन-स्तर आदि कारण भी महत्त्वपूर्ण है।

वर्तमान में भ्रष्टाचार और अनाचार भारतीय समाज का पर्याय बन गया है। आर्थिक विषमतायें दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। भ्रष्टाचार मुक्त क्षेत्र ढूंढ पाना लगभग असंभव हो गया है। उचित-अनुचित का विचार प्रायः लुप्त हो रहा है। धन की उपलब्धता सुगम हो रही है अतः मूल्यों पर अंकुश लगाना संभव नहीं हो पा रहा है। यदि मूल्यवृद्धि इसी गति से बढ़ती रही तो समाज में अराजकता फैलने में देर नहीं लगेगी। अतः आवश्यक है कि राष्ट्र के खेवनहार निःस्वार्थ ही नहीं निष्पक्ष होकर आर्थिक नीतियों का निर्माण करेंऔर उनके कार्यान्वयन में किसी प्रकार की ढील न हो। भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना

सबसे बड़ी चुनौती है। योजनाओं का सफल कार्यान्वयन नितान्त आवश्यक है। आयात हतोत्साहित हो तथा निर्यात को प्रोत्साहन दिया जाये। शिक्षा प्रभावी हो तथा रोजगार पर कहो, जनसंख्या वृद्धि पर प्रभावी रोक लगे तथा बेरोजगारी दूर हो। ये सभी उपाय मूल्यवृद्धि को रोकने में किसी न किसी प्रकार कारगर सिद्ध होंगे। इस दिशा में सरकारी प्रयत्नों को और गति देने की आवश्यकता है, जिससे शीघ्र ही जनता को सुख-सुविधायें मिल सकें। यदि देश में अन्न-उत्पादन इसी गति से होता रहा और जन-कल्याण के लिये शासन का अंकुश कठोर न रहा और जनता में जागरूकता न रही तो मूल्य वृद्धि को कोई रोक नहीं सकता और परिणाम यह होगा कि गरीब सब्जी से रोटी नहीं खा सकेगा क्योंकि 100 रुपये किलो जहाँ टमाटर होगा और 40 रुपये किलो आलू होगा, 110 रुपये किलो दालें होंगी और दैनिक वेतन होगा मात्र 250 रुपये और रोजगार मिलेगा वर्ष में 100 दिन तब उस देश का क्या होगा। इस भयंकर समस्या से मुक्ति पाने के लिए हमें अविलम्ब उपाय करने चाहिए। सरकार को परिवार नियोजन कार्यक्रम को तेजी से चलाना चाहिए जिससे जनसंख्या की वृद्धि पर रोक लगे । मुद्रास्फीति पर भी अंकुश लगाना होगा। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर कदम उठाने चाहिए। वितरण की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। सहकारी उपभोक्ता भण्डारों की स्थापना तथा सार्वजनिक वितरण व्यवस्था के द्वारा मुनाफाखोरी, जमाखोरी और कालाबाजारी की प्रवृत्ति को रोका जा सकता है। ऊर्जा के स्रोतों को बढ़ाने का प्रयास होना चाहिए ताकि हम आत्मनिर्भर हो सकें। सरकार को मिल तथा कारखानों में काम करने वाले मजदूरों की हिस्सेदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। उपयुक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि विकासशील तथा नियोजित अर्थव्यवस्था के प्रारंभिक युग में मुद्रास्फीति की हल्की मात्रा लाभ पहुंचाने वाली होती है, क्योंकि वह उत्पादन, रोज़गार, आय तथा सरकारी विकास योजनाओं को गतिशीलता प्रदान करती है, किंतु मुद्रास्फीति का प्रयोग दवा की भाँति ही करना उचित है।

सुदेव कुमार बराल,
कार्यालय सहायक, कॉर्पोरेट कार्यालय

संतोषजनक व्यक्ति

एक समय की बात है एक बुजुर्ग व्यक्ति भ्रमण करते हुए किसी नगर में जा रहे थे। मार्ग पर चलते-चलते उन्हें एक रुपये का सिक्का मिला। बुजुर्ग व्यक्ति बहुत ही सीधे-साधे एवं संतोषजनक स्वभाव के थे। आखिर वे उस सिक्के का क्या करते? अतः उन्होंने वह सिक्का किसी गरीब व्यक्ति को देने का विचार अपने मन में बनाया। काफी दिनों तक ऐसा ही चलता रहा, वे किसी गरीब व्यक्ति को तलाश करते रहे परन्तु उन्हें कोई गरीब व्यक्ति नहीं मिला। समय बीतता गया एक दिन उन्होंने देखा कि एक राजा अपनी सेना के साथ दूसरे राज्य पर चढ़ाई करने जा रहा है। उस बुजुर्ग व्यक्ति ने एक रुपये का सिक्का राजा के ऊपर फेंक दिया। इस पर राजा को काफी गुस्सा भी आया और वह आश्चर्यचकित भी थे क्योंकि एक रुपये का सिक्का एक बुजुर्ग व्यक्ति ने फेंका था इसलिए राजा ने उस बुजुर्ग व्यक्ति से ऐसा करने का कारण पूछा। इस पर बुजुर्ग व्यक्ति ने राजा से कहा - "राजन! मुझे एक रुपये का सिक्का मिला, और उस सिक्के का मैंने किसी गरीब व्यक्ति को देने का निश्चय किया था। लेकिन मुझे तुम्हारे बराबर कोई गरीब व्यक्ति नहीं मिला, क्योंकि जो व्यक्ति इतने बड़े राज्य का अधिपति होकर भी दूसरे राज्य पर चढ़ाई करने जा रहा हो और इसके लिए युद्ध में अपार संहार करने को व्याकुल हो रहा हो तो उससे ज्यादा गरीब व्यक्ति और कौन होगा?" कुछ समय पश्चात राजा का क्रोध शांत हुआ और अपनी भूल पर पश्चाताप करते हुए उस बुजुर्ग व्यक्ति से माफी मांगी और वापिस अपने देश के लिए प्रस्थान कर लिया।

विजेता | कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्यालय

महिला सशक्तिकरण

महिलाएं हमारे समाज में उनके जन्म से लेकर जीवन के अंत तक विभिन्न प्रकार की महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाती हैं। वह लगभग सभी भावों में ब्रह्मांड की रचनात्मक शक्ति है। जीवन उसके गर्भ में शुरू होता है और उसके मार्गदर्शक हाथों और कोमल देखभाल की बदौलत ही फल फूल पाता है। महिलाओं को प्राचीन समय से भारत में एक शीर्ष स्थान दिया जाता है, हालांकि उन्हें सभी क्षेत्रों में भाग लेने के लिए सशक्तिकरण नहीं दिया गया था। उन्हें अपने विकास के लिए हर पल मजबूत, जागरूक और सतर्क रहने की जरूरत है। आधुनिक समाज में कुशल भूमिका में सभी भूमिकाएं और समय पर नौकरी करने के बाद भी, वह कमजोर है क्योंकि पुरुष अभी भी समाज में मजबूत माना जाता हैं। सरकार द्वारा समाज में बहुत सारे जागरूकता कार्यक्रमों, नियमों के बाद भी, उसका जीवन एक आदमी की तुलना में अधिक जटिल है। उसे बेटी, बहन, बहू, पत्नी, माँ, सास, दादी, आदि के रूप में अपना और परिवार के सदस्यों का ख्याल रखना पड़ता है। स्वयं, परिवार और देश के उज्वल भविष्य के लिए बाहर आने और नौकरी करने में वह सक्षम है। आधुनिक भारतीय समाज में महिलाएं वास्तव में आगे हैं यदि हम उनकी तुलना प्राचीन काल से करते हैं लेकिन अगर हम महिला सशक्तिकरण के बारे में बात करते हैं, तो हम कह सकते हैं कि वास्तव में सभी क्षेत्रों में महिलाएं सशक्त नहीं हैं। इतना आगे होने के बाद भी महिलाओं को कठिन परिस्थितियों को हराते हुए लंबे रास्ते से जाने की जरूरत है।

”महिलाओं को शिक्षित करना और उन्हें शक्ति देना बहुत महत्वपूर्ण है जिसका समाज में महिला सशक्तिकरण और समाज के विकास के लिए अनुसरण करने की आवश्यकता है। क्योंकि यह सच है कि, अगर कोई पुरुष शिक्षित और सशक्त हो रहा है, केवल तभी उसे लाभान्वित किया जा सकता है, जबकि अगर एक महिला शिक्षित और सशक्त हो रही है, तो पूरे परिवार और समाज को फायदा हो सकता है।

महिलाएं दुनिया की आधी आबादी हैं जिसका मतलब है दुनिया की आधी ताकत। अगर किसी भी देश की महिलाओं को सशक्त नहीं किया जाता है तो इसका मतलब है कि देश में आधी शक्ति का अभाव है। स्वभाव से, महिलाएं अपनी सभी भूमिकाएं बड़ी जिम्मेदारियों के साथ निभाती हैं और एक स्वस्थ परिवार, ठोस समाज और शक्तिशाली देश बनाने की क्षमता रखती हैं। बहुत सारे प्रयास किए गए हैं लेकिन अभी भी महिलाएं पिछड़ी हुई हैं और घरेलू गतिविधियों तक सीमित हैं। हमें यह समझने की जरूरत है कि अगर एक अशिक्षित महिला घर को ठीक से संभाल सकती है तो एक अच्छी शिक्षित महिला पुरुषों की तरह देश का नेतृत्व क्यों नहीं कर सकती है।

महिलाओं के बिना पुरुषों के लिए कुछ भी संभव नहीं है, वे समाज की मूल इकाई हैं, वे एक परिवार बनाते हैं, परिवार एक घर बनाते हैं, एक घर समाज बनाते हैं और अंततः समाज एक देश बनाते हैं। महिलाओं की सभी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को समाजों द्वारा कभी भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। शिक्षा और महिला सशक्तीकरण के बिना परिवार, समाज और देश में कोई विकास संभव नहीं है। महिलाओं को अच्छी तरह से पता है कि कैसे बात करना है, कैसे व्यवहार करना है, विभिन्न वर्गों के लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना है, आदि। वह सभी स्थितियों को संभालना जानती हैं क्योंकि वह एक अच्छे समाज की बुनियादी बातों को अच्छी तरह से जानती हैं और मुख्य भूमिका के रूप में विनम्रता से अपनी भूमिका निभाती इससे पहले, जब महिलाओं का जीवन दासों से भी बदतर था, तो महिलाओं को जानवरों के रूप में माना जाता था और सेक्स खिलौने के रूप में उपयोग किया जाता था। महिलाओं के लिए एक लड़की को जन्म देना एक पाप था, या तो उन्हें मार दिया गया, जिंदा दफना दिया गया या परिवार के पुरुष मुखिया द्वारा फेंक दिया गया। हालाँकि, समाज में कुछ हद तक सुधार देखा गया है लेकिन आज भी कई पिछड़े इलाकों में यह चला आ रहा है और महिलाओं को इन कृत्यों को सहना पड़ रहा है।

वैशाली कंसल | कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्यालय

शिक्षा का महत्व

किसी भी समाज व देश के लिये आवश्यक होता है कि हर व्यक्ति शिक्षित हो तभी विकास संभव है क्योंकि जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में भोजन, कपड़े, हवा और पानी का महत्व है ठीक उसी प्रकार शिक्षा का भी महत्व है शिक्षा का मानव जीवन में बहुत अधिक महत्व है इसलिये शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि सभी मनुष्य भली भांति प्राप्त कर सके शिक्षा हमें विभिन्न प्रकार का ज्ञान और कौशल को प्रदान करती है यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो हमारे जन्म के साथ ही शुरु हो जाती है और हमारे जीवन के साथ ही खत्म होती है शिक्षा मनुष्य के अंदर अच्छे विचारों को भरने और मन के अंदर से बुरे विचारों को निकाल बाहर करती है और मनुष्य के जीवन का मार्ग दर्शन करती है। यह मनुष्य को समाज में प्रतिष्ठित करने का कार्य करती है

पुराने समय में शिक्षा का बहुत महत्व था सभ्यता संस्कृति और शिक्षा का उदय सबसे पहले भारत में हुआ था प्राचीन काल में शिक्षा का स्थान नगरों और शोरगुल से बहुत दूर वनों के गुरुकुल में होता था इन गुरुकुलों का संचालन ऋषि-मुनि करते थे उस समय में छात्र अपने गुरु के चरणों में बैठकर ही पूरी शिक्षा प्राप्त करते थे आज के युग में माता-पिता अपने बच्चे के प्रारंभिक बचपन के विकास को संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं बच्चों को शिक्षा का पहला अनुभव अपने घर से मिलता है एक बच्चे के जीवन में उसका पहला स्कूल(प्रथम पाठशाला) उसका परिवार होता है वही से बच्चे को प्रारंभिक शिक्षा का ज्ञान प्राप्त होता है जब हम स्कूल और कॉलेज में पढ़ने जाते हैं तो वहाँ पर भगवान के रूप में हमें गुरु मिलते हैं जो हमें शिक्षा का सही महत्व बताते हुए हमारे जीवन से अंधकार को दूर करते हुए प्रकाश भरते हैं

वर्तमान युग में शिक्षा का महत्व बहुत बढ़ गया है अब अगर हम अपना भविष्य बेहतर और उज्वल बनाना चाहते हैं तो उसके लिए शिक्षा प्राप्त करना बहुत ही ज़रूरी है शिक्षा के बिना हम अपने जीवन में कुछ भी अच्छा नहीं कर सकते हैं यदि हम अपने जीवन में कुछ अच्छा और बड़ा करना चाहते हैं तो सबसे पहले हमें शिक्षित होना होगा। जो व्यक्ति उच्च शिक्षा ग्रहण करता है उस व्यक्ति का स्तर अपने परिवार, दोस्तों और समाज के सामने हमेशा ऊंचा रहता है उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वाले लोगों की पहचान अपने आप ही अलग बनती चली जाती है

क्योंकि आज पूरी दुनिया में चीज़ें इतनी आधुनिक होती जा रही हैं कि जिन्हें सिर्फ शिक्षा के माध्यम से ही समझा जा सकता है तकनीक से जुड़ी चीज़ों को सीखने और समझने के लिए शिक्षा की भूमिका सबसे अहम है जैसे-जैसे समय बदलता जा रहा है उसके साथ शिक्षा का तंत्र भी पूरी तरह से बदल रहा है स्कूलों, कॉलेजों और ट्यूशन में होने वाली पढ़ाई अब मोबाइल पर ऑनलाइन क्लास के रूप में हो रही है अब हम पढ़ाई करने के साथ-साथ अपनी आय के स्रोत भी तलाश सकते हैं विश्व टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में इतना आगे बढ़ चुका है कि अब हम अपने मोबाइल, टेबलेट, लेपटॉप, कम्प्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से भी बिना किसी रुकावट के आसानी से पढ़ाई कर सकते हैं शिक्षा की ज़रूरत किसी एक धर्म, जाति, वर्ग या समुदाय के लोगों को नहीं बल्कि सभी को है शिक्षा की जितनी ज़रूरत आज एक पुरुष को है तो उतनी ज़रूरत एक स्त्री को भी है स्त्री और पुरुष दोनों को ही समान और स्वतंत्र रूप से शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार है एक शिक्षित समाज का निर्माण स्त्री और पुरुष दोनों से मिलकर ही किया जा सकता है एक पुरुष जब शिक्षित होता है तो वह केवल एक परिवार या एक समाज का ही विकास करता है लेकिन अगर एक स्त्री शिक्षित होती है तो वह एक नहीं बल्कि दो परिवार और दो समाज का विकास करने में मदद करती है। शिक्षा के दम पर हम अपने भविष्य को उज्वल बना सकते हैं शिक्षा ही है जो किसी भी व्यक्ति की छिपी हुई प्रतिभा और कौशल को जगाती है जो व्यक्ति शिक्षित होता है उस व्यक्ति का जीवन हमेशा खुशहाल ही रहता है अगर उसके जीवन में कोई परेशानी या तकलीफ आती भी है तो वह अपनी शिक्षा और समझ से बहुत ही आसानी से उस परेशानी का हल निकाल ही लेता है शिक्षा हमें जीवन में एक बेहतर नागरिक बनाने में हमारी मदद करती है शिक्षा से हम

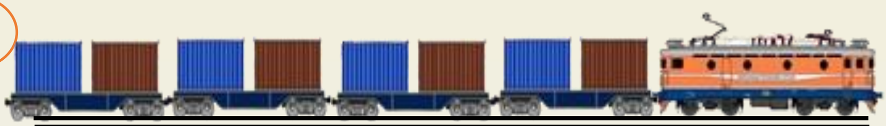

शिष्टाचार अपने चरित्र का निर्माण करते है और शिक्षा से हमारे विचारों में सकारात्मक आती है। शिक्षा हमारी नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदलती है।

हम सभी जानते हैं कि, शिक्षा हमारे जीवन में कितनी महत्वपूर्ण है। शिक्षा के साथ हम बहुत सारी चीजें कर सकते हैं। आज नौकरी या व्यवसाय हो या कोई भी अन्य काम को करने के लिए शिक्षा मूल आवश्यकता है। जीवन में पैसे कमाने के लिए भी शिक्षा जरूरी है। आज हमारी दुनिया के हर क्षेत्र में शिक्षा आवश्यक है। इससे पता चलता है, हमारे जीवन में शिक्षा का क्या महत्व है।

शिक्षा ही हमें अपने आस-पास की दुनिया का ज्ञान देती है शिक्षा राष्ट्र के विकास में सबसे महत्वपूर्ण होती है शिक्षा के बिना हम कुछ भी नया कर या सोच नहीं सकते हैं यानी हम नए विचार नहीं ला सकते हैं। इसका मतलब शिक्षा के बिना किसी भी प्रकार का विकास संभव नहीं है।

अग्निवीर का अग्निपथ

संजय जोशी, कार्यालय सहायक

जो चले देश कि रक्षा करने वे अग्निवीर कहलाते हैं,
देश कि शान जो रखते हैं वे अग्निवीर कहलाते हैं,
लिए हाथ में तिरंगा जो शरहद पर तैनाती देते हैं,
देश कि खातिर जान देने वाले अग्निवीर कहलाते हैं,

कड़ी धूप में कड़ी ठंड में जो शरहद पर डट जाते हैं,
देश कि रक्षा कि खातिर जो दुश्मन से लड़ जाते हैं,
आती है जब आपदा तो हमको वे बचाते हैं,
देश कि खातिर खुद को जो कुर्बान कर जाते हैं,

घर को भूल जो देश के लिए जीते मरते है,
ऐसे ही तो वीर सपूत अग्निवीर कहलाते हैं।
जो दुश्मन पर कहर बन कर बरस जाते हैं,
अपने ही जवानों पर पत्थर चलाते हैं,
जो देश कि खातिर अपनी जान गवाते हैं,
हमारे अपने ही उन पर सवाल उठाते हैं,
वो ही तो देश के अग्नीवीर कहलाते हैं,

जो भारत माता कि खातिर शहीद हो जाते हैं,
हम उन पर ही ना जाने क्यों सवाल उठाते हैं,
देश के वीर जवान भारत के अग्नि वीर कहलाते हैं।

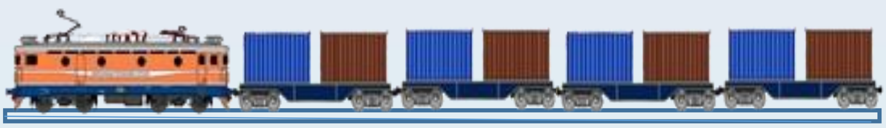

अभिषेक शर्मा | कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्यालय

बेरोज़गारी एक चुनौती या स्वनियोजितता ही समय की मांग

जीविकोपार्जन के लिए किये जाने वाले कार्य को रोजगार कहते हैं , जैसे शिक्षक, डाक्टर, इंजीनियर, प्रबन्धक, वकील, श्रमिक, कलाकार, आदि रोजगार के साधन या रोजगार हैं | रोजगार सभी के लिए आवश्यक है एवं रोजगार के बिना किसी भी मनुष्य का जीविकोपार्जन अत्यंत जटिल एवं कष्टकारी है | जब कोई मनुष्य रोजगार या व्यवसाय के बिना जीवन व्यतीत करता है उसे बेरोजगार कहा जाता है। बेरोजगारी में केवल अनैच्छिक बेरोजगारी को सम्मिलित किया जाता है। अनैच्छिक बेरोजगारी को आगे चक्रीय बेरोजगारी, मौसमी बेरोजगारी, संरचनात्मक बेरोजगारी, संघर्षात्मक बेरोजगारी तथा प्रच्छन्न बेरोजगारी में विभाजित किया जा सकता है। बेरोज़गारी एक राजनीतिक, सामाजिक मुद्दा है | चाहे भारत हो या अमेरिका बेरोज़गारी सभी अर्थव्यवस्था के लिए चुनौती है एवं प्रत्येक देश को उसकी आजादी, स्थापना से ही इस समस्या से जूझना पढ़ रहा है जो की आज भी एक मुद्दा है एवं प्रत्येक देश में हर राजनीतिक गुट का चुनावी मुद्दा है। बेरोजगारी का सर्वप्रथम कारण बढ़ती जनसंख्या है। किसी भी देश में जनसंख्या के दो घटक होते हैं: श्रमशक्ति, गैर-श्रम शक्ति

श्रम शक्ति : वे सभी व्यक्ति, जो किसी ऐसे कार्य में संलग्न है जिससे धन का उपार्जन होता हो। यहाँ पर याद रखने वाली बात ये है कि कभी-कभी व्यक्ति धन उपार्जन तो करना चाहता है और वो काम की तलाश भी करता है लेकिन उसे काम नहीं मिलता है, ऐसे ही व्यक्तियों को बेरोजगार की श्रेणी में रखा जाता है

गैर-श्रम शक्ति : वे सभी लोग जो किसी धन उपार्जन करने वाले काम में संलग्न न हो और न ही वो ऐसे किसी काम की तलाश कर रहा हो, तो ऐसे व्यक्तियों को बेरोजगार नहीं कहा जाता है; जैसे कि बच्चे, बूढ़े, किशोर एवं किशोरियाँ। कुल मिलाकर एक बेरोजगार व्यक्ति वह है, जो धन उपार्जन करना चाहता है और वह रोजगार की तलाश में भी है लेकिन रोजगार पाने में असमर्थ है, इसीलिए इसे अनैच्छिक बेरोजगारी कहा जाता है।

वहीं दूसरी तरफ, ऐसे व्यक्ति जो खुद ही काम नहीं करना चाहता या अगर करना भी चाहता है तो सैलरी कम मिलने के कारण नहीं करता है, तो ऐसी स्थिति को ऐच्छिक बेरोजगारी कहा जाता है क्योंकि काम तो उपलब्ध है लेकिन किसी कारण से व्यक्ति खुद ही नहीं करना चाहता है।

चाहे किसी भी प्रकार की बेरोजगारी हो या कितनी भी जनसंख्या हो , पिछले कुछ 10 वर्षों में मनुष्य जीवन में जो बदलाव आए हैं उन्होंने सभी का जीने का तरीका बदल दिया है अब अगर हम देखें तो कागज़ की जगह टैब और मोबाइल ने ले ली, पैसे की जगह गूगल-पे ने ले ली उसी प्रकार मनुष्य जीवन में कई रोजगार मानो ख़त्म से हो गए हैं एवं जिस प्रकार धीरे धीरे विज्ञान प्रगति कर रहा है लगता है मानो स्वयं ही सभी कार्य हो जाया करेंगे जैसे अभी सुनने में आया बेंगलोर के एक होटल ने वेटर की जगह कुछ रोबोट को खरीद लिया |

इसी प्रकार सभी रोजगार धीरे धीरे ख़त्म होते जा रहे है और समय की ज़रूरत है की अब हम केवल रोजगार ही न ढूंढते रहें बल्कि स्वयं का कोई व्यवसाय बढाएं एवं उसे अपनी आजीविका का साधन बनाएं। यदि देखा जाये तो स्विगी, ज़ोमेटो आदि के मालिक ने भी रोजगार छोड़ कर यह व्यवसाय खड़े किये जो आज करोड़ों कमा रहे हैं। आज यह समय की मांग है की हम बेरोजगारी पर ही बात न करते रहे एवं इसे मुद्दा न बनाते रहे एवं अपने परिचित युवा साथियों को प्रोत्साहित करें की वे पहले रोजगार ढूंढें एवं योग्य रोजगार न मिलने पर यूं ही ना भटकें बल्कि अपने हुनर, बुद्धि का प्रयोग कर किसी व्यवसाय आदि की शुरुआत करें जो की न सिर्फ आगे चल कर आपको आर्थिक मदद देगा बल्कि समाज कल्याण में भी योगदान देगा।

भुवन चंद्र | कार्यकारी सहायक, कॉर्पो. कार्यालय

मानवता के लिए योग

स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा था कि योग अतीत के जीवन की कोई कपोल कथा नहीं है। यह वर्तमान की सर्वाधिक मूल्यवान विरासत है। यह वर्तमान युग की अनिवार्य आवश्यकता और आने वाले युग की संस्कृति है। सरस्वती जी के यह विचार आज भी प्रासंगिक हैं। आज भारत के ऋषि मुनियों द्वारा दी हुई योग परंपरा का विश्व लोहा मान चुका है। हाल ही मैं हमने 21 जून को योग दिवस मनाया। कोविड काल के बाद यह योग दिवस इस मायने में भी खास था कि फिर से सामूहिक रूप से लोग एक साथ जुड़कर योग कर पाए और यह सिर्फ भारत में ही नहीं विश्वभर में हुआ। इस बार योग दिवस की थीम थी **'मानवता के लिए योग'**। सच में इस थीम के कई निहितार्थ है क्योंकि दुनिया में मची उथल-पुथल में भारत ने हमेशा शांति का मार्ग ही सुझाया है। भारत स्वयं शांति के मार्ग का पक्षधर रहा है और दुनिया भर से भी उसने शांति के लिए ही अपील की है।

हम सभी जानते हैं कि भारतीय लोगों को योग प्रकृति के वरदान के रूप में विरासत में मिला है। योग का अभ्यास एक बेहतर इंसान बनने के साथ एक तेज दिमाग, स्वस्थ दिल और एक सुकून भरे शरीर को पाने के तरीकों में से एक है। योग अपने अद्भुत स्वास्थ्य लाभों के लिए जाना जाता है। 2015 से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की शुरूआत हुई और आज विश्व भर में यह मनाया जाने लगा है। 21 जून योग दिवस हमारे जीवन में इस प्राचीन भारतीय कला को अनमोल करने के महत्व पर बल देने का एक महान प्रयास है।

योग की उत्पत्ति : माना जाता है कि भारतीय पौराणिक युग से योग की जड़े जुडी हुई हैं। ऐसा कहा जाता है कि यह भगवान शिव थे जिन्होंने इस कला को जन्म दिया। शिव, जिन्हें आदि योगी के रूप में भी माना जाता है, को दुनिया के सभी योग गुरुओं के लिए प्रेरणा माना जाता है।

सामान्यतः यह माना जाता है कि यह उत्तर भारत में सिंधु-सरस्वती सभ्यता थी जिसने 5000 साल पहले इस शानदार कला की शुरूआत की थी। ऋग्वेद में पहली बार इस अवधि का उल्लेख किया है। हालांकि योग की पहली व्यवस्थित प्रस्तुति शास्त्रीय काल में पन्तजलि द्वारा की गई है।

भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, जिन्होंने योग दिवस मनाने का विचार प्रस्तावित किया, ने सुझाव दिया कि यह 21 जून को मनाया जाना चाहिए। उनके द्वारा सुझाई गई इस तारीख का कारण सामान्य नहीं था। इस अवसर को मनाने के लिए प्रस्तावित कुछ कारण हैं।

21 जून उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन है और इसे ग्रीष्मकालीन अस्थिरता कहा जाता है। यह दक्षिणायन का एक संक्रमण प्रतीक है जिसे माना जाता है कि यह एक ऐसी अवधि होती है जो आध्यात्मिक प्रथाओं का समर्थन करती है। इस प्रकार योग की आध्यात्मिक कला का अभ्यास करने के लिए एक अच्छी अवधि माना जाता है।

इसके अलावा किंवदंती यह है कि इस संक्रमण काल के दौरान भगवान शिव ने उनके साथ योग की कला के बारे में ज्ञान साझा करके आध्यात्मिक गुरुओं को प्रबुद्ध किया। इन सभी बिंदुओं को संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) ने माना था और 21 जून को अंततः अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दी गई थी। तब से अब तक विश्व भर में योग दिवस मनाया जाने लगा है। भारत समेत विदेशों में भी अब योग दिवस पर बड़े आयोजन होने लगे हैं जो भारत की संस्कृति की शक्ति को दर्शाता है।

अमित सक्सेना | कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्यालय

मुंशी प्रेमचंद

संघ लोक सेवा आयोग के वैकल्पिक विषय हिंदी साहित्य की परीक्षा हो या जीवन के संघर्ष के किसी भी दौर की परीक्षा हर परीक्षा को पास करने के लिए हमें प्रेमचंद की कालजयी कहानियां व उपन्यास प्रेरित करने व मार्गदर्शन दिखाने का काम करते हैं। प्रेमचंद की कहानियों ने समाज के हर उस वर्ग की पीड़ा की कहानियों में व्यक्त किया जो शायद सामाजिक पटल पर कहीं न कहीं अछूती ही रहती थीं। प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यासों की 'कर्मभूमि' ही नहीं बदली बल्कि उनका कायाकल्प भी किया है। प्रेमचंद ने अपनी पहली कहानी 1907 में **'संसार का सबसे अनमोल रत्न'** लिखी जो उर्दू पत्रिका 'जमाना' में उस समय प्रकाशित हुई। यह वह काल था जब हिंदी कहानी अपने शैशव काल में थी। प्रेमचंद ने अपनी 30 वर्ष के रचना काल (1907-1936) में करीब 300 कहानियां लिखीं। इन कहानियों को मानसरोवर के 8 खंडों में संकलित किया गया है। प्रेमचंद की कहानियों को साहित्यकार दो चरणों में विभाजित करते हैं। प्रथम चरण 1907-1925 एवं दूसरा चरण 1925-1936 है। पहले चरण में 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' इसमें आदर्शवाद, भारतीय परंपरा, हृदय परिवर्तन तथा अन्य गांधीवादी मान्यताओं की गहरी छाप है। **'पंच परमेश्वर', 'बड़े घर की बेटी' 'बूढ़ी काकी'** इस चरण की कहानियां हैं। पंच परमेश्वर में प्रेमचंद भारतीय पारंपरिक न्याय प्रणाली का ब्रिटिश न्याय प्रणाली से बेहतर सिद्ध करना चाहते हैं वहीं इस दौर की सबसे प्रसिद्ध कहानी बड़े घर की बेटी में वह संयुक्त परिवार का महत्व व्यक्त करते हैं। बूढ़ी काकी कहानी में वृद्धि वर्ग की समस्या को उठाया और यह कहानी इस परिवार की बहू के हृदय परिवर्तन पर खत्म होती है। वहीं मुक्ति पथ में कहानीकार ने अपराधी के हृदय परिवर्तन को बहुत ही मार्मिक दृष्टिकोण रखकर लिखा है। इस कहानी का सार है कि यदि समुचित परिस्थितियां मिले तो बुरे से बुरा व्यक्ति का भी हृदय परिवर्तन हो सकता है यानी की उसे सुधार के रास्ते पर लाया जा सकता है। दूसरे चरण में प्रेमचंद पर आदर्शवाद का प्रभाव क्षीण होने लगता है और उनकी कहानियां पूर्णतः यथार्थ से आरंभ होकर यथार्थ पर ही समाप्त होती हैं। **'अलग्योझा' 'सदगति' 'पूस की रात' 'कफन'** जैसी कहानियां इनके दूसरे चरण की कहानियां हैं। अलग्योझा कहानी में प्रेमचंद ने संयुक्त परिवार के टूटने का वर्णन है कहानी का सार है कि ग्रामीण भारत में सामाजिक सुरक्षा संयुक्त परिवार से ही मिल सकती है किसी और व्यवस्था से नहीं। इस कहानी के पात्र रग्घू जैसे जी-तोड़ मेहनत करने वाले व्यक्ति की दुर्दशा का चित्रण है। कहानियों में कफन प्रेमचंद के यथार्थ वाद का उत्कर्ष है। इसके दो पात्र घीसू और माधव के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयास किया कि भूख और गरीबी इस हद तक व्यक्ति को संवेदनहीन बना सकती है कि निकटतम व्यक्ति की मृत्यु भी उस व्यक्ति को विचलित न कर सके। इसमें यथार्थवाद की सबसे अधिक मार्मिक स्थिति तब प्रकट होती है जब कफन के लिए एकत्रित किए गए पैसों पर भी पेट की भूख हावी होती है।

प्रेमचंद की कहानियों को यदि पढ़ने का मन हो तो अमृतराय द्वारा संपादित संकलन अवश्य ही पढ़ना चाहिए। इस संकलन में उनकी प्रमुख रचनाओं को समाहित किया गया है। निश्चित क्रम में पढ़ने पर प्रेमचंद की संपूर्ण कहानी यात्रा की समझ विकसित होती है। शुरुआत की कहानियों पर द्विवेदीयुगीन आदर्शवाद की छाप है तो अंतिम कहानियों में आदर्शवाद से उनका मोह भंग हो गया और ये कहानियां चरम यथार्थवाद की ओर बढ़ने लगीं। इस संकलन में कुछ कहानियां सार्वकालिक महत्व की हैं जबकि कुछ विकास यात्रा का समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। प्रेमचंद का लेखन हिंदी साहित्य की ऐसी विरासत है जिसके बिना हिंदी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। प्रेमचंद का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। 1921 में उन्होंने महात्मा गांधी के कहने पर अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद मर्यादा पत्रिका का संपादन सँभाला, छह साल तक माधुरी पत्रिका में बतौर संपादक कार्य किया । 1930 में बनारस से अपना मासिक पत्र हंस शुरु किया और 1932 में जागरण नामक एक साप्ताहिक और निकाला। हिंदी कहानी की तरह उनके उपन्यास **'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम' 'रंगभूमि' 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान'** प्रमुख हैं। गोदान का सिर्फ हिंदी साहित्य ही नहीं विश्व साहित्य में भी

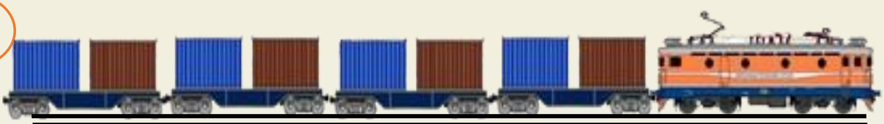

प्रमुख स्थान है। उनकी मृत्यु के बाद उनकी कहानियां 'मानसरोवर' शीर्षक से 08 भागों में प्रकाशित हुईं। जीवन के अंतिम दिनों में वह बीमारी के कारण 8 अक्टूबर 1936 को मृत्यु को प्राप्त हुए। उनका उपन्यास 'मंगलसूत्र' अधूरा ही रहा, जिसे उनके पुत्र अमृतराय ने पूरा किया।

जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें गति और शक्ति न पैदा हो, हमारा सौंदर्य प्रेम न जागृत हो, जो हममें संकल्प और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह हमारे लिए बेकार है तथा उसे साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं है" - मुंशी प्रेमचंद

डिजाइन एवं क्रिएशन

आकांक्षा अवस्थी,
पुत्री आदित्य अवस्थी,
प्रबंधक
सतर्कता एवं कॉर्पोरेट कार्यालय

देवेंद्र तंवर | कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्यालय

आधुनिक प्रगति की ओर बढ़ता ग्रामीण भारत

देश आजादी का 75वां अमृत महोत्सव मना रहा है। यह अवसर हमारी आजादी के दीवानों के बलिदानों से प्रेरणा लेने का समय है। हम जो आज संकल्प लेंगे वही संकल्प हमारा भविष्य तय करेगा। हम कई सुधारों से गुजर रहे हैं। कृषि, तकनीकी, रक्षा, सुरक्षा आदि क्षेत्रों में हमने पूर्व की गलतियों से सीख लेते हुए तकनीकी का समावेश करते हुए नए भारत की गाथा लिखने में अपना योगदान दिया है। कोविड काल में सभी ने देखा कि उस समय जहां सभी सेक्टर की अर्थव्यवस्था चरमरा रही थी तो कृषि ने ही देश की अर्थव्यवस्था को थामे रखा था। खाद आपूर्ति, कोविड काल में वैक्सीन मास्क का जरूरतमंद देशों को निर्यात कर भारत ने अपने **'बसुदेव कुटुम्बकम'** के उद्देश्य को बनाए रखा।

आर्थिक सर्वे 2020-21 के अनुसार कृषि क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान करीब 20 प्रतिशत है। गांव के विकास के प्रतिमान जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, बिजली, पानी और आर्थिक प्रतिमान जैसे क्षेत्रों में पिछले कुछ समय से अभूतपूर्व प्रगति देखने को मिली है। गांव में स्वास्थ्य, शिक्षा के बुनियादी ढांचे में बदलाव हुआ है जिसको लेकर ग्रामीण भारत की सोच बदली है। गांव की प्राइमरी पाठशाला में भी कई स्कूल अंग्रेजी माध्यम की तर्ज पर एवं स्वास्थ्य केंद्रों में चिकित्सकों की तैनाती ने ग्रामीणों के खोए हुए विश्वास को जगाया है। जनगणना, 2011 के अनुसार ग्रामीण भारत में 68.84 प्रतिशत आबादी रह रही है। देश में पीएम ग्राम सड़क योजना के जरिए 07 लाख किमी. से अधिक पक्की सड़कें, 06 हजार पुल ने ग्रामीण यातायात को सुगम बनाया है। वर्ष 2020-21 में कृषि उत्पादन में वृद्धि के कारण भारत की निर्यात आमदनी 50 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंच गई है। किसान रेल जैसी सुविधाओं ने दूरस्थ इलाकों में स्थित किसानों को महानगरों तक अपने उत्पाद बेचने का अवसर प्रदान किया है। मार्च 2022 तक किसान रेल के माध्यम से 153 मार्गों पर 06 लाख टन कृषि उपज का परिवहन किया गया है। ग्रामीण संपर्क से उडयन सेवाओं में निहित संभावनाएं लंबे समय तक उपेक्षित रही है। उत्तर-पूर्व और पहाड़ी राज्यों के कृषि उत्पादों को हवाई परिवहन सेवा उपलब्ध कराने के लिए किसान उड़ान योजना शुरु की गई है।

गेम चेंजर होगी डीफसीसीआईएल: डीएफसी के जरिए मालगाड़ियों के लिए अलग रेलवे ट्रैक बनने से वस्तुओं की ढुलाई पर आने वाली लागत में कमी होगी। इससे फ्रेट कोरीडोर के स्टेशनों के आसपास सरकारी व निजी क्षेत्र के वेयरहाउस बनेंगे, जिससे कृषि उत्पादों की बर्बादी कम होगी। फ्रेट कोरीडोर जहां से गुजर रहा है उन ग्रामीण कस्बों व तहसीलों के आसपास नए बाजार विकसित हो रहे हैं। गति शक्ति के तहत सरकार ने 11 औद्योगिक कोरीडोर और 02 रक्षा कोरीडोर बनाने की योजना बनाई है।

स्वामित्व योजना : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और रोबोटिक्स तकनीक ने ग्रामीण संपर्क को ऊँचाई दी है। भूमि के मालिकाना हक प्रदान करने के डिजीटल व्यवस्था के तहत स्वामित्व योजना के अंतर्गत 29 अप्रैल, 2022 तक 1.30 लाख गांवों में ड्रोन सर्वे का काम पूरा हो चुका है। यह योजना पंचायती राज दिवस के अवसर पर 20 अप्रैल 2020 को शुरु की गई थी। योजना का उद्देश्य ग्रामीण भारत के लिए एक एकीकृत संपत्ति सत्यापन समाधान प्रदान करना है।

प्रधानमंत्री आवास योजना : आजादी के बाद लोक कल्याणकारी राज्य की इस अवधारणा को ग्रामीण भारत में ग्रामीणों ने सच होते हुए देखा है। मार्च, 2024 तक देश में हर व्यक्ति के 'अपने घर के सपने' के साकार होने की उम्मीद जगी है। अप्रैल, 2022 तक ग्रामीण इलाकों में 2.52 करोड़ आवास बनाए जा चुके है, इस योजना के दूसरे चरण हेतु 1.95 करोड़ मकानों के निर्माण हेतु केंद्रीय सहायता जारी की जा चुकी है। इन सब के बीच अभी भी बहुत सी चुनौतियां हैं जिन पर तेजी से काम जरूरी है। केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट के अनुसार देश के 91 जलाशयों में सिर्फ 20 प्रतिशत पानी ही बचा है। जलवायु परिवर्तन से यह समस्या गहराती जा रही है। यह स्थिति चिंताजनक है जब पीने के लिए पानी ही नहीं रहेगा तो फिर सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता कैसे होगी। भारत उन 70 देशों में से एक है जो मरुस्थलीरण का सामना करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीसीडी) में शामिल है।

देवप्रकाश | कार्यालय सहायक, कॉर्पो. कार्यालय

"वो चाय पर चर्चा"

एक बार एक सज्जन जिनका नाम अंशुल था, जो कि एक बैंक कर्मचारी थे, उनका तबादला हमारे छोटे से कस्बे मधुबनी में हुआ। अंशुल हमारे सामने वाले मकान में ही रहते थे। उनके परिवार में इनके पिता जी , पत्नी और दो बच्चे थे। बड़ी बेटी और छोटा बेटा दोनों स्कूल में पढ़ रहे थे। इनके पास एक गाड़ी भी थी जो कि अकसर गली में ही बाहरी दरवाजे के सामने खड़ी रहती थी।

हमारी सोसाइटी में ज्यादा घर नहीं थे, अकसर लोग भी घरों से कम ही बहार निकलते थे, लेकिन हफ्ते के अंत में सोसाइटी के पार्क में पड़ोसियों

से दुआ - सलाम हो जाया करती थी। एक दिन मैं सोसाइटी के पार्क में घूम रहा था तो सामने से अंशुल आते दिखाई दिए, वह अपनी बेटी के साथ टहल रहे थे, मैंने उन्हें हाथ जोड़कर नमस्ते की उन्होंने भी हाथ हिलाकर अभिवादन स्वीकार किया और पास आकर बतियाने लगे। बातों-बातों में पता लगा की आज अंशुल की बेटी का जन्मदिन हैं, जिनका नाम दिव्या था। मैने दिव्या को जन्मदिन की बधाई दी। दिव्या बोली "नहीं अंकल ऐसे नहीं , शाम को आप भी परिवार के साथ जन्मदिन पर आमंत्रित हैं, और हाँ, तोहफ़ा लाना मत भूलना", दिव्या की यह बात सुन अंशुल और मेरी हँसी छूट गई। अंशुल ने भी अनुरोध किया तो मैंने भी कहा "ठीक हैं - ठीक हैं, हम भी आएंगे आपके जन्मदिन पर तोहफ़ा लेकर" और यह सुनते ही सब जोर से हंसने लगे। इस छोटी सी मुलाकात के बाद हम अपने-अपने घर चले गए। घर पहुंचने पर मैं ने यह बात अपनी पत्नी सीमा को बताई, यह बात सुन वह बोली, ऐसे तो कोई भी राह चलते निमंत्रण दे देता है, नए लोग हैं ठीक से जानते भी नहीं हम नहीं जाएंगे। उसकी यह बात सुन मैं थोड़ा उदास हुआ क्योंकि मेरी आँखों में रह-रह कर दिव्या का चेहरा आ रहा था, लेकिन कर भी क्या सकते थे, फिर भी मैं पत्नी जी को बिना बताए बाजार से एक तोहफ़ा तो ले ही आया। अब शाम को मैं बाहर वाले कमरे में लेटा था और नजरे थी दरवाजे पर की जाए तो जाए कैसे। मैं यह सोच ही रहा था की दरवाजे पर दस्तक हुई। सीमा ने दरवाज़ा खोला तो सामने अंशुल और दिव्या खड़े थे, दोनों ने हाथ जोड़कर पत्नी का अभिवादन किया और दिव्या अंदर आते ही बोली "अंकल नमस्ते तैयार नहीं हुए ", मैं ने पत्नी श्री की तरफ देखा उसने भी ग्रीन सिगनल देते हुए मधुर मुस्कान दिखाई तो मैं ने भी कहा हा बेटा जी बस पांच मिनट में आ ही रहे थे। दिव्या बोली " जल्दी आना नहीं तो केक खत्म हो जाएगा ", मैं और मेरी पत्नी उसकी यह बात सुन हंसने लगे और वो दोनों गली में ही कुछ और पड़ोसियों को आमंत्रित करने चले गए।

अब पत्नी श्री को कोई शिकायत नहीं थी, तो हम दोनों तैयार होने लगे तभी सीमा ने टोका अरे उपहार तो लाये ही नहीं, यह सुन मैं ने उसे वह तोहफ़ा दिखाया जो अच्छे से सुन्दर कागज से लिपटा हुआ था। यह देख सीमा के चेहरे पर संतोष और आश्चर्य के बादल तैरते हुए देख मैं ने कहा जल्दी चलो नहीं तो केक खत्म हो जाएगा, डर था कुछ बवाल न हो जाए।

सामने ही घर था तो हमने घंटी बजाई, दरवाजा अंशुल जी की पत्नी ने खोल हम दोनों ने हाथ जोड़कर एक दूसरे का अभिवादन किया और भाभी जी से अंदर आने का इशारा मिलते ही हमने सोफा पकड़ लिया। अंदर का माहौल वाकई शानदार था, बच्चे हल्के संगीत के साथ उछल-कूद कर रहे थे और साज सज्जा भी देखने लायक थी। हॉल में ही हमारे दूसरे पडोसी शंकर त्रिपाठी, शम्भू दूधवाला और रामावतार भी आए हुए थे, मैं ने उन सभी को नमस्ते किया और साथ में ही बैठ गए। महिलाओं ने अपनी मंडली अलग बना ली। हम लोग बातों में व्यस्त ही थे कि भाभी जी चाय लेकर आ गई और शुरू हुई फिर 'चाय पर चर्चा'। चर्चा बड़ी गंभीर हुई शुरुआत हाल चाल से शुरू होते हुए, राजनीति गलियारों से दमदमाते

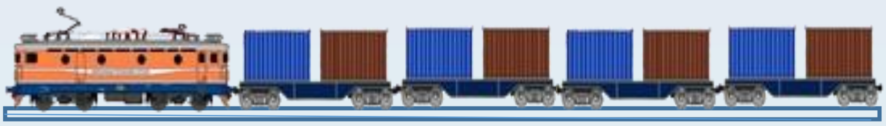

हुए, क्रिकेट और सदाबहार नब्बे के दशक के अदाकारों और सिनेमा सब छू लिए गए।

इतने में रामअवतार जी जो पेशे से पी. डब्ल्यू. डी. में अधिकारी थे और जिनका गली में ही मकान का निर्माण कार्य चल रहा था, कहने लगे आज सब एक साथ बैठे हैं बहुत अच्छा लग रहा हैं लेकिन हमारी गली में कुछ समस्याएं हैं। सब रामअवतार जी की तरफ गंभीर भाव से देखने लगे। रामअवतार जी बोले भाई शम्भू आप दूध का व्यापार करते हैं, बहुत अच्छी बात हैं पर गली में आप सही से सफाई नहीं कराते हैं, जिससे आने-जाने में समस्या हो रही हैं। शम्भू यह सुन बोले रामअवतार जी बात गंदगी की नहीं हैं जड़ तो अंशुल जी की गाड़ी हैं, जिसकी वजह से पानी जमा हो जाता हैं। शम्भू जी की यह बात सुन अंशुल जी थोड़ा शांत हो बोले, देखिए मैं गाड़ी अंदर कर सकता हूं पर त्रिपाठी जी के बाहरी ढलान के कारण गाड़ी अंदर नहीं जा सकती। अब चर्चा अपने निर्णायक मोड़ के तरफ जा रही थी और बॉल त्रिपाठी जी के पाले में थी। सभी पक्ष त्रिपाठी जी की तरफ ताक रहे थे इतने में दूसरी तरफ से आवाज आई चलो-चलो केक कटने वाला हैं और सभी ने केक खाया और दिव्या को सभी ने सुंदर - सुंदर उपहार दिए और घर वापस चले गए।

मैं घर पर उस चर्चा के बारे में सोच रहा था क्योंकि सार्थक चर्चा बे नतीजा हो गई थी की तभी बाहर से शोर आने लगा। मैं ने बाहर देखा कि त्रिपाठी जी अपना बाहरी ढलान तुड़वाकर अंदर करवा रहे हैं । इतने में और सभी पडोसी बाहर आ गए और पूछने लगे त्रिपाठी जी ये क्या कर रहे हैं? त्रिपाठी जी बोले "कई बार समस्या हमारी खुद की बनाई होती हैं, उसे जितनी जल्दी सवार लिया जाए ठीक हैं "। यह सुन सभी चुप हो गए किन्तु सभी की नजरों में त्रिपाठी जी के लिए सम्मान साफ दिख रहा था। थकावट सी लग रही थी तो मैं जाकर सो गया। अगली सुबह उठकर मैं ने अपने नित्य कर्म निपटा कर कार्यालय जाने के लिए बाहर जाने का दरवाजा खोला, "अरे वाह " मेरे मुख से निकला क्योंकि आज बाहर का दृश्य अलग था। अंशुल जी की गाड़ी अंदर थी, गली में गंदगी का नामोनिशान नहीं था, त्रिपाठी जी का ढलान भी ठीक हो गया था, यहाँ तक कि रामअवतार जी का मटेरियल भी अपनी सही जगह पर था। ऐसा लग रहा था मानो मैं कोई सपना देख रहा हूँ, लेकिन यह सच था।

अंशुल जी से मुलाकात से लेकर, दिव्या के जन्मदिन तक जाने का तो अपने आप बना था, किन्तु एक बात समझ में आ गई इस प्रकार की छोटी-बड़ी समस्याएं हमारे जीवन में भी होती हैं लेकिन यदि हम सही दिशा में कार्य करें और समाज सकारात्मक प्रयास को प्रोत्साहित करें तो लम्बे समय से चली आ रही समस्या भी पल भर में समाप्त हो सकती हैं।

हालांकि अब अंशुल जी का तबादला कही ओर हो गया हैं, लेकिन दिव्या के जन्मदिन एवं उस चर्चा की छाप अभी भी मन पर बनी हुई हैं। चलो अब चलते है इतना समय देने के लिए धन्यवाद, मिलते हैं किसी और रोचक कहानी के साथ तब तक के लिए नमस्कार।

डॉ. गनेश कुमार शर्मा,
कार्यकारी, परिचालन एवं व्यवसाय विकास, न्यू दाउद खां

समय से रेल को चलाना है

सच मानो, रेल परिवार की अभिलाषा है,
संकल्प है, सपना है, सबकी आशा है।
भारतीय रेल को दुर्घटना रहित बनाना है,
संरक्षा, सुरक्षा, समय से रेल को चलाना है।

रेल कर्मचारी कहलाने का, नहीं है वह अधिकारी
जो न निभाए लगन से अपनी हर एक जिम्मेदारी
वास्तव में सच्चा रेल कर्मचारी, कहला सकता है वह
श्रद्धा, निष्ठा, समर्पण से, रेल का काम करे जो।

आखिर हम हैं रेल कर्मचारी,
हर यात्री की खुशियां हमको प्यारी
जो जाएगा अहित, भूल जो हुई जरा सी
फिर कार्य के प्रति, क्यों रखे उदासी।

अरविंद कुमार मीना | उप महाप्रबंधक, चल स्टॉक, अजमेर

डीएफसीसीआईएल में डीजीआर की भूमिका

सम्पूर्ण विश्व के सबसे बड़े infrastructure projects में गिना जाने वाला डीएफसीसीआईएल। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी इस परियोजना को "भारत की समृद्धि और प्रगति के कॉरिडोर" मानते है। कॉरिडोर को परिचालन योग्य बनाने में देश के हर क्षेत्र से आये इंजीनियर एवं अपने-अपने विभाग के विशेषज्ञ अधिकारियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उसी प्रयास में हमारा साथ दे रहे है भारत की विभिन्न सुरक्षा सेनाओं से सेवानिवृत्त वीर जवान। जो की न सिर्फ सुरक्षा, बल्कि डीएफसीसीआईएल के सभी विभागों में कार्यरत है और हर संभव योगदान दे रहे है।

पुनर्वास महा निदेशालय, Directorate General Resettlement (DGR) रक्षा मंत्रालय, भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग (DESW) का एक संलग्न कार्यालय है, जो सेवानिवृति के पूर्व और बाद के प्रशिक्षण का आयोजन करके और पुनर्नियोजन और स्व-रोजगार की सुविधा प्रदान करके भूतपूर्व सैनिकों (ESM) के पुनर्वास की सुविधा प्रदान करता है। अजमेर इकाई में DGR के 51 जवान संभाग की पूरी जिम्मेदारी के साथ सुरक्षा कर रहे है। असामाजिक और नुकसान पहुंचने वाली मानसिकता रखने वाले तत्वों द्वारा रेल की सम्पति को क्षति पहुंचाने से बचाया। सभी जवान अपने-अपने संभाग में रात-दिन चौकस रहते है। इतना ही नहीं ये DGR के जवान रेल पथ, ओएचई, चल स्टॉक, Signalling equipment के रख-रखाव का काम भी बखूबी कर रहे है।

40 DGR के जवान न्यू-सराधना से न्यू-मारवाड़ तक रेल पथ के रख रखाव एवं पेट्रोलिंग का कार्य बड़ी कुशलता से कर रहे है। ये जवान रेल पथ पेट्रोलिंग के साथ गुज़र रही मालगाड़ी में हैंगिंग पार्ट, हॉट एक्सल तथा अन्य त्रुटियों को देख कर गाड़ी की सीमा में आने वाले स्टेशन मास्टर को सूचना देकर मालगाड़ी को रुकवाकर घटना से पूर्व ही त्रुटियों को सुधार में में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 6 जवान न्यू मारवाड़ एवं 2 जवान न्यू सराधना में में उपस्थित रहते है। चल स्टॉक परिचालन के दौरान आयी खामियों को भी ये DGR के जवान कुछ ही समय में बड़ी निपुणता के साथ संशोधन कर देश के विकास का पहिया हर समय चलता रहे ये सुनिश्चित करते है। आबादी वाले इलाको से गुज़र रहे रेल पथ से पार करने वाले नागरिकों की भी रेल पथ से होकर न जाने की सलाह देते हुए जवान जान-माल की सुरक्षा करते हैं। DFCCIL में परिचालन जुलाई 2021 से शुरू हुआ और उसके साथ ही ये सभी जवान तंत्र की बारीकियों को जानकर सेवानिवृति के पश्चात भी देश के विकास में अपनी सेवा दे रहे है। विषम परिस्थितियों में भी ये जवान किसी भी कार्य को ना कहना नहीं जानते और सदैव देश हित के लिए तत्पर रहते है। हमारी सेनाओं के सभी जवान कर्तव्य पथ पर अपना सर्वोच्च बलिदान देने की प्रतिज्ञा लेते है, और को सारा जीवन देश को समर्पित कर देते है। सलाम है देश के सभी जवानो को जो अपना सारा जीवन देश के नाम कर समाज में अपना मस्तक गर्व से उठाये रहते है। हम सब भी उनसे प्रेरणा ले और कर्तव्य पालन में सम्पूर्ण योगदान दे।

एच.सी. सिंह | उप मुख्य परियोजना प्रबंधक, इंजी. कानपुर

सतत् विकास लक्ष्य-2030

हम जानते हैं कि हमें निरंतर पर्यावरण से संबंधित अनेक प्रकार की समस्याओं जैसे प्रदूषण, संसाधनों का बड़ी मात्रा में विनाश, ग्लोबल वॉर्मिंग आदि का सामना करना पड़ रहा है इसका मुख्य कारण आर्थिक विकास की अंधाधुंध दौड़ है, जिसमें बिना सोचे-समझे विकास व धन के लालच में अनमोल प्राकृतिक संसाधनों को लगातार नष्ट किया जा रहा है।

'सतत विकास' विकास की वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा पर्यावरण तथा प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचाए बगैर वर्तमान पीढ़ी तथा भीवी पीढ़ी (आने वाली पीढ़ी) के जीवन की गुणवत्ता को सुधारना है।

सतत या टिकाऊ विकास की वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा वर्तमान व भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना पर्यावरण तथा प्रकृति की सुरक्षा को ध्यान में रखकर आर्थिक विकास किया जा सके।

हम दुनिया का कायाकल्प करने की दहलीज पर खड़े हैं। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से 17 सतत विकास लक्ष्यों की ऐतिहासिक योजना शुरु की है जिसका उद्देश्य है वर्ष 2030 तक अधिक संपन्न अधिक समतावादी और अधिक संरक्षित विश्व की रचना करना है। इस संबंध में महासभा की बैठक न्यूयार्क में 25 से 27सितंबर, 2015 में आयोजित की गई थी, जिसमें 193 देशों ने हिस्सा लिया। इस बैठक में अलगे 15 वर्षों के लिए 17 लक्ष्य तय किए गए जिनको वर्ष 2016 से वर्ष 2030 की अवधि में पूरा करने का निर्णय लिया गया।

2015 में अनुमोदित 2030 एजेंडा और उसके 17 सतत विकास लक्ष्य इन चुनौतियों और इनके अंर्तसंबंधों के समाधान के लिए संपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण फ्रेमवर्क प्रदान करते हैं इनके अंतर्गत सदस्य राष्ट्रों को सतत विकास के सामाजिक आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं का पीछे समाधान संतुलित ढंग से करना होगा। इन पर अमल करते हुए समावेशन और एकीकरण तथा किसी को पीछे छूटने न देने के सिद्धांतों को पीछे छूटने न देने के सिद्धांतों का पालन अनिवार्य है। - **एंटोनियों गुटेरेस, संयुक्त राष्ट्र महा सचिव**

भारत की भूमिका: भारतीयों के लिए पर्यावरण संरक्षण जो सतत् विकास का अभिन्न अंग है नई अवधारणा नहीं है। भारत में प्रकृति और वन्यजीवों का संरक्षण अगाध आस्था की बात है जो हमारे दैनिक जीवन में प्रतिबिंबित होता है और पौराणिक गाथाओं लोककथाओं धर्मों कलाओं और संस्कृति में वर्णित है, हम पृथ्वी को माता मानते हैं और सतत विकास सदैव हमारे दर्शन और विचारधारा का मूल सिद्धांत रहा है। सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनेक मोर्चों पर कार्य करते हुए हमें महात्मागांधी की याद आती है, जिन्होंने हमें चेतावनी दी थी कि धरती प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, पर प्रत्येक व्यक्ति के लालच को नहीं।

भारत लंबे अरसे से सतत विकास के पथ पर आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा है और इसके मूलभूत सिद्धांतों को अपनी विभिन्न विकास नीतियों में शामिल करता आ रहा है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने सबसे निर्धन वर्ग के कल्याण को प्राथमिकता दी। इसलिए 2030 के हमारे सतत विकास एजेंडे में निर्धनता को पूर्णत: समाप्त करने का लक्ष्य न केवल हमारा नैतिक दायित्व है बल्कि शांतिपूर्ण, न्यायप्रिय और चिरस्थायी विश्व को सुनिश्चित करने के लिए जरूरी भी है। भारत सरकार सतत विकास लक्ष्यों सहित 2030 के एजेंडा के प्रति दृणता से समर्पित है। इसका प्रमाण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बैठकों में प्रधानमंत्री और सरकार के अन्य वरिष्ठ मंत्रियों के वक्तव्यों में मिलता है। भारत के राष्ट्रीय विकास लक्ष्य और समावेशी विकास के लिए 'सबका साथ सबका विकास' नीतिगत पहल, सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप है। स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि इन लक्ष्यों से हमारे जीवन को निर्धारित करने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं के बारे में हमारी विकसित होती समझ की झलक मिलती है।

पीयूष कमल | प्रबंधक, सतर्कता, कॉर्पोरेट कार्यालय

सतर्कता: एक अपरिहार्यता (महत्वपूर्ण आवश्यकता)

भ्रष्टाचार के अन्याय को समाप्त करने के लिए 100 से अधिक देशों में काम कर रहे वैश्विक आंदोलन ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल ने कहा है कि - "भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए, हर जगह हम सत्ता को जवाबदेह ठहराने की वकालत करते हैं।"

हम भली-भांति जानते हैं कि हमारे समाज में भ्रष्टाचार एक बड़ी समस्या है। वित्तीय नुकसान के अलावा, यह संगठन की प्रतिष्ठा पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इसलिए भ्रष्टाचार के खतरे से निपटने के लिए लोगों और संगठनों को भी डटकर मुकाबला करना होगा। निवारक सतर्कता किसी संगठन की सतर्कता शाखा के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है, जो अन्य बातों के साथ-साथ भ्रष्टाचार से लड़ने में मदद करता है। यह 'सुशासन' प्राप्त करने और सुनिश्चित करने के लिए भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण इकाई है।

निवारक सतर्कता मुख्य रूप से कमियों और अपर्याप्तताओं को समझने के लिए प्रणालियों और प्रक्रियाओं का विश्लेषण करने पर विश्वास रखती है बदले में, यह एक संगठन की दक्षता में व्यापक रूप से सुधार करता है और इस तरह सुधारात्मक उपायों का सुझाव देती है। यह प्रणाली में जटिलताओं को सरल बनाने और पारदर्शिता को बढ़ावा देने में मदद करता है। इसलिए, सतर्कता शाखा उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी किसी संगठन की अन्य शाखा। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने के अलावा, सतर्कता 'सुशासन' के बड़े उद्देश्य को प्राप्त करने में योगदान करती है। पारदर्शिता और जवाबदेही पहल सुशासन प्रथाओं के मूल में है। बदले में, ये प्रथाएं भ्रष्टाचार के दायरे और फलने-फूलने को काफी हद तक कम कर देती हैं। इसलिए, सतर्कता भी एक शक्तिशाली प्रबंधन उपकरण है।

डीएफसीसीआईएल में सतर्कता विभाग ने निवारक सतर्कता गतिविधियों को सर्वोपरि महत्व दिया है। नतीजतन, प्रबंधन को अतीत में कई सिस्टम सुधारों का सुझाव दिया गया है। इसके अलावा, यह महसूस किया गया है कि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) प्रभावी साधनों में से एक हो सकती है जो पारदर्शिता के साथ-साथ सेवाओं की भ्रष्टाचार मुक्त सेवा के अलावा प्रणाली की समग्र दक्षता को बढ़ा सकती है। केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2022 के भाग के रूप में, सभी संबंधित संगठनों को तकनीकी पहल सहित निवारक सतर्कता सह आंतरिक हाउसकीपिंग गतिविधियों को शुरू करने का निर्देश दिया है। सभी संगठनों से अपेक्षित है कि वे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर लाए जाने वाले नए क्षेत्रों/सेवाओं की पहचान करें और ऑनलाइन पोर्टल के निर्माण के लिए पहल करें। यह पता चला है कि आईटी विभाग भूमि रिकॉर्ड आदि के लिए एक ऑनलाइन पोर्टल विकसित करने पर काम कर रहा है। इसलिए, इसी तरह के पैटर्न पर, डीएफसीसीआईएल को अधिक क्षेत्रों और कार्यात्मकताओं को पहचानने और सूचीबद्ध करने का अवसर लेना चाहिए जिन्हें बेहतर, सटीक ऑनलाइन पोर्टल पर लाया जा सकता है इसमें मानव संसाधन और वित्त से संबंधित कार्य भी शामिल हो सकते हैं। इसके अलावा, यह संसाधनों के उचित उपयोग को भी सुनिश्चित करेगा और मनुष्य, सामग्री और धन के किसी भी संभावित अपव्यय से बचना होगा। ये पहल, यदि लागू की जाती हैं, तो भ्रष्टाचार मुक्त वितरण और 'सुशासन' प्राप्त करने में एक लंबा रास्ता तय कर सकती हैं। इस तरह के प्रयासों से संगठन को भ्रष्टाचार के दायरे को कम करने के साथ-साथ 'सुशासन' और हमारे कामकाज में पारदर्शिता को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

आइए हम संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता श्री कोफी अन्नान के शब्दों को याद करें- 'अगर भ्रष्टाचार एक बीमारी है, तो पारदर्शिता इसके इलाज का अनिवार्य हिस्सा है।'

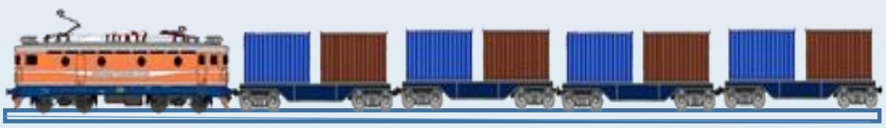

आकाशदीप भारद्वाज | कार्यालय सहायक, राजभाषा कॉर्पो. कार्यालय

आजादी का अमृत महोत्सव

"दिलों में बसा एक सपना था आजादी के मतवालों का,

जश्न है ये भारत के आजाद 75 सालों का"

इतिहास हम क्यों पढ़ते है शायद इसलिए कि भविष्य में हमने जो गलतियां की हो वह हम फिर से न दोहराएं। वर्तमान पीढ़ी व आने वाली पीढ़ी को यह बताएं कि क्या करना सही क्या करना गलत। आजादी का अमृत काल हमारी विकास यात्रा का साक्षी है कि किस प्रकार हम औपनिवेशिक काल से 21वीं सदी के भारत में प्रवेश कर विश्व पटल पर भारत की पहचान को बदलने में सफल हो रहे हैं। यह अमृत काल प्रत्येक भारतीय के पौरुष व अभिमान का परिचायक है। आज जब हम जब गुलामी के उस दौर की कल्पना करते हैं तो जेहन कांप उठता है। पंजाब के अमृतसर में जलियांवाला बाग़, नई दिल्ली का लाल किला एवं देश में अन्य कई ऐसे ऐतिहासिक स्थल हैं जहां जाने पर अंग्रेजी यातनाओं की भीभत्सा को नजदीक से महसूस करने का मौका हमें मिलता है। इन यातनाओं की कल्पनाओं से ही मन सिहर उठता है। साल 2022 अपने आप में इसलिए भी कुछ खास है क्योंकि इस वर्ष हमारी आजादी के 75 वर्ष हुए है। इसलिए यह वर्ष इन 75सालों पर गर्व करने, सुनहरे पलों को सजोने व जश्न मनाने का है। यह वर्ष है आजादी के उन गुमनाम हीरो का याद करने का भी है जो मातृभूमि को आजाद करने के लिए स्वयं को मातृभूमि पर न्योछावर कर गए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साल 2021 में उस साबरमती आश्रम से इस कार्यक्रम की शुरुआत की जिस साबरमती आश्रम से नमक के काला कानून के विरोध में अहिंसा के पुजारी महात्मागांधी ने दांडी यात्रा निकाल कर स्वाधीनता की चिंगारी का बिगुल फूंका था। यह कार्यक्रम 75 सप्ताह के लिए यानि की 15 अगस्त, 2022 तक निर्धारित था लेकिन सरकार ने इसे वर्ष 2023 तक बढ़ा दिया है। आजादी का अमृत महोत्सव कुल पाँच थीम पर आधारित है।

यह पाँच थीम निम्नलिखित हैं:

स्वतंत्रता संग्राम: यह विषय हमें उन गुमनाम नायकों की कहानियों को जीवंत करने में मदद करने के लिए रखा गया है जिनके बलिदान ने हमारे लिए स्वतंत्रता को वास्तविक बना दिया। इसके अंतर्गत बिरसा मुंडा जयंती (जनजातीय गौरव दिवस), नेताजी, शहीद दिवस द्वारा स्वतंत्र भारत की अनंतिम सरकार की घोषणा आदि शामिल हैं।

विचार-75: यह विषय उन विचारों और आदर्शों से प्रेरित कार्यक्रमों और आयोजनों पर केंद्रित है जिन्होंने हमें आकार दिया है और अमृत काल (भारत@75 और भारत@100 के बीच 25 वर्ष) की इस अवधि के दौरान संचालन करते समय हमारा मार्गदर्शन करेंगे। काशी की धरती के हिंदी साहित्यकारों को समर्पित काशी उत्सव, प्रधान मंत्री को पोस्ट कार्ड जैसे कार्यक्रम और पहल शामिल हैं, जिसमें 75 लाख से अधिक बच्चे 2047 में भारत के अपने दृष्टिकोण और भारत के स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायकों के बारे में खुद पर पड़े प्रभाव को लिख रहे हैं।

समाधान-75: यह विषय हमारी मातृभूमि की नियति को आकार देने के हमारे सामूहिक संकल्प और अवधारणा पर केंद्रित है। 2047 की यात्रा के लिए हममें से प्रत्येक को जाग्रत होना होगा और व्यक्तियों, समूहों, नागरिक समाज, शासन की संस्थाओं आदि के रूप में अपनी भूमिका निभानी होगी।

कार्य-75: यह विषय उन सभी प्रयासों पर केंद्रित है जो नीतियों को लागू करने और प्रतिबद्धताओं को साकार करने के लिए उठाए जा रहे कदमों पर प्रकाश डालते हुए भारत को कोविड के बाद की दुनिया में उभर रही नई विश्व व्यवस्था में अपना सही स्थान दिलाने में मदद करने के लिए किए जा रहे हैं।

उपलब्धियां-75: यह विषय समय बीतने और हमारे रास्ते में सभी मील के पत्थरों को चिह्नित करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य 5000 साल से ज्यादा के प्राचीन इतिहास की विरासत के साथ 75 साल पुराने स्वतंत्र देश के रूप में हमारी सामूहिक उपलब्धियों के सार्वजनिक हित में विकसित होना है। हम जिस

दुनिया को जानते थे वह तेजी से बदल रही है और एक नई दुनिया सामने आ रही है। हमारे दृढ़ विश्वास की ताकत हमारे विचारों की आयु तय करेगी। आजादी के आंदोलन के इतिहास की तरह ही आजादी के 75 वर्षों की यात्रा भारतीयों के परिश्रम, नवाचार, उद्यमशीलता का प्रतिबिंब है। भारत आजादी के बाद पहले दिन से वयस्क मताधिकार देने वाला एकमात्र देश है तो वही चाँद और मंगल पर मानव रहित मिशन भेजने वाले पाँच देशों में शामिल है। भारतीय चाहे विदेश में रहे या अपने देश में अपनी प्रतिभा का लोहा भारतीयों ने हर समय मनवाया है। हमारा संविधान जो हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं व उत्सव की मिसाल है। हमारी लोकतंत्रीय प्रणाली व मूल्य, संस्कृति कई देशों के लिए अनुकरणीय है। हालांकि देश के सामने अभी भी कई समस्याएं हैं जिनसे जूझते हुए हम उनके समाधान की और बढ़ रहे हैं। देश जब आजादी के 100 वे साल में हो तो हम उम्मीद करेंगे कि यह जश्न का उत्साह और तेजी से बड़े। हमारी पीढ़ी सौभाग्यशाली है कि वह आजाद भारत के 75 साल के इस कालखंड की साक्षी बन रही है। हम सभी को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए और समाज व देश के कल्याण हेतु हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

कॉर्पोरेट कार्यालय में राजभाषा विभाग की विभिन्न गतिविधियां

प्रबंध निदेशक महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

परियोजना विशेषांक का विमोचन करते प्रबंध निदेशक, निदेशकगण एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, हरिवंश राय बच्चन एवं मुंशी प्रेमचंद की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

रेलवे बोर्ड एवं गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा कॉर्पोरेट कार्यालय में किए गए निरीक्षण की झलकियां

डीएफसीसीआईएल फील्ड कार्यालय में राजभाषा पखवाड़ा-2022 की झलकियां

वडोदरा कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा की झलकियां

जयपुर कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित कार्यक्रम की झलकी

टूंडला कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित निबंध प्रतियोगिता

नोएडा फील्ड कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित निबंध प्रतियोगिता

अहमदाबाद फील्ड कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित हिंदी प्रतियोगिता की झलकी

अजमेर फील्ड कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित हिंदी प्रतियोगिता की झलकी

कोलकाता फील्ड कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के शुभारंभ की झलकी

मेरठ फील्ड कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के शुभारंभ की झलकी

कॉर्पोरेट कार्यालय में राजभाषा पखवाड़ा-2022 की झलकियां

हिंदी निबंध प्रतियोगिता

हिंदी शब्द ज्ञान टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

कॉर्पोरेट कार्यालय में हस्ताक्षर अभियान में हस्ताक्षर करते हुए

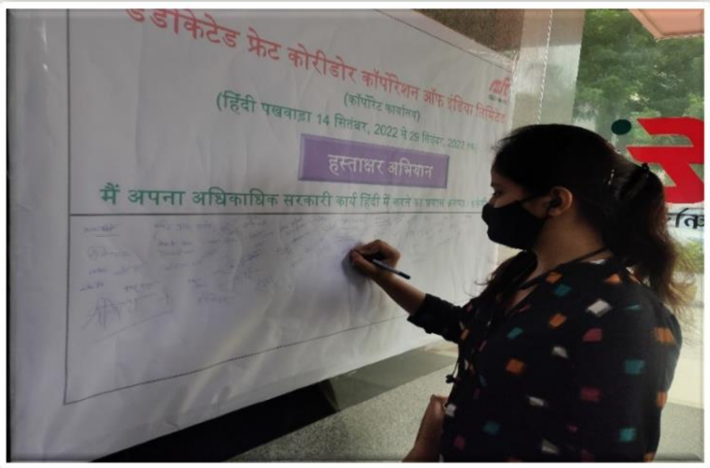

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित कवि सम्मेलन

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित वाक प्रतियोगिता

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रश्न मंच प्रतियोगिता

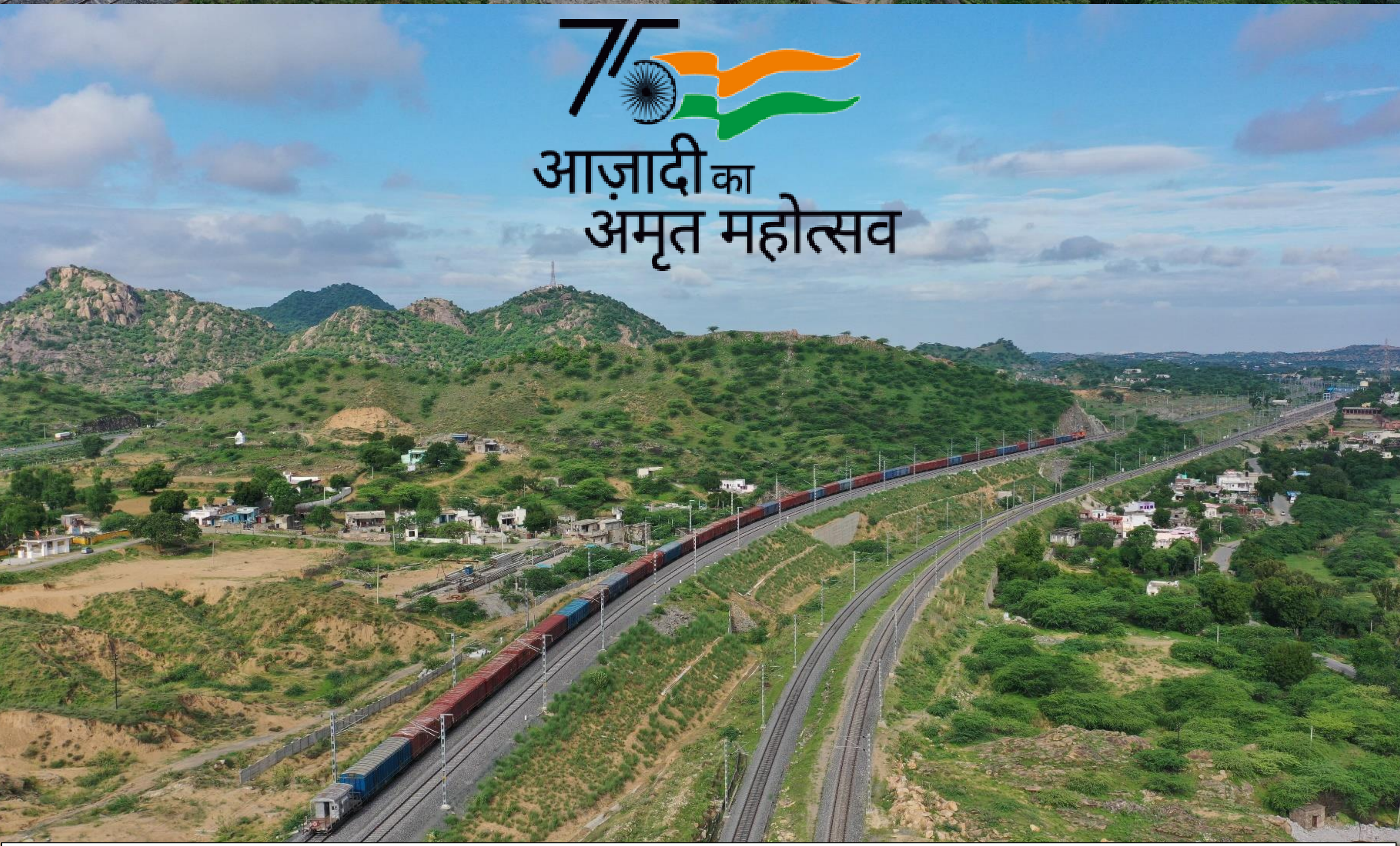

डेडीकेटेड फ्रेट कोरीडोर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

पांचवा तल, सुप्रीम कोर्ट मेट्रो स्टेशन भवन परिसर, नई दिल्ली - 110001

फोन नं. 011-23454717,

फैक्स नं. 011-23454700 ई-मेल: jsnagarkoti@dfcc.co.in